नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 250, नई दिल्ली, रविवार 16 नवम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर आप सफल होना चाहते है, तो अपने अंदर की प्रतिभा को पहचानिए।

03 पार्यावरण पाठशाला – मेरी पहल, मेरे अनुभव

06 हमारे भविष्य के लिए हमें विज्ञान की आवश्यकता है

08 राउरकेला को पूर्ण जिला घोषित किया जाए - डॉ राजकुमार यादव

एमसीडी और डीएमआरसी के पार्किंग स्थलों पर सालों से खड़े लावारिस वाहन सुरक्षा के लिए खतरा

दिल्ली में एमसीडी और डीएमआरसी के पार्किंग स्थलों पर सालों से लावारिस वाहन खड़े हैं, जो शहर की सुरक्षा के लिए खतरा बन गए हैं। लाल किले की घटना के बाद पार्किंग स्थलों की सुरक्षा पर सवाल उठ रहे हैं। ठेकेदारों का कहना है कि पुलिस भी इस मामले में कार्रवाई नहीं करती है। एमसीडी अब निविदा शर्तों में संशोधन करने की योजना बना रही है ताकि सुरक्षित पार्किंग सुनिश्चित की जा सके।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली में लाल किले के सामने हुए धमाके से पहले, आतंकवादी उमर ने अपनी गाड़ी एक पार्किंग में खड़ी करके विस्फोटक तैयार किए थे। उसने ये विस्फोटक सिर्फ़ तीन घंटे में तैयार किए थे। सवाल उठता है: अगर इतना ख़तरनाक विस्फोटक तीन घंटे में तैयार हो सकता है, तो एमसीडी की बहुमंजिला और ज़मीनी पार्किंग में ऐसे कई वाहन खड़े हैं जिन्हें सालों से उठाया ही नहीं गया है।

नतीजतन, इन वाहनों के टायरों की हवा निकल गई है और धूल की एक मोटी परत जम गई है। ये वाहन दिल्लीवासियों की सुरक्षा के लिए ख़तरा हैं, क्योंकि कोई भी इनका इस्तेमाल साज़िश रचने के लिए कर सकता है।

दिल्ली में 400 से ज़्यादा पार्किंग स्थल एमसीडी के हैं, जबकि 150 डीएमआरसी के और 119 डीएमआरसी के हैं। एक पार्किंग ठेकेदार ने बताया कि एमसीडी के हर पार्किंग स्थल में आमतौर पर 5-7 वाहन सालों से खड़े होते हैं। ये वाहन अनिवार्य रूप से लावारिस पड़े हैं क्योंकि कोई इन्हें लेने नहीं आता और न ही कोई इनके मालिकों से संपर्क कर पाता है।

दिल्ली में, विभिन्न पार्किंग स्थलों में 1,500 से ज़्यादा वाहन लावारिस खड़े हैं। अगर इन वाहनों का इस्तेमाल किसी साज़िश के लिए किया जाता है, तो इससे जान-माल का भारी नुकसान हो सकता है, खासकर जब बहुमंजिला पार्किंग में बड़ी संख्या में लोग और वाहन खड़े होते हैं।

पुरानी दिल्ली में पार्किंग स्थल चलाने वाले एक ठेकेदार ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि उनके पास ऐसे 10-12 वाहन हैं जो सालों से वहाँ खड़े हैं। सालों से कोई उन्हें लेने नहीं आया है। हालाँकि पुलिस को इसकी सूचना दी गई है, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई है।

पूर्वी दिल्ली में पार्किंग स्थल चलाने वाले एक अन्य ठेकेदार ने बताया कि अगर वाहनों का मासिक पास तीन महीने तक नहीं चुकाया जाता है, तो वे सबसे पहले कार मालिक से संपर्क करते हैं। अगर मालिक से संपर्क नहीं हो पाता है, तो वे पुलिस को सूचित करते हैं, लेकिन पुलिस उनके रिकॉर्ड की जाँच करने और यह पता लगाने के बाद कि वाहन के खिलाफ चोरी की कोई शिकायत दर्ज नहीं की गई है, मामले से पल्ला झाड़ लेती है।

दक्षिणी दिल्ली में पार्किंग स्थल चलाने वाले एक अन्य ठेकेदार ने बताया कि ऐसे वाहनों के लिए कोई नियम नहीं हैं। ठेकेदार यह सुनिश्चित करने की पूरी कोशिश करता है कि उसकी पार्किंग की जगह बर्बाद न हो।

इसके लिए, हम अक्सर ट्रैफ़िक पुलिस से संपर्क करते हैं, मालिक का पता पता करते हैं, और वाहन वापस लेने के लिए किसी को उसके घर भेजते हैं।

सुरक्षा के नाम पर पार्किंग की स्थिति खामोश

दिल्ली नगर निगम में पार्किंग सुविधाओं का प्रबंधन एमसीडी के गैर-लाभकारी परियोजना प्रकोष्ठ द्वारा किया जाता है। एमसीडी इन पार्किंग सुविधाओं का संचालन निजी ठेकेदारों के माध्यम से करती है। इन ठेकेदारों को निविदा शर्तों के आधार पर पार्किंग सुविधाओं के संचालन की ज़िम्मेदारी दी जाती है। हालाँकि, पार्किंग निविदाओं में शहर की सुरक्षा संबंधी कोई भी आवश्यकता नहीं है।

वाहनों के प्रवेश की जाँच का कोई प्रावधान नहीं है, न ही यह प्रावधान है कि लावारिस वाहनों के साथ क्या किया जाएगा। इससे यह सवाल उठता है: हालाँकि इन पार्किंग निविदाओं को एमसीडी सदन और स्थायी समिति द्वारा अनुमोदित किया जाता है, फिर भी किसी ने शहर की सुरक्षा संबंधी गतिविधियों पर विचार नहीं किया है।

पार्किंग की जगह पहले से ही कम है, लावारिस वाहन जगह घेर रहे हैं।

राजधानी दिल्ली पहले से ही पार्किंग की जगह की कमी से जूझ रही है। इसके अलावा, ये लावारिस वाहन अनावश्यक रूप से पार्किंग की जगह घेर रहे हैं। इससे निवासियों को असुविधा होती है, क्योंकि उन्हें अपने घरों के पास पार्किंग की जगह नहीं मिल पाती है।

पार्किंग की स्थिति में खामियों के लिए ये अधिकारी जिम्मेदार हैं।

अपर आयुक्त (आरपी प्रकोष्ठ)
उपायुक्त (आरपी प्रकोष्ठ)
प्रशासनिक अधिकारी (आरपी प्रकोष्ठ)

लाल किले की घटना के बाद से, कई मुद्दे हमारे ध्यान में आए हैं जिनमें सुधार की आवश्यकता है। हमारी लाभकारी परियोजना समिति की बैठक 17 नवंबर को हो रही है। इस बैठक में सुरक्षित पार्किंग संचालन सुनिश्चित करने के लिए निविदा शर्तों में संशोधन का प्रस्ताव रखा जाएगा।

- प्रमोद गुप्ता, अध्यक्ष, लाभकारी परियोजना प्रकोष्ठ, एमसीडी

दिल्ली ब्लास्ट के बाद फिर से लोगों के लिए खुला लाल किले का मुख्य मार्ग, पार्किंग में फंसे वाहनों को किया गया वापस

दिल्ली में ब्लास्ट के बाद लाल किले का मुख्य मार्ग फिर से खोल दिया गया है। सुरक्षा कारणों से बंद मार्ग पर आवागमन सामान्य हुआ। पार्किंग में फंसे वाहनों को निकाला गया। पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां स्थिति पर नजर रख रही हैं।

नई दिल्ली। लाल किला धमाके के बाद सुरक्षा कारणों से बंद किया गया घचनास्थल पर मार्ग अब आम लोगों के लिए खुल गया है। शनिवार सुबह से यहां से वाहन गुजरते दिखे, जिससे पुरानी दिल्ली और आसपास के इलाकों के लोगों को राहत मिली। 10 नवंबर 2025 की शाम लाल किला के पास Hyundai i20 कार में धमाका हुआ था। यह विस्फोट इतना तेज था कि आसपास अफरा-तफरी मच गई। धमाके में कई लोग घायल हुए और कुछ की मौत भी हुई। धमाके के तुरंत बाद पुलिस और FSL टीम ने इलाके को कॉर्डन कर दिया और आसपास के मार्गों को बंद रखा। मेट्रो स्टेशन के गेटों की मरम्मत का कार्य भी चल रहा है; खासकर गेट नंबर 1 के कई शीशे टूट गए थे।

अब की स्थिति : लाल किला के घटनास्थल का मार्ग खुल जाने से यातायात धीरे-धीरे सामान्य हुआ है। वाहन मालिक धीरे-धीरे सड़क से गुजरते दिखे और इलाके में आम लोगों की आवाजाही बहाल हुई। कमल, जिनकी दुकान लाजपत राय मार्केट में है, ने बताया कि उन्हें आज ही अपना वाहन वापस मिला।

प्रीति, जो अपने परिवार के साथ शादी का सामान लेने आई थीं, बताती हैं कि धमाके के समय उनकी मोटरसाइकिल पार्किंग में ही खड़ी रह गई थी, और 10 नवंबर से अब तक वहीं पड़ी थी। अब मार्ग खुलने के बाद वे इसे लेकर जा सकती हैं।

वाहन वापसी और नियम : मार्ग खुलने के बाद वाहन मालिक आरसी और पहचान पत्र के साथ एक आइडी दिखाकर अपने वाहन ले जा सकते हैं। पहले यहां 40 दो पहिया वाहन खड़े थे, जिनमें से आज 9 वाहन अपने मालिकों को लौटाए गए। पार्किंग की पर्ची दिखाना भी जरूरी है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत : आज का संदेश:- सत्संग- सच्ची संपत्ति और संतोष

पिंकी कुंडू महासचिव

संसार में धन का मूल्य बहुत है, परंतु सुख का मूल्य उससे कहीं अधिक है।

जिस व्यक्ति के पास करोड़ों की संपत्ति है, मन में शांति नहीं, वह दिन-रात चिंता, भय और असंतोष में जीता है। उसके महलों में दीये तो जलते हैं, पर हृदय में अधंकार रहता है।

वहीं दूसरी ओर, एक साधारण व्यक्ति जिसके पास थोड़ा है, पर उसका मन संतोष और कृतज्ञता से भरा है, वही वास्तव में सुखी और अमीर है। क्योंकि धन बाहर का होता है, और सुख भीतर का। बाहर का धन चोरी हो सकता है, छिन सकता है; परन्तु भीतर का सुख कोई छीन नहीं सकता।

जहां धन है वहां वैभव है,
पर जहां संतोष है,
वहीं सच्चा सुख और अमीरी है।
धन वैभव का मान है,
सुख अमीरी ठाठ।
संतोषी के पास है, जग में अमर विराठ।।

संदेश धन कमाना बुरा नहीं, पर धन को ही जीवन का आधार मान लेना भूल है। सच्चा धन वह है, जो मन में शांति, कृतज्ञता और संतोष के रूप में सदा साथ रहता है।

हरि शरणम - दुःख हरणम

https://tolwa.com/about.html
tolwadelhi@gmail.com
tolwaindia@gmail.com

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

देह-दान और अंग-दान का यही है महान कार्य

पिंकी कुंडू महासचिव

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND WELFARE ALLIED TRUST (REGD.) TOLWA

हम सब जानते हैं कि इंसान जन्म लेता है और एक दिन इस संसार से चला भी जाता है1

जिस प्रकार हम ट्रेन में सफर करते हैं सफर के चलते जिस जिस का स्टेशन आता है वह उत्तर जाता है ठीक इसी प्रकार जीवन के सफर की गाड़ी चलती जा रही है जिस का स्टेशन आ गया वो उत्तर गया1

परंतु क्या कभी आपने सोचा है कि मृत्यु के बाद भी हम किसी के काम आ सकते हैं?

किसी को नई दृष्टि और किसी की धड़कन बन सकते हैं,

चिकित्सा-शिक्षा का आधार बनकर भावी डॉक्टरों को तैयार कर सकते हैं?

देह-दान और अंग-दान का यही है महान कार्य

अंग-दान का अर्थ है अपने अंग

जैसे हृदय, किडनी, लीवर, फेफड़े, अग्न्याशय, और आँखें

मृत्यु के बाद ऐसे व्यक्ति को देना जिसे उसकी आवश्यकता है।

*कहते हैं,

एक दाता 8–9 लोगों को नई जिंदगी दे सकता है।

सोचिए,

जीवन में शायद हम 1–2 लोगों की मदद कर पाते हैं, लेकिन मृत्यु के बाद हम कुछ लोगों का जीवन बन सकते हैं।

आज भी भारत में ऐसे हजारों लोग हैं जो किडनी, लिवर या हार्ट की कमी के कारण दम तोड़ देते हैं1

ऐसे में अंग-दान उनके लिए पुनर्जन्म साबित होता है।

देह-दान का अर्थ है मृत्यु के बाद अपनी संपूर्ण देह मेडिकल कॉलेज या शोध-संस्थान को दान करना। डॉक्टरों के लिए मानव शरीर से कोई शिक्षक नहीं होता है1

देह-दान से चिकित्सा शिक्षा को नयी दिशा मिलती है1

नए शोध होते हैं,

और भविष्य के डॉक्टर बेहतर प्रशिक्षण पा कर समाज की सेवा करते हैं1

कई लोग इस भ्रांति में रहते हैं कि देह-दान से अंतिम संस्कार में बाधा आती है।

परंतु यह सही नहीं।

दान के बाद सम्मान पूर्वक अंतिम संस्कार की प्रक्रिया पूरी होती है

" अंग-दान और देह-दान में अन्तर :--

अंग-दानः जीवन बचाने के लिए

देह-दानः चिकित्सा-शिक्षा और शोध के लिए1

देह दान करने के बाद कहीं हम किसी की धड़कन बनते हैं

तो कहीं किसी के ज्ञान व कौशल की आधारशिला

मरकर भी जीने का मार्ग देह दान कर किसी के जीवन में प्रकाश लाना ही उत्तम1

परिवार अनावश्यक खर्च से मुक्त

समाज के प्रति कर्तव्य, मानव सेवा का सर्वोच्च रूप पुण्य और परोपकार की इस से बड़ी कोई परिभाषा नहीं हो सकती है1

अब बहुत लोग सोचते हैं कि यह दान धर्म के विरुद्ध है। असल मे सेवा और दान सभी धर्मों मे सर्वोत्तम माने गए हैं1

देह-दान महादान —

जो किसी भी धर्म के खिलाफ नहीं बल्कि उसके अनुरूप है।

इस कार्य में सबसे महत्वपूर्ण है परिवार की सहमति। इसीलिए अपनी इच्छा अपने परिवार को अवश्य साझा कीजिए

उन्हें बताएं कि यह निर्णय

मानव-सेवा और ज्ञान-उन्नति का मार्ग है।

जब हमारा शरीर एक दिन मिट्टी में मिलना ही है,

तो क्यों न उससे किसी का जीवन संवर जाए?

क्यों न उसकी आँखों का प्रकाश किसी अंधेरे में रौशनी बन जाए?

क्यों न वह शरीर

किसी छात्र के जीवन का सबसे बड़ा शिक्षक बन जाए?

कहते हैं—

जिसने जीवन में दे न सके,

वे मृत्यु के बाद भी दे सकते हैं।

आइए संकल्प लें—जीवन मे नहीं, मृत्यु के बाद समाज के काम आए1

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

SCAN ME

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली की हवा लगातार दूसरे दिन 'बेहद खराब', कई इलाकों में AQI 400 के पार; तापमान भी गिरा

दिल्ली में वायु गुणवत्ता लगातार दूसरे दिन 'बहुत खराब' श्रेणी में रही, कई इलाकों में गंभीर स्तर का प्रदूषण दर्ज किया गया। न्यूनतम तापमान 9 .7 डिग्री सेल्सियस तक गिर गया। सीपीसीबी के अनुसार, औसत एक्यूआई 386 रहा, जिसमें पराली और वाहनों का उत्सर्जन मुख्य कारण था। मौसम विभाग ने रविवार को हल्के कोहरे का अनुमान जताया है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली की वायु गुणवत्ता शनिवार को लगातार दूसरे दिन 'बहुत खराब' श्रेणी में रही। 39 में से 16 निगरानी स्टेशनों ने 'गंभीर' श्रेणी का एक्यूआई दर्ज किया, जबकि न्यूनतम तापमान गिरकर 9.7 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया, जो इस मौसम का अब तक का सबसे कम तापमान है।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) द्वारा शाम चार बजे जारी एयर क्वालिटी बुलेटिन के अनुसार, शनिवार को 24 घंटे का औसत एक्यूआइ 386 रहा, जो 'बहुत खराब' श्रेणी में है। शहर के कई इलाकों में जहरीली हवा जारी रही। सीपीसीबी के समीर एप के अनुसार, बवाना में सबसे अधिक एक्यूआई 443 दर्ज किया गया जबकि वजीरपुर में यह 434 दर्ज कहुआ।

पीएम 10 और पीएम 2.5, जो क्रमशः 10 माइक्रोमीटर और 2.5 माइक्रोमीटर के कणीय पदार्थ हैं, प्रमुख प्रदूषक बने रहे।

वहीं स्विस एप आइक्यू एयर के अनुसार सुबह 10 बजे दिल्ली का एक्यूआई 433 यानी 'गंभीर' श्रेणी में दर्ज किया गया था, जो रात 10 बजे 330 यानी 'बहुत खराब' श्रेणी में पहुंच गया।

आइआइटीएम) पुणे के डिसीजन सपोर्ट सिस्टम (डीएसएस) के अनुसार शनिवार को दिल्ली के प्रदूषकों में पराली जलाने से होने वाले उत्सर्जन का हिस्सा 16.3 प्रतिशत था, जबकि वाहनों से होने वाले उत्सर्जन का हिस्सा 18.3 प्रतिशत था, जो सभी स्रोतों में सबसे अधिक है। पूर्वानुमान के अनुसार रविवार को राजधानी के प्रदूषण में पराली जलाने की हिस्सेदारी 14.5 प्रतिशत रहेगी। उपग्रह से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, गुरुवार को पंजाब में पराली जलाने की 104, हरियाणा में 24 और उत्तर प्रदेश में 129 घटनाएं हुईं।

दूसरी तरफ इस बीच मौसम विभाग के अनुसार शनिवार को शहर में इस मौसम का अब तक का सबसे कम न्यूनतम तापमान दर्ज किया गया। यह सामान्य से 3.8 डिग्री कम 9.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। अधिकतम तापमान सामान्य से 1.9 डिग्री कम 26.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। हवा में नमी का स्तर 98 से 41 प्रतिशत रहा।

मौसम विभाग के आंकड़ों के अनुसार, पिछले साल नवंबर का सबसे कम तापमान 29 नवंबर को 9.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था, जबकि 2023 में यह 23 नवंबर को 9.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था।

रविवार के लिए पूर्वानुमान में हल्का कोहरा रहने का संकेत दिया गया है। दिन में आसमान साफ रहेगा। धूप भी निकली रहेगी। अधिकतम तापमान 25 डिग्री सेल्सियस जबकि न्यूनतम 10 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की उम्मीद है।

सर्दियों में लहसुन क्यों बहुत उपयोगी है

1. प्राकृतिक प्रतिरक्षा-बूस्टर

लहसुन में एलिसिन और अन्य सल्फर यौगिक होते हैं, जो जीवाणु- और विषाणु-रोधी गुण रखते हैं।

ये यौगिक हमारे immune-cells (जैसे NK-सेल्स और टी-सेल्स) की सक्रियता बढ़ाकर सूजन (inflammation) को नियंत्रित करने में मदद कर सकते हैं। वास्तविक हस्तक्षेप अध्ययन (human intervention) में, गार्लिक सप्लीमेंट्स ने TNF-α और CRP जैसे मापक (biomarkers) को कम किया है।

विशेष रूप से सर्दियों में, जब वायरल संक्रमण (जुकाम, फ्लू) और खांसी-जुकाम जैसी समस्या आम होती है, तो लहसुन का नियमित सेवन शरीर को भीतर से मजबूती दे सकता है।

2. श्वसन (रेस्पिरेटरी) संक्रमण में लाभ

आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा में लहसुन को खांसी, गले की खराश, अस्थमा जैसी श्वसन समस्याओं में घरेलू उपाय के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है।

उसके जीवाणु-रोधी और एंटीवायरल गुणों के कारण, यह संक्रमणों के प्रसार की गति को धीमा करने में मदद कर सकता है।

कुछ शोध बताते हैं कि हरा लहसुन (young/green garlic) भी सर्दी-फ्लू और सामान्य विषाणु संक्रमणों के खिलाफ सहायक हो सकता है।

3. पाचन स्वास्थ्य (Gut Health)

लहसुन में प्रीबायोटिक गुण भी हैं, जो लाभकारी जीवाणुओं (gut microbiota) को पोषण दे सकते हैं।

इसके अलावा, यह एंटीऑक्सीडेंट्स और जीववैज्ञानिक यौगिक (bioactive compounds) पाचन तंत्र में सूजन कम कर सकते हैं और उसकी कार्यक्षमता को बेहतर बना सकते हैं।

पारंपरिक उपयोग में, लहसुन को वहमन (carminative) के रूप में इस्तेमाल किया जाता है — जिससे गैस, पेट की ऐंठन और पाचन संबंधी अन्य असुविधाओं में राहत मिलती है।

4. जोड़ों (घुटनों) का दर्द और सूजन

वैज्ञानिक अध्ययनों में यह पाया गया है कि लहसुन या गार्लिक निकाल (garlic extract) का उपयोग गठिया (arthritis) जैसी जोड़ों की सूजन-रोगों में फायदेमंद हो सकता है।

एक यादृच्छिक नियंत्रण परीक्षण (RCT) में, 1000 mg की गार्लिक सप्लीमेंट देने पर C-reactive protein (CRP) और TNF-α जैसे सूजन-सूचक बायोमार्कर्स में महत्वपूर्ण कमी देखी गई, साथ ही दर्द और जोड़ की जकड़न में भी सुधार हुआ।

एक व्यवस्थित समीक्षा में, गार्लिक एक्सट्रैक्ट (600–1000 mg/दिन) ने जोड़ों की कार्यक्षमता (joint function), दर्द और कठोरता (stiffness) में सकारात्मक असर दिखाया।

सर्दियों में लहसुन का सही तरीका और सावधानियाँ

कैसे खाएं:

वैज्ञानिकों और पोषण विशेषज्ञों के अनुसार, कच्चा लहसुन (कली को कूटकर या बारीक काटकर) सबसे ज्यादा सक्रिय यौगिक (जैसे अलिसिन) देता है।

खाने का समय:

कुछ सुझावों के अनुसार, सुबह खाली पेट लहसुन लेने से उसकी इम्यून-बूस्टिंग क्षमता अधिक होती है।

मात्रा:

पारंपरिक उपयोग और आधुनिक अध्ययन में लगभग 600–1000 mg गार्लिक एक्सट्रैक्ट या 3 ग्राम ताजा लहसुन का सेवन एक सुरक्षित और प्रभावी सीमा माना गया है।

संभावित साइड इफ़ेक्ट्स:

बहुत अधिक लहसुन खाने से पेट में जलन, बदबूदार सांस या गैस की शिकायत हो सकती है।

यदि आप रक्त-पतला करने वाली दवाएँ (जैसे वारफारिन) ले रहे हैं, या हाई-ब्लड प्रेशर की दवाएँ लेते हैं, तो लहसुन सप्लीमेंट लेने से पहले डॉक्टर से सलाह ज़रूर लें।

नवीनतम वैज्ञानिक विकास (लेटेस्ट रिसर्च)

1. मानव हस्तक्षेप अध्ययन (Human intervention studies):

नवीनतम मेटा-विश्लेषण ने दिखाया है कि गार्लिक सप्लीमेंट्स (जैसे एडेड गार्लिक एक्सट्रैक्ट) प्रतिरक्षा-सेल (immune cell) गतिविधि बढ़ा सकते हैं और प्रतिरक्षा विनियमन (cytokine production) को बेहतर बना सकते हैं, जिससे सूजन-चिंह (inflammatory markers) कम हो सकते हैं।

2. गठिया में गार्लिक का उपयोग:

एक नवीन समीक्षा (2024 तक) ने यह पाया कि गार्लिक एक्सट्रैक्ट गठिया (rheumatoid arthritis और osteoarthritis) रोगियों में दर्द, सूजन और जोड़ों की कार्यशीलता में सुधार ला सकता है।

3. फूड साइंस में शोध:

हाल के खाद्य-उपयोग (food-science) अध्ययन ने लहसुन की जैव-सक्रिय यौगिक संरचना पर जोर दिया है और वैज्ञानिक रूप से इसकी एंटीऑक्सिडेंट और रोग-निरोधी क्षमताओं को पुष्ट किया है।

4. नई किस्मों पर ध्यान:

वैज्ञानिकों ने पाया है कि अंकुरित लहसुन (sprouted garlic) में कुछ यौगिकों की ताकत सामान्य लहसुन से बढ़ी हो सकती है।

सर्दियों में लहसुन एक बहुत ही प्राकृतिक और सस्ते-उपाय के रूप में उपयोग किया जा सकता है ताकि आपकी इम्यूनिटी मजबूत रहे, श्वसन संक्रमणों (जुकाम, खांसी) से रक्षा हो, और जोड़-सूजन (जैसे घुटनों का दर्द) में राहत मिल सके।

इसके एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटीमाइक्रोबियल गुण वैज्ञानिक रूप से समर्थित हैं।

यदि आप नियमित दवाएँ ले रहे हैं या किसी स्वास्थ्य समस्या से जूझ रहे हैं, तो लहसुन के सप्लीमेंट लेने से पहले डॉक्टर से सलाह लेना महत्वपूर्ण है।

"शरीर" का अर्थ है "हमारा शरीर"

मेरा शरीर मेरी संपत्ति है, अगर आप इसे नज़रअंदाज़ करेंगे, तो इसकी कोई गारंटी नहीं कि यह आपका साथ देगा!

शरीर के बारे में कुछ मुख्य विशेषताएँ:-

शरीर पंचमहाभूतों से बना है। हमारा शरीर नाशवान है।

यह (शरीर) इस पूरे ब्रह्मांड में एक अद्भुत, अत्यंत जटिल, भव्य मशीन है।

शरीर अनगिनत कोशिकाओं से बना है और हर 12 साल (एक तप) में पूरी तरह से नवीनीकृत होता है।

शरीर भौतिक है और यह पदार्थ का एक गोला है।

हमारे शरीर में विभिन्न प्रणालियाँ काम करती हैं जो शरीर को स्वस्थ रहने के लिए एक प्रकार की ऊर्जा प्रदान करती हैं।

किसी भी बीमारी के होने से पहले, शरीर हमें संकेत देता है। हमें उन्हें पहचानना चाहिए ताकि हम अगली बीमारी से बच सकें।

शरीर बाहर से कितना भी सुंदर क्यों न लगे, अंदर से बहुत जटिल होता है।

हमारा शरीर प्रकृति की एक अद्भुत और सुंदर रचना है जिसे विज्ञान अभी तक पूरी तरह से समझ नहीं पाया है।

हर कोई सोचता है कि हमारा शरीर सुडौल, सुंदर, मांसल और स्वस्थ होना चाहिए, लेकिन क्या हम वास्तव में इसके लिए प्रयास करते हैं?

आइए खुद से यह प्रश्न पूछें और हमें तुरंत उत्तर मिल जाएगा।

जन्म के बाद, प्रकृति ने सभी को एक सुंदर शरीर दिया है।

हमें यह शरीर मिला है - इस मानव संसार में दो आँखें, दो कान, एक नाक, दो हाथ, दो पैर वाला शरीर। जब इसमें प्राण, अर्थात्‌चेतना, भर जाती है, तो यह जीवंत हो जाता है।

हमारा शरीर हमेशा संतुलन या व्यवस्थित रहना चाहिए। आठ लोकों में से, मानव लोक ही एकमात्र ऐसा लोक है जो हमेशा अव्यवस्थित रहता है।

यदि हम प्रकृति के नियमों के साथ तालमेल बिठाएँ और उनका पालन करें, तो हमारा शरीर निश्चित रूप से व्यवस्थित और स्वस्थ रह सकता है, यह समझने वाली एक महत्वपूर्ण बात है।

अपने शरीर को स्वस्थ कैसे रखें?

शरीर एक मशीन है और इसे रखरखाव और सेवा की ज़रूरत होती है। तो आप ऐसा कैसे कर सकते हैं, तो रोज़ाना आधे घंटे से एक घंटे तक व्यायाम करके। आपको हर दिन विभिन्न तरीकों जैसे पैदल चलना, जॉगिंग, दौड़ना, साइकिल चलाना, तैराकी, योग, प्राणायाम, कार्डियो एक्सरसाइज़ आदि के ज़रिए अपने शरीर का ज़्यादा से ज़्यादा व्यायाम ज़रूर करना चाहिए। आजकल का मेटाबॉलिज़्म, चर्बी और चर्बी सिर्फ़ गति से ही बढ़ती है। मांसपेशियों को मज़बूती और पोषण मिलता है, और उत्साह बढ़ता है।

हमारा शरीर सिर्फ़ शाकाहारी भोजन के लिए बना है। जितना हो सके मांसाहारी भोजन से बचना चाहिए।

एक स्वस्थ और सात्विक आहार हमारे शरीर के लिए सबसे अच्छा होता है। संयमित आहार स्वास्थ्य के लिए सबसे अच्छा होता है।

दिन में तीन बार खाना अच्छा होता है। खूब पानी पीना बहुत ज़रूरी है।

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पौष्टिक आहार जैसे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और कुछ वसा का सेवन ज़रूरी है। बॉडीबिल्डिंग प्रतियोगिताओं में, सभी बॉडी बिल्डर ऐसा करते हैं और अपने गठीले शरीर का प्रदर्शन करते हैं। उस समय, कुछ बातों को बढ़ा-चढ़ाकर बताया जाता है, जैसे स्टेरॉयड लेना। ये (स्टेरॉयड) शरीर और खासकर किडनी के लिए बहुत हानिकारक होते हैं, और ध्यान रहे कि ये भविष्य में समस्याएँ पैदा कर सकते हैं।

अगर आप अपने शरीर के साथ-साथ अपने मन को भी ऊर्जावान और प्रफुल्लित रख सकते हैं, तो इसका शरीर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए, शरीर के साथ-साथ मन को भी विकसित करना उतना ही ज़रूरी है।

हमें शरीर के लिए हानिकारक चीज़ों से ज़रूर बचना चाहिए, जैसे कि नशा करना, ज़्यादा खाना, पर्याप्त आराम न करना और किसी भी चीज़ की अधिकता से बचना।

अगर आपको कोई बीमारी हो जाए, तो तुरंत डॉक्टर से मिलना और समय पर उसका इलाज करवाना आपकी ज़िम्मेदारी है।

"इलाज से बेहतर बचाव है" अपने शरीर से प्यार करें, आपको इसकी अच्छी देखभाल करनी होगी, यह आपको जीवन भर सहारा देगा, इसलिए इसका दिल से सम्मान करें।

भारत देश के कुछ चिकित्सकों का व्यवहार और वर्तन अमानवीय होता है

1) समस्या का सार — क्या हो रहा है?

कुछ अस्पतालों में मरीजों को अनावश्यक एंजियोप्लास्टी/स्टेंटिंग करवा दी जा रही है, कभी-कभी दस्तावेज़/ECG/रिपोर्टों में छेड़छाड़ कर के, और कई बार स्टेंट का बिल काटकर भी स्टेंट लगाये बिना इलाज का रुपये वसूल लिया जा रहा है। ये अकेली-एक-दो खबरें नहीं — देश और विदेश में 'स्टेंट ओवरयूज़' और कुछ जगहों पर स्पष्ट धोखाधड़ी की घटनाएँ सामने आई हैं।

२) हाल के घटनाक्रम — भारत (विशेषकर गुजरात) में क्या उजागर हुआ?

bख्याति (Khyati) अस्पताल — अहमदाबाद: PMJAY लाभार्थियों पर कथित अनावश्यक एंजियोप्लास्टी और स्टेंटिंग का मामला बड़ा बना — पुलिस/क्राइम ब्रांच जांच, कई गिरफ्तारियाँ और चार्जशीट जारी हुईं; कुछ मरीज़ों की मृत्यु भी हुई। कोर्ट और जांच लगातार सक्रिय हैं।

जामनगर का JCC Heart Institute: सरकारी जांच में कई अनियमितताएँ मिलीं और PMJAY से निलंबन जैसी कार्रवाई हुई — आरोप में रिपोर्ट/ECG में हेराफेरी का जिक्र है।

गुजरात की घटनाएँ स्थानीय और राष्ट्रीय मीडिया व प्रशासन की जांच का विषय बन चुकी हैं — राज्य स्तर पर अस्पतालों/डॉक्टरों के विरुद्ध आपराधिक तथा सिविल कार्रवाइयाँ चल रही हैं।

३) यह क्यों और कैसे होता है? — मुख्य कारण (व्याख्या)

1. वित्तीय प्रेरणा (Perverse incentives): सर्जरी/स्टेंट लगाने पर अस्पताल और कुछ मामलों में ऑपरेटर को अधिक प्रॉफिट होता है — बीमा/सरकारी क्लेम प्रणाली का दुरुपयोग होता है।

२. कम कड़ा क्लिनिकल गवर्नेंस और ऑडिट: यदि अस्पताल के आंतरिक ऑडिट/बाहरी रेगुलेटर कमजोर हों तो गलत व्यवहार छिप सकता है। Gujarat मामलों में रिपोर्टों में रिपोर्टिंग-मैनिपुलेशन का भी जिक्र मिला है।

३. अस्पष्ट 'उपयुक्तता' (appropriateness) के निर्णय: स्थिर (stable) कोरोनरी बीमारी में हर स्टेन्ट लाभकारी नहीं — वैश्विक मार्गदर्शक (ACC/AHA/ESC) कहते हैं कि केवल सही संकेत के आधार पर ही रीवैस्कुलराइज़ेशन किया जाए। तथाकथित "ओवरयूज़" के अंतरराष्ट्रीय अध्ययन भी मिल चुके हैं।

4. इंस्ट्रुमेंट/सप्लाई-चेन व बिलिंग की जटिलता: कुछ जगहों पर स्टेंट-प्राइसिंग, क्लेम-कोड और इनवॉइसिंग की जटिल प्रणाली का अनुचित फायदा उठाया जाता है।

4) मरीजों पर परिणाम (हानी) — शारीरिक, मानसिक, वित्तीय

शारीरिक हानि: अनावश्यक प्रक्रियाएँ जटिलताएँ (रक्तस्राव, संक्रमण, कार्डिएक इवेंट), और कुछ मामलों में मृत्यु तक कर सकती हैं। गुजरात के मामलों में ऐसी घटनाएँ रिपोर्ट हुईं।

मनोवैज्ञानिक व सामाजिक: विश्वास टूटता है — स्वास्थ्य-सहायता पर भरोसा कम होता है; पीड़ित परिवारों को आघात और सामाजिक बदनामि झेलनी पड़ सकती है।

आर्थिक बोझ: स्टेंट-प्राइस और प्रोसिज़र-फीस के कारण परिवार दिवालिया हो सकते हैं; सरकारी प्रोग्राम्स का दुरुपयोग कर करदाता का पैसों का दुरुपयोग भी होता है।

5) अंतरराष्ट्रीय और शोध-प्रमाण (क्या यह केवल भारत का मामला है?)

ग्लोबली भी 'ओवरयूज़' रिपोर्ट हुई हैं: Lown Institute, Axios जैसी संस्थाओं के विश्लेषण में पाया गया कि विकसित देशों में भी स्टेंट्स का एक बड़ा हिस्सा अनावश्यक माना गया है — और इससे अरबों डॉलर का बर्बाद खर्च होता है। यह दर्शाता है कि समस्या केवल किसी एक देश का नहीं, बल्कि क्लिनिकल-प्रैक्टिस और इकॉनोमिक-इन्सेंटिव का है।

6) नियामक और प्रणालीगत प्रतिक्रियाएँ — सरकारें और मेडिकल बॉडीज़ क्या कर रही हैं?

जांच-कार्यवाहियाँ: गुजरात में अस्पतालों पर जांच, कुछ संस्थाओं को PMJAY से सस्पेंड किया जाना, गिरफ्तारियाँ और चार्जशीट हुईं — यह दिखाता है कि प्रशासन सक्रिय है।

क्लिनिकल-लाइसेंस और Appropriateness criteria: ACC/AHA/ESC जैसी अंतरराष्ट्रीय समितियाँ स्पष्ट मार्गदर्शक-रूल्स जारी करती रहती हैं — जिनके अनुसार केवल जब क्लिनिकल संकेत मजबूत हों तभी PCI/स्टेंट की अनुशंसा होनी चाहिए। अस्पतालों/इंश्योरर्स के लिए 'उचितता' ऑडिट आवश्यक है।

बीमा और PMJAY-level सुधार: PMJAY और अन्य योजनाओं में क्लेम वेरिफिकेशन, पोस्ट-प्रोसीजर ऑडिट और पैनल-डॉक्टर समीक्षा बढ़ाने की पहलें चर्चा में रही हैं। गुजरात के मामले जैसी घटनाओं के बाद कठोर कार्रवाई हुई।

7) रोगी-स्तर पर क्या सावधानियाँ रखें — व्यावहारिक निर्देश (यदि आप/परिवार को कोई स्टेंट सुझाया जाए)

1. दूसरी राय अनिवार्य समझें — खासकर स्थिर/नॉन-इमरजेंसी मामलों में।

२. पूछें: ऑन्लाइन/ऑफ़लाइन रिपोर्ट्स, एंजियोग्राम की इमेज/वीडियो दिखाएँ और लें। किसी द्वितीय करदीय (independent) कार्डियोलॉजिस्ट से angiogram review करवा लें।

३. पूछें: FFR/iFR या अन्य functional tests — केवल एंजियोग्राम-के 'नज़ारों' पर निर्णय न लें; नस की कार्य-प्रदर्शन जाँच कई बार जरूरी होती है। (Guideline-based practice.)

4. इन्फॉर्म्ड-कनसेंट पर जोर दें — लिखित में जोखिम-लाभ और वैकल्पिक चिकित्सा (medical therapy) का उल्लेख माँगे।

5. बिल और इनवॉइस की निगरानी: स्टेंट का नाम/ब्रांड, संख्या, हर आइटम का डिस्क्रिप्शन और यदि स्टेंट नहीं डाला गया तो उसका उल्लेख माँगे — किसी भी विसंगति पर बिल क्लियर-करने के लिए अस्पताल से स्पष्टीकरण लें। (जरूरत पर उपभोक्ता शिकायत/PMJAY grievance/हेल्थ डिपार्टमेंट शिकायत दर्ज करें)।

8) अगर धोखाधड़ी का शक हो — किससे शिकायत करें (भारत में व्यावहारिक कदम)

अस्पताल प्रबंधन को लिखित शिकायत दें और जवाब माँगे।

State Health Department / Food & Drug Commissioner को रिपोर्ट करें (Gujarat में ऐसे मामलों पर कार्रवाई हुई)।

PMJAY-केसेस में — PMJAY grievance/helpline पर शिकायत और क्लेम-रिव्यू माँगें।

Police / Crime Branch — यदि जानलेवा अनियम्यताओं या स्पष्ट कपटकारी क्लेम का सबूत हो। Gujarat मामलों में पुलिस/क्राइम ब्रांच सक्रिय हुई।

Consumer Court / Civil Suit — आर्थिक हानि के लिए उपभोक्ता अदालत में दावा संभव है।

Professional medical regulator (State Medical Council / NMC) में अनैतिक प्रैक्टिस की शिकायत दर्ज कराएँ — डॉक्टरों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई हो सकती है।

9) सुधारों की दिशा — क्या सिस्टम बदलना होगा? (नीति-स्तर सुझाव)

सख्त क्लिनिकल appropriateness audits (रीअल-टाइम और पोस्ट-प्रोसीजर)।

स्वतंत्र वीडियो/इमेज रिव्यू की अनिवार्यता जब बड़े पैमाने पर क्लेम हों (PMJAY जैसे स्कीमों में)।

स्वास्थ्य-जाँच/कंप्लायंस टीमों का सशक्तिकरण और बी-टू-बी सप्लाई-चेन (स्टेंट-डिस्ट्रीब्यूटर) पर वित्तीय ट्रेसिंग।

रुग्ण-साक्ष्य (patient evidence) और पारदर्शिता: अस्पतालों के प्रदर्शन-डैशबोर्ड सार्वजनिक हो — जैसे कौन-कितने PCI कर रहा और उनकी रिव्यू-रेटें क्या हैं। (लॉन इंस्टीट्यूट जैसी रिपोर्टों का मॉडल उपयोगी है)।

10) सारांश — प्रभावशाली निष्कर्ष (संक्षेप में)

> "अमोरी/अनैतिक चिकित्सा प्रथाएँ — जैसे अनावश्यक स्टेंट लगाना या स्टेंट बिल काटकर उसे लागू न करना — गंभीर सामाजिक, शारीरिक और आर्थिक हानि पहुँचाती हैं। गुजरात के हालिया मामलों ने यह खोला कि जहाँ वित्तीय प्रोत्साहन और कमजोर गवर्नेंस मिलते हैं, वहाँ रोगी-हानी का जोखिम बढ़ जाता है। पर जवाब भी प्रशासन-नियामक और क्लिनिकल-गाइडलाइन्स के ज़रिये आ रहा है — निलंबन, गिरफ्तारी, चार्जशीट और ऑडिट-प्रक्रियाएँ लागू हुई हैं। रोगी-सुरक्षा के लिए सबसे शक्तिशाली हथियार है जागरूकता, दूसरी राय, पारदर्शिता और शिकायत-प्रक्रिया का सही उपयोग।"

शकरकंद छिलके सहित खाने के फायदे उबालकर छिलका न उतारें — छिलके में भी भरपूर गुण होते हैं!

1. हाई फाइबर

पाचन मजबूत, कब्ज से राहत, पेट देर तक भरा।

2. एंटी-ऑक्सीडेंट पावर

इम्युनिटी बढ़ाए, सूजन कम करे, स्किन Glow दे।

3. शुगर कंट्रोल

फाइबर ब्लड शुगर धीरे बढ़ाता है—डायबिटीज वालों के लिए भी लाभदायक।

4. विटामिन-मिनरल भरपूर

पोटैशियम, मैग्नीशियम, B-विटामिन—दिल, हड्डियों और मांसपेशियों के लिए अच्छे।

5. वजन मैनेजमेंट

कम कैलोरी + ज़्यादा फाइबर = वजन कंट्रोल में मदद।

कैसे खाएँ?

अच्छे से रगड़कर धोएँ और उबालकर छिलके सहित खाएँ।

कब छिलका न खाएँ?

बहुत पुराने, सड़े या दागदार शकरकंद का छिलका हटाएँ।

शतपावली – भोजन के बाद 100 कदम का चमत्कार

(आयुर्वेद + आधुनिक विज्ञान)

श्लोक (योगरत्नाकर):

"भुक्त्वा शतपदं गच्छेत आयुश्च वर्धते नित्यं स्वास्थ्यमेवाभिजायते।"

भोजन के बाद 100 कदम चलो – पाचन तेज, शरीर हल्का, आयु बढ़े।

आयुर्वेदिक लाभ

पाचन शक्ति बढ़े
गैस, पेट फूलना कम
वात–पित्त–कफ संतुलित
भोजन का अवशोषण बेहतर
मन शांत और सक्रिय

वैज्ञानिक लाभ

पाचन सुधरे
शुगर कंट्रोल
रक्तसंचार बेहतर
मेटाबॉलिज़्म तेज
खाने के बाद की सुस्ती खत्म

शतपावली कैसे करें

1 भोजन के बाद 100 कदम (5–10 मिनट)
2 चाल धीमी व सहज
3 खासकर दोपहर के बाद
4 वॉक के बाद:
पीठ के बल 8 सांसें
दाईं करवट 16 सांसें
बाईं करवट 32 सांसें,
(बाईं करवट पाचन में सबसे सहायक)

छोटी-सी आदत = जीवनभर का स्वास्थ्य

सांस फूलने की परेशानी से राहत

सांस फूलना क्या होता है ?

बहुत से लोग गलतफहमी के चलते डिसप्निया (सांस फूलना Sans foolna) रोग को दमा रोग ही समझ लेते हैं। लेकिन डिसप्निया (सांस फूलना) और दमा (एस्थमा) रोग में थोड़ा सा फर्क होता है।कई लोगों को गलतफहमी होती है कि मोटा होने की वजह से ही सांस फूलती है पर ऐसा कुछ नही है,पतले लोगो की भी ऐसे ही सांस फूलती है और इसका कारण हमारे शरीर में नही अपितु पर्यावरण में बढ़ रहे प्रदूषण,अस्वच्छ हवा में सांस लेना और गलत कार्यशैली हो सकती है।

सांस फूलने के कारण..

सांस फूलने का रोग 2 प्रमुख कारणों से हो सकता है.

ज्यादा उम्र के लोगों को बारिश के मौसम में सांस की नली के पुराने जुकाम आदि रोगों के कारण।

दिल की धड़कन का काफी तेज चलने के कारण।

सांस फूलने का प्रभावी और घरेलू इलाज़..

अंजीर..

जिन लोगो की सांस फूलती है, उनके लिए अंजीर अमृत के समान है क्योंकि अंजीर छाती में जमी बलगम और सारी गंदगी को बाहर निकाल देती है। जिससे सांस नली साफ़ हो जाती है और सुचारू रूप से कार्य करती है। इसके लिए आप तीन अंजीर गरम पानी से धोकर रात को एक बर्तन में भिगोकर रख दीजिये और सुबह खाली पेट नाश्ते से पहले उन अंजीरों को खूब चबाकर खा लीजिये। उसके बाद वह पानी भी पी लें। इस नुस्खे का प्रयोग लगातार एक महीने तक कीजिये। इसके प्रयोग से फर्क आपको खुद ही महसूस होने लगेगा।स्नेहा समूह

तुलसी (Basil)और सौंठ (dry ginger) का काढ़ा

तुलसी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाती है और श्वसन तंत्र पर बाहरी प्रदूषण और एलर्जी के हमले से रक्षा करने में समर्थ है। इसलिए जिनको भी सांस फूलने की या दमा की शिकायत हो उन लोगो को तुलसी से बने इस काढ़े का इस्तेमाल अवश्य ही करना चाहिए। इसके लिए आधा कप पानी में 5 तुलसी की पत्ती,एक चुटकी सौंठ पाउडर,काला नमक और काली मिर्च डालकर उबाल ले। ठंडा करके

जब यह काढ़ा गुनगुना सा रह जाए तब इसका सेवन करे। नित्य प्रति इस काढ़े के सेवन से आपके सांस फूलने की समस्या जड़ से समाप्त हो जाएगी।

अजवायन

सांस फूलने की समस्या अक्सर श्वास नली में सूजन या श्वास नली में कचरा आ जाने की वजह से ही उत्पन्न होती है। श्वास नली को साफ़ करने का सबसे प्रभावी तरीका होता है– स्टीम या भाप लेना। भाप लेने से यदि श्वास नली में सूजन है तो उसमे आराम हो जाता है और कचरा भी निकल जाता है तो इसके लिए आपको अजवायन पीसकर पानी में उबलनी है। फिर इस अजवायन वाले पानी की भाप लेनी है। क्योंकि अजवायन की भाप सूजन को खत्म और दमे और सांस फूलने की समस्या में राहत दिलाती है।

तिल का तेल (Sesame oil)

यदि ठंड की वजह से छाती जाम हो जाए या रात के समय दमे का प्रकोप बढ़ जाए और सांस ज्यादा फूलने लगे तो तिल के तेल को हल्का गर्म करके छाती और कमर पर गरम तेल की सेक करे। इस प्रकार आपकी छाती खुल जायेगी और आपको सांस फूलने की समस्या में राहत मिलेगी।

अंगूर (grapes)

सांस फूलने या दमा की समस्या में अंगूर बहुत लाभदायक होता हैं। इस समस्या में आप अंगूर भी खा सकते है या अंगूर का रस का भी सेवन कर सकते हैं। कुछ चिकित्सकों का तो यह दावा है कि दमे के रोगी को अगर अंगूरों के बाग में रखा जाए तो दमा,सांस फूलने या कोई भी श्वसन सम्बन्धी समस्या में शीघ्र लाभ पहुंचता है।

चौलाई (Amaranth) के पत्तों का रस

सांस फूलने की या श्वसन सम्बन्धी कोई भी समस्या हो यदि चौलाई के पत्तों का ताजा रस निकालकर और उसमे थोड़ा शहद मिलाकर प्रतिदिन सेवन किया जाए तो अतिशीघ्र लाभ पहुंचता है। चौलाई के पत्तो का प्रयोग आप किसी भी रूप में कर सकते है। चाहे तो चोलाई के पत्तो का साग भी खा सकते है। चोलाई के पत्ते इस समस्या में रामबाण औषधि है।स्नेहा समूह

लहसुन (Garlic)

लहसुन भी सांस फूलने की समस्या में अत्यंत लाभकारी औषधि का कार्य करता है। इसके लिए लहसुन की 3 कलियों को दूध में उबालना है और फिर उस दूध को छानकर सोने से पूर्व पीना है। याद रहे इसके बाद कुछ भी न खाये या पिए। कुछ ही दिनों के निरन्तर प्रयोग से आपको इसके चमत्कारी परिणाम देखने को मिलेंगे।

सौंफ (Fennel)

सांस फूलने की या श्वसन सम्बन्धी कोई भी समस्या हो यदि सौंफ का प्रयोग दैनिक दिनचर्या में हर रोज किया जाए तो आपको कभी सांस फूलने की समस्या आएगी ही नही। क्योंकि सौंफ में बलगम को साफ करने के गुण विद्यमान होते हैं। यदि दमे के रोगी और सांस फूलने वाले रोगी नियमित रूप से इसका काढ़ा इस्तेमाल करते रहें तो निश्चित रूप इस समस्या से निजात मिल जाएगी।

लौंग (Cloves) और शहद (Honey)

लौंग और शहद का काढ़ा पीने से श्वास नली की रुकावट दूर हो जाती है और श्वसन तंत्र मजबूत बनता है। इसके लिए चार-छः लौंग को एक कप पानी में उबाल ले और फिर उसमे शहद मिलाकर दिन में तीन बार थोड़ा-थोड़ा पीने से सांस फूलने की समस्या एकदम ठीक हो जाती है।

हींग (Asafoetida)

सांस फूलने की या श्वसन सम्बन्धी कोई भी समस्या हो यदि हींग का प्रयोग दैनिक दिनचर्या में हर रोज किया जाए तो आपको कभी सांस फूलने की समस्या आएगी ही नही।बाजरे के दाने जितनी हींग को दो चम्मच शहद में मिला ले। इसको दिन में तीन बार थोड़ा-थोड़ा पीने से सांस फूलने की समस्या एकदम ठीक हो जाती है।

नीबू (lemon) का रस

सांस फूलने या दमा की समस्या में नीबू का रस गरम जल में मिलाकर पीते रहने से यह समस्या धीरे धीरे जड़ से खत्म हो जाती है। सांस फूलने की समस्या में केला अधिक मात्रा में नही खाना चाहिए। पानी हल्का गरम पीना चाहिए।पानी उबालकर और थोड़ा हल्का गरम पीना ही लाभकारी होता है।

एसिड बनाने वाले पदार्थ न ले

दमा या सांस फूलने की समस्या होने पर भोजन में कार्बोहाइड्रेट, चिकनाई एवं प्रोटीन जैसे एसिड बनाने वाले पदार्थ कम मात्रा में ही लें क्योंकि इनसे शरीर में एसिड बनता है जिससे श्वसन में बाधा उत्पन्न होती है इसलिए ताज़े फल, हरी सब्जियां तथा अंकुरित चने जैसे क्षारीय खाद्य पदार्थों का सेवन भरपूर मात्रा में करें।...

बिहार में उड़े 'गर्दे' के गूढ़ार्थ !

डॉ घनश्याम बादल

इस विधानसभा चुनाव में बिहार ने सारे पूर्वानुमानों को झुठलाते हुए नीतीश कुमार और भाजपा नीत एनडीए को प्रचंड जीत दिलवाते हुए राजनीति का एक नया मिथ रच बड़ा संदेश दिया है । यह संदेश बहुत साफ है कि यदि आप सरकार में रहकर सचमुच जनकल्याण के कार्य आगे बढ़ाते हैं तो फिर गलतियों के बावजूद जनता आपको सर आंखों पर बिठाती है।

हालांकि पहले दौर के मतदान के बाद ही सर्वेक्षण एजेंटीयों ने राजग की बढ़त की भविष्यवाणी कर दी थी और दूसरे दौर के बंपर मतदान के बाद ज़्यादातर एजेंसियां एनडीए को 130 से 160 सीटें दे रही थी हालांकि तब सर्वेक्षण एजेंसियों के परिणामों पर उंगलियां भी उठाई जा रही थीं लेकिन वास्तविक परिणाम ने जिस तरह राष्ट्रीय जनता दल और सहयोगी दलों के महागठबंधन का सफाया किया है वह हैरतअंगेज है।

राहुल तेजस्वी की जोड़ी, एस आई आर और वोट चोरी के साथ-साथ हर घर को नौकरी, माई बहन मान योजना और रैलियों में उमड़ रही भीड़ तथा तेजस्वी एवं राहुल की हुंकार से माहौल भरमा रहा था कि इस बार एनडीए को बहुमत प्राप्त करना आसान नहीं होगा लेकिन बिहारियों के मन को समझना विशेषज्ञों के भी बस से बाहर की बात रही और अंततः एनडीए प्रचंड बहुत के साथ फिर सत्ता में आ गया है।

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (एन.डी.ए.) ने न सिर्फ सत्ता बरकरार रखी, बल्कि प्रचंड बहुमत के साथ राजनीति-मंच पर नये समीकरण भी गढ़े हैं। इस जीत के पीछे कई कारण हैं। रणनीतिक संयोजन, जातिगत एवं क्षेत्रीय समीकरणों को पहचानना व उसका सही इस्तेमाल करना तथा विपक्षी गठबंधन की कमजोरियों का प्रधानमंत्री मोदी अमित शाह योगीआदित्यनाथ, नीतीश कुमार और उनके सहयोगियों ने जमकर लाभ उठाया। इसी पृष्ठभूमि में प्रशांत किशोर और राहुल गांधी की रणनीतिक विफलता राजग के लिए सफलता का आधार बनी है।

यदि चुनाव से पहले की स्थितियों पर नजर डालें तो पहले से ही एनडीए लीड ले चुका था । उसने प्रत्याशियों की पहले घोषणा की जबकि महागठबंधन के नेता आपस में लड़ते रहे। टकराव तो राजग में भी दिखाई दिया लेकिन सुगठित चुनाव प्रचार, जनता के मन तक पहुंचना, सरकार की उपलब्धियां, शाह-मोदी तथा नीतीश की तिकड़ी के चमत्कार और लालू यादव के जंगल राज की यादों को ताजा करने की कुशल रणनीति ने एनडीए के चमत्कार को नमस्कार करवा दिया।

एन.डी.ए. इस चुनाव में विकास-विचारधारा को मुद्दा बनाकर, "डबल इंजन सरकार" और सुशासन एजेंडे के साथ मैदान में उतरा था और विपक्ष के एम वाई' (मुसलमान + यादव) के मुकाबले अपने एम वाई (महिला+युवा) की प्रस्तुति ने इस गठबंधन को व्यापक समर्थन दिया। इसके विपरीत, महागठबंधन ने जातिगत वोट बैंक विशेष रूप से मुस्लिम-यादव और नौकरियों-मुद्दों पर ज़ोर दिया लेकिन यह रणनीति काम नहीं आई।

प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी ने "गाँव-गाँव, मुद्दा-मुद्दा" की पहल की और नौकरियों-माइग्रेशन जैसे विषय उठाये, लेकिन उसका असर सीमित रहा। राहुल गांधी की ओर से "वोट चोरी" व एस आई आर में गड़बड़ी जैसे आरोप लगाए गए, उनकी सभाओं में भीड़ तो उमड़ी लेकिन 'वोट चोर गद्दी 'छोड़ की अपील जनादेश में बदल नहीं पायी।

बिहार की राजनीति में जातिगत समीकरण हमेशा निर्णायक रहे हैं। इस बार एन.डी.ए. ने पिछड़ी अति पिछड़ी व अन्य पिछड़ी जातियों दलितों, ओबीसी-गैर-यादवों के हर वर्ग में सेंध लगाने में सफलता प्राप्त की और हर वर्ग से वोट मिलने की वज़ह से ही इतना प्रचंड बहुमत मिलना संभव हो पाया। शुरुआती आंकड़ों के अनुसार अति पिछड़ी एवं पिछड़ी जातियों के करीब 58 % वोट एन.डी.ए. को मिले। वहीं महागठबंधन की अपने परंपरागत मुस्लिम यादव वोट बैंक पर अत्यधिक निर्भरता और अन्य समूहों के जुड़ पाने की विफलता से राजनीतिक रूप से भारी नुकसान हुआ और वह पहले जितनी सीटें भी प्राप्त नहीं कर पाया। महागठबंधन की सफलता में एक बड़ा कारण वहां कांग्रेस का ज़मीनी संगठन ने रहना भी रहा । साथ ही साथ दो साल तक तेजस्वी का नीतीश कुमार के साथ उपमुख्यमंत्री के रूप में काम करना और फिर सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाना भी भारी पड़ा।

मिथिलांचल, मगध, शिवहर-सीमांचल आदि में एन.डी.ए. को संतुलित आधार मिला। विरोधी गठबंधन मुख्य रूप से एक-दो क्षेत्रीय और जातिगत धड़ों तक सीमित रहा, जिससे उनकी व्यापक पहुँच ढीली पड़ गयी।

इस जीत में नीतीश कुमार का 'सुशासन बाबू' का ब्रांड भी महत्वपूर्ण रहा। उनका दल जनता दल यूनाइटेड 80% जीत दर के साथ इस बार पहले से लगभग दुगनी सीटों पर जीता तो भारतीय जनता पार्टी ने 90% का स्ट्राइक रेट पाया। इतना ही नहीं, इस गठबंधन के तीसरे घटक लोक जनशक्ति पार्टी ने भी 19 सीटें जीतकर बड़ा योगदान दिया। विपक्षी महागठबंधन में नेतृत्व का मुख्यमंत्री का चेहरा बने तेजस्वी यादव और कांग्रेस-आरजेडी-साझेदारी में स्पष्ट अभियान-रणनीति की कमी दिखी और कई स्थानों पर फ्रेंडली मुकाबला भी भारी पड़ा । अस्तु, बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में एन.डी.ए. की जीत एक रणनीतिक सफलता का पर्याय बनकर सामने आई है जिसमें व्यापक सामाजिक गठबंधन, क्षेत्र-समीकरणों का संतुलन, महिलाओं-युवाओं का सक्रिय हिस्सा और सुशासन-विकास के मुद्दे निर्णायक सिद्ध हुए । इसके विपरीत, महागठबंधन ने अपने परंपरागत वोट बैंक पर बहुत अधिक निर्भरता दिखाई मगर उसमें भी एनडीए को सेंध लगाने से नहीं रोक पाए।

प्रशांत किशोर विधानसभा में सीट जीतने में तो सफल नहीं हुए पर उन्होंने एक लैंड मार्क जरूर स्थापित किया कि अब बिहार की राजनीति अब सिर्फ जातिगत घेराबंदी तक सीमित नहीं रहेगी बल्कि मुद्दा-आधारित नया वोटर समूह भी अहम होगा। यदि परिणाम पर निगाह डाली जाए तो करीब 50 सीट ऐसी दिखाई देंगी जिनमें हार जीत का अंतर और जन सुराज पार्टी या स्थानीय दलों को मिलने वाली वोट लगभग बराबर रहे यानी इन्होंने यह तय कर दिया कि किसे जिताना है और किसे हराना है।

भले ही एनडीए 2010 के 206 सीटों के निशान को नहीं छू पाया मगर उसने प्रचंड और ऐतिहासिक जीत के साथ सत्ता में वापसी की है । बस, आने वाले दिनों में यह ज़रूर देखने को मिल सकता है कि इस बार भी सबसे बड़ी पार्टी बनकर भाजपा क्या नीतीश कुमार को पहले की तरह ही मुख्यमंत्री बनाएगी या फिर खुद बीजेपी के किसी नेता को बिहार का नेतृत्व सौंपेगी यह प्रश्न इसलिए भी उठेगा क्योंकि इस बार नीतीश कुमार के नेतृत्व में चुनाव ज़रूर लड़ा गया लेकिन भी मुख्यमंत्री के चेहरे के रूप में प्रोजेक्ट नहीं किए गए थे।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

पुनीता सिंह काव्य रश्मि सम्मान से सम्मानित

डॉ.शंभू पंवार

नई दिल्ली। 15 नवंबर। दिल्ली की प्रसिद्ध कवयित्री पुनीता सिंह को श्रेष्ठ काव्य लेखन प्रतियोगिता में देश भर के श्रेष्ठ सो रचनाकारों में चयनित होने पर कभी कवि मंच लखनऊ द्वारा ₹काव्य रश्मि₹ सम्मान से सम्मानित किया। लखनऊ के निराला सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में मंच के संस्थापक अनिल सुरेश मिश्र ने कवयित्री पुनीता सिंह को अंग वस्त्र,काव्य संग्रह "काव्याक्षरी" ओर सम्मान पत्र प्रदान कर काव्य रश्मि सम्मान से सम्मानित किया।इस अवसर पर पुनीता सिंह के समारोह में अपने दोहे—

"जो मन में पतझड़ भरें, गज भर रहना दूर। दिल की सारी हसरतें पल में करते चूर।

की उत्कृष्ट प्रस्तुति दे कर सभागार में उपस्थित साहित्य प्रेमियों से खूब दाद बटोरी।

कार्यक्रम में स्वयं श्रीवास्तव, प्रीति पांडेय और सौरभ जयसवाल की विशिष्ट उपस्थिति रही। देश के कोने—कोने से आए प्रतिष्ठित कवियों ने मंच से अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुतियों द्वारा वातावरण को भावपूर्ण बना दिया।

भाटला सामाजिक बहिष्कार मामले में पांच आरोपियों को 2-2 साल की सज़ा व ₹7000 जुर्माना

रजत कल्सन/हिसार, 15 नवंबर

भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण में 15 जून 2017 को जातिगत दंभ के चलते गाँव भाटला मे अनुसूचित जाति के युवकों को पानी ना भरने देने और उन्हें चोटें मारने के मामले में आज गगनदीप मित्तल अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश की अदालत ने पांच आरोपियों महेंद्र, सुनील, सुभाष, रविंदर व प्रवेश को दलित युवको के साथ मारपीट करने के आरोप में दोषी करार दिया है तथा सभी पांच आरोपियों को दो-दो साल की सजा व साथ-साथ ₹7000 जुर्माना की सजा सुनाई गई है। पीड़ित पक्ष के अधिवक्ता रजत कलसन ने बताया कि 15 जून 2017 को शाम करीब 6:00 बजे गांव भाटला में बिजली घर के नजदीक स्थापित पानी के हैंड पंप पर ब्राह्मण व जाट समाज के लड़कों ने पहले पानी भरने को लेकर गांव के ही अनुसूचित जाति समाज के कुलदीप, विकास, जयमल, राहुल , नर सिंह व अमित को चोटें मारी थी व जातिसूचक गालियां बकीं थी। जिस पर पीड़ितों ने हांसी थाना सदर में एससी एसटी एक्ट व मारपीट की धाराओं में मुकदमा दर्ज कराया था।

इस मुकदमे को लेकर गांव भाटला में बवाल मच गया था तथा गांव के जाट व ब्राह्मण समुदाय के लोगों ने गाँव के दलित समाज के लोगो पर समझौते के लिए दबाब बनाया था । समझौता न करने पर गांव के दलित समाज का सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया था।

यह मामला लगभग 8 साल तक अदालतों में चला जिसमें पीड़ित पक्ष की तरफ से 19 लोगों ने गवाही दी तथा दोनों पक्षों की दलीलों को सुनने के बाद आज अदालत ने इस मामले में गांव गांव भाटला के पांच युवकों को 148, 149, 323, 324,325, 506 आईपीसी में दो-दो साल की सजा में प्रत्येक पर ₹7000 का जुर्माना किया है।

अधिवक्ता कल्सन ने बताया कि वह इस मामले में सभी सजायाफ्ता मुजरिमों की सजा को बढ़ाने के लिए माननीय पंजाब व हरियाणा हाईकोर्ट में अपील करेंगे।

इसके साथ ही भाटला दलित संघर्ष समिति के सदस्य विकास भाटला, अजय भाटला, जय भगवान सोढ़ी, अमिताभ दहिया, सुनील कुमार, राजेश कुमार सचिन चोपड़ा, पवन कुमार ग्रेवाल, जरमिला देवी ने अदालत के फैसले पर संतोष जताते हुए कहा कि अंततः न्याय की जीत हुई है।

पर्यावरण पाठशाला — मेरी पहल, मेरे अनुभव

- डॉ. अंकुर शरण

पर्यावरण संरक्षण मेरे लिए सिर्फ़ एक विचार नहीं, बल्कि जीवन का हिस्सा है। वर्षों से विभिन्न सामाजिक पहलों, स्कूलों, संस्थानों और समुदायों के साथ मिलकर मैंने यह अनुभव किया है कि यदि हम अपनी आदतों में प्रकृति के प्रति संवेदना जोड़ लें, तो समाज में वास्तविक और स्थायी परिवर्तन अवश्य आता है। "पार्यावरण पाठशाला" के माध्यम से मैं लगातार यही प्रयास करता रहा हूँ कि लोग न केवल पर्यावरण की बात करें, बल्कि रोज़मर्रा की जिंदगी में उसके लिए कुछ करना भी शुरू करें।

मेरा अनुभव बताता है कि बदलाव किसी बड़े आयोजन से नहीं, बल्कि एक व्यक्ति के छोटे कदमों से शुरू होता है। पेड़ अपनाने की पहल हो या लोगों को प्रकृति के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित करना—ये प्रयास तभी सफल होते हैं जब हम उन्हें अपने जीवन में अपनाते हैं। मैंने स्वयं अपने आसपास कई पेड़ों को अपनाया, उनकी देखभाल की, और लोगों को भी प्रेरित किया कि वे कम से कम एक पेड़ की जिम्मेदारी लें। जब बच्चे, बुजुर्ग और परिवार इन पहलों में शामिल होते हैं, तो एक सामूहिक ऊर्जा पैदा होती है, जो अपने आप समाज को आगे बढ़ाती है।

पर्यावरण पाठशाला

प्लास्टिक से मुक्त जीवनशैली अपनाना भी मेरी पहल का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। अनेक कार्यक्रमों के दौरान मैंने कपड़े के बैग बांटे, लोगों को प्लास्टिक के विकल्प अपनाने के लिए प्रेरित किया और कई स्कूलों में बच्चों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक किया। मेरी यह मान्यता रही है कि बदलाव की शुरुआत घर से होती है—जब परिवार प्लास्टिक कम करते हैं, तब समाज स्वच्छ और सुरक्षित बनता है।

जल संरक्षण की दिशा में भी मैंने कई छोटी-छोटी गतिविधियों को बढ़ावा दिया। चाहे टपकते नलों को ठीक कराने की अपील हो, घरों में सीमित जल उपयोग पर जागरूकता हो या सामुदायिक स्तर पर पानी बचाने के अभियान—इन सभी में मुझे लोगों का शानदार सहयोग मिला। कचरा प्रबंधन के क्षेत्र में भी मैंने गीला और सूखा कचरा अलग रखने की आदत को बढ़ावा दिया, क्योंकि यह एक छोटे कदम के रूप में बड़े परिणाम देता है।

मेरी कोशिश हमेशा रही है कि समाज को केवल जागरूक न किया जाए, बल्कि उसे पर्यावरण से जोड़ भी दिया जाए। पौधे उपहार में देने की परंपरा मैंने अपने सभी कार्यक्रमों में अपनाई। स्कूलों, सरकारी संस्थानों और सामाजिक समूहों में मैंने बच्चों और युवाओं को पौधों का महत्व समझाया और यह महसूस कराया कि एक छोटा पौधा भी भविष्य की बड़ी हरियाली का बीज है।

सबसे महत्वपूर्ण अनुभव यह रहा कि जब बच्चों को प्रकृति के करीब ले जाया जाता है—पक्षियों के संरक्षण, पार्क गतिविधियों या वृक्ष रोपण कार्यक्रमों के माध्यम से—तो उनमें प्रकृति के प्रति स्वाभाविक प्रेम विकसित होता है। "पार्यावरण पाठशाला" के इन कार्यक्रमों में शामिल होकर बच्चे, अभिभावक और शिक्षक सभी प्रकृति के प्रति अधिक संवेदनशील और जिम्मेदार बने हैं।

आज मैं अपने अनुभवों से यही कहना चाहता हूँ कि पर्यावरण सिर्फ़ सरकार या संस्थाओं की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हम सबकी है। यदि हम रोज़ एक छोटा कदम उठाएं—पेड़ बचाएं, पानी बचाएं, प्लास्टिक कम करें और साफ-सफाई बनाए रखें—तो पर्यावरण संरक्षण एक आदत बन जाती है, बोझ नहीं।

मेरा यह सफर जारी है और मैं चाहता हूँ कि अधिक से अधिक लोग "पार्यावरण पाठशाला" से जुड़ें, अपने अनुभव साझा करें और मिलकर एक हरियाली से भरपूर, स्वस्थ और जिम्मेदार भारत का निर्माण करें।

अंतर्राष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस आज

इस धरती पर मानव से लेकर जीव-जंतु निवास करते है जहां पर मानव के बीच कई तरह के भाव आते है प्रवृत्ति में धैर्य, उदारता या कहें सहिष्णुता सदा बनी रहती है। यहां सहिष्णुता या सहनशीलता का होना महत्व होता है। इस प्रवृत्ति को बताने के लिए हर साल अंतर्राष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस मनाया जाता है। यह खास दिन लोगों को वैश्विक सहिष्णुता के महत्व और असहिष्णुता के दुष्प्रभावों के प्रति अवगत और जागरुक किया जाता है।

जानें कब से हुई इस दिवस की शुरुआत

==========================

अंतरराष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस के इतिहास की बात करें तो, सहिष्णुता दिवस को मनाने का प्रयास UNESCO ने 16 नवंबर 1995 को किया था जहां पर साल 1996 में UNO ने 16 नवंबर को इस दिन को मनाने की शुरुआत की। बताया जाता है कि, सहिष्णुता के अंतर्गत ये सभी भाव धैर्य, उदारता और सहनशीलता आ जाते है। इस दिवस को लेकर खास बात यह भी है कि, यहां पर सहिष्णुता और अहिंसा के प्रचार के लिए हर साल यूनेस्को द्वारा मदन जीत सिंह पुरस्कार देने की परंपरा होती है। इस पुरस्कार में विजेता को एक लाख अमेरीकी डालर की पुरस्कार राशि प्रदान की जाती है। ये पुरस्कार विज्ञान, कला, संस्कृति अथवा संचार के क्षेत्र में सहिष्णुता और अहिंसा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किए गए काम के लिए दिया जाता है।

सहिष्णुता के अर्थ को समझना जरूरी

==========================

आपको बताते चलें कि, अंतर्राष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस के मौके पर सहिष्णुता के अर्थ को समझने के लिए आज के समय की स्थिति को परखना जरूरी है। यहां पर आज की जीवनशैली में हम अगर देखते है तो, हर किसी को अब किसी काम को करने की जल्दी होती है। धैर्य, संयम, और सहनशक्ति जैसे शब्दों का अस्तित्व कम हो जाता है। यहां पर देशभर में हिंसा की बढ़ती घटनाओं के बीच सहिष्णुता को बनाए रखना जरूरी होता है। अगर हर जगह सद्भाव की भावना विद्यमान रहेगी तो जाहिर सी बात है कि, वास्तविक सहिष्णुता वाला दिवस आ जाएगा।

दयालु/करूणावान लोगों की आयु, दूसरों की तुलना में 5 साल अधिक होती है। संतुष्टि/तृप्ति भी बढ़ने लगती है

लम्बी उम्र की इच्छा रखने वाले लोगों को अपने स्वभाव में मैत्री, दयालुता, प्रेम, आदर और परोपकार जैसी भावनाएं लानी चाहिए। ऐसा करने से हम एक लम्बा जीवन जी सकते हैं। हमें डर के कारण, मृत्यु उपरांत सुख और स्वर्गिक लाभ उठाने के लिए, दया दिखाने/प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं है। यदि हमें करूणा/दया करनी ही है तो हमें भीतरी उदार दिल से करनी होगी। ध्यान रहे कि हम सब निरंतर अपने भीतर उठते अनेक भाव-कुभावों से प्रतिपल टकराते/संघर्ष करते रहते हैं। हमारा जीवन इन्हीं अच्छाइयों-बुराइयों के बीच व्यतीत63[88] होता रहता है। जीवन में प्रेम और दया की प्रवृत्ति का अत्यंत महत्व है। मैत्री से व्यक्ति श्रेष्ठ बनता है। सच्चे मन और बिना किसी लालच के किया गया उपकार स्वतः ही श्रेष्ठता विकसित करता है। वास्तव में अपने किये उपकारों के बदले में किसी प्रकार के प्रति-उपकार की भावना उसे विषैला बना देती है। हमें नहीं पता कि आज/अभी जो हम कर रहें हैं वह हमारे पिछले कर्ज का भुगतान है या अगले कर्ज की व्युत्पत्ति ? इसलिए अपना प्रत्येक कृत्य परमात्म को ही अर्पित जानते हुए करें तो हम बौझिल/भारी/घुटे हुए नहीं होंगे। अपितु हंसते/नाचते हुए, इस कंटकाकीर्ण संसार/भवसागर से पार हो जायेंगें।

हिमाचल के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने किया केशव चैरिटेबल हॉस्पिटल का उद्घाटन

डॉ.शंभू पंवार

नई दिल्ली, 15 नवंबर ।हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ल ने कोड़ीराम आदर्श पुरम स्थित केशव चैरिटेबल हॉस्पिटल का उद्घाटन किया ।कार्यक्रम में बांसगांव के विधायक डॉ. विमलेश पासवान एवं सहजनवां के विधायक प्रदीप शुक्ला विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

समारोह को संबोधित करते हुवे महामहिम राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ल ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं का विकास समय की महती आवश्यकता है। केशव चैरिटेबल हॉस्पिटल गरीबों और जरूरतमंदों के लिए जीवन रक्षक सिद्ध होगा। यह प्रयास सेवा, समर्पण और मानवीय संवेदना का उत्कृष्ट उदाहरण है ।अस्पताल के मुख्य ट्रस्टी केशव प्रसाद श्रीवास्तव और ट्रस्टी डॉ. सौरभ पाण्डेय ने बताया कि अस्पताल में 30 बेड, आधुनिक आईसीयू, एनआईसीयू, एक्स-रे, पैथोलॉजी, अल्ट्रासाउंड सहित सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। अनुभवी चिकित्सकों की टीम 24×7 सेवाएँ प्रदान करेगी। उन्होंने कहा कि अस्पताल का लक्ष्य "कम खर्च में श्रेष्ठ इलाज" उपलब्ध कराना है, ताकि आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को महानगरों पर निर्भर न होना पड़े।विधायक डॉ. विमलेश पासवान एवं विधायक प्रदीप शुक्ला ने अस्पताल का निरीक्षण कर उपलब्ध अत्याधुनिक सुविधाओं की सराहना की और इसे क्षेत्र के लिए "जरूरतों के अनुरूप आधुनिक स्वास्थ्य केंद्र" बताया।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से मार्कण्डेय राय, मनोज शुक्ल, हरिश्चंद शुक्ल, अमित पाण्डेय, डॉ. अमित सिंह, अरविंद राय, कुंदन उपाध्याय, डॉ. राधा मोहन श्रीवास्तव, डॉ. आरिशा खान, राजेश सिंह राजन, राजन सिंह सूर्यवंशी, उप-ट्रस्टी विनय श्रीवास्तव, मीडिया प्रभारी महामहिम हिमाचल सतीश त्रिपाठी, सुधीर जायसवाल, कृपा शंकर राय, आरएसएस जिला प्रचारक दीपक जी, शशि कांत दुबे, अंकुर श्रीवास्तव, अंतर्राष्ट्रीय बाल व्यास श्वेतिमा माधव प्रिया, शिवाजी शुक्ल, चंचला शुक्ला, डॉ. सतीश चंद शुक्ल, शिव बिहारी तिवारी, शांतनु पाल, परवेज आलम, संदीप त्रिपाठी, एड. वाय.एस.एन. ओझा, एड. शिव चंद चौरसिया, विश्वभर पाण्डेय, संदीप सिंह, नागेंद्र सिंह, रत्नाकर त्रिपाठी, डॉ. नारायण यादव सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक, सामाजिक कार्यकर्ता, जनप्रतिनिधि, चिकित्सक तथा ग्रामीणजन उपस्थित रहे। क्षेत्र के लिए यह आयोजन स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ीकरण की दिशा में ऐतिहासिक कदम माना जा रहा है।

नायक वो नहीं जो दिखता है, बल्कि वो जो करता है

सिनेमाघरों की चमकती स्क्रीन पर हर हफ़्ते कोई नया नायक जन्म लेता है — कोई तानाशाहों से लड़ता है, कोई दुनिया बचाता है, कोई अन्याय को मिटा देता है। पर जब परदा गिरता है और रोशनी बुझ जाती है, तो ये नायक वहीं ठहर जाते हैं, वहीं मर जाते हैं — फिल्म की कहानी के साथ। असली ज़िंदगी की गलियों, चौकों, और गलियारों में जब भूख, हिंसा और बेबसी नाचती है, तो वहाँ कोई नहीं उतरता। जहाँ इंसानियत की ज़रूरत होती है, वहाँ बस भीड़ होती है — जो देखती सब है, पर करती कुछ नहीं। यही हमारे समय की सबसे बड़ी त्रासदी है — नायक अब पर्दे पर हैं, जबकि उनकी ज़रूरत सड़कों पर है।

हमने नायकत्व को अभिनय, संवाद और ताली की आवाज़ों में बाँध दिया है। साहस अब बॉक्स ऑफिस की कमाई से मापा जाता है, और करुणा अब पॉपकॉर्न के साथ बिकती है। हमने "साहस" को मनोरंजन बना दिया है। पर समाज फिल्मों से नहीं बदलता, वह उन लोगों से बदलता है जो ज़मीन पर उतरकर कुछ करते हैं। किसी गिरे हुए को उठाना, किसी के हक़ में बोलना, किसी की भूख मिटाने की कोशिश करना — यही असली नायकत्व है। और आज के युग में यह सबसे दुर्लभ गुण है — "करुणा के साथ कर्म।"

हर दिन कोई हादसा होता है, कोई बच्चा बिना रोटी के सो जाता है, कोई बुज़ुर्ग अकेलेपन में डूब जाता है, कोई महिला चुपचाप अपमान सहती है — और हम? हम अगले शो के टिकट बुक करते हैं। हमने संवेदना को आउटसोर्स कर दिया है, उन काल्पनिक नायकों को जो सिर्फ परदे पर जीते हैं। हमें लगता है कि कोई आएगा, जैसे फिल्मों में होता है, और सब ठीक कर देगा। पर ज़िन्दगी कोई फिल्म नहीं है, यहाँ कोई "हैप्पी एंडिंग" नहीं होती। जब तक कोई असली इंसान आगे नहीं बढ़ता, तब तक हर अंत अधूरा ही रहता है।

नायक बनना कठिन है, क्योंकि इसमें चमक नहीं, संघर्ष है; इसमें शोहरत नहीं, जिम्मेदारी है; इसमें तालियाँ नहीं, बस थकान है। असली नायक वो नहीं जो खलनायक को हराए, बल्कि वो है जो अपने भीतर के डर, संदेह और उदासीनता से जीत जाए। जो सच बोलने की हिम्मत रखे, भले अकेला ही क्यों न हो। जो भीड़ में खड़ा होकर भी सच्चाई की ओर झुके, वही समाज का सच्चा नायक है।

समाज को आज पर्दे के पीछे नहीं, ज़मीन पर काम करने वाले नायकों की ज़रूरत है। वो शिक्षक जो गांव के बच्चों में सपनों की लौ जलाता है, वो सफाईकर्मी जो बदबू में भी इज़्ज़त से काम करता है, वो डॉक्टर जो छुट्टी के दिन भी मरीज देखता है, वो लड़की जो डर के बावजूद अपनी आवाज़ उठाती है — यही वो लोग हैं जिनसे समाज सांस लेता है। लेकिन अफ़सोस, इनकी कहानी पर कैमरे नहीं घूमते, इनकी मेहनत पर ताली नहीं बजती। ये वो नायक हैं जो बिना दर्शकों के, बिना इनाम के, बस अपने

कर्तव्य से प्रेरित होकर आगे बढ़ते हैं।

आज हमें फिल्मों में नहीं, अपने जीवन में "एक और नायक" चाहिए — जो कह सके "मैं करूंगा," चाहे कोई साथ दे या नहीं। हमें ऐसे युवाओं की ज़रूरत है जो सेल्फ़ी में नहीं, सच्चाई में दिलचस्पी रखें; जो फॉलोअर्स नहीं, बल्कि मिसाल बनने का साहस रखें। समाज तब बदलता है जब कोई व्यक्ति भीड़ से अलग होकर खड़ा होता है और कहता है — "अब बहुत हुआ।" यही वो क्षण होता है जहाँ परिवर्तन की शुरुआत होती है।

इतिहास ने हमेशा उन्हीं नायकों को याद रखा है जिन्होंने पसीने से बदलाव लिखा — भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, सुभाष चंद्र बोस, सी.वी. रमन, कल्पना चावला, बाबा आमटे, सुधा मूर्ति आदि। इनकी कहानियों में कोई फ़िल्मी सीन नहीं था, कोई ताली नहीं बजी थी, लेकिन इनका असर पीढ़ियों तक रहेगा। ये नायक प्रसिद्धि से नहीं, नीयत से पैदा हुए थे। इन्होंने दिखाया कि नायकत्व पद, प्रसिद्धि या परिधान में नहीं, बल्कि दृष्टि, नीयत और कर्म में बसता है।

आज वक्त है खुद से एक सख्त सवाल पूछने का — क्या हम सिर्फ दर्शक बनकर रह जाएंगे? क्या हम सिर्फ परदे पर ताली बजाने तक सीमित रहेंगे, या फिर उन गलियों में उतरेंगे जहाँ किसी की उम्मीद टूटी है? दुनिया को फिल्मों के सुपरहीरो की नहीं, इंसानों के साहस की ज़रूरत है। हमें हर दिन, हर मोड़ पर थोड़ा-थोड़ा नायक बनना होगा — किसी के हक़ में बोलकर, किसी की मदद कर के, किसी का मनोबल बढ़ाकर।

जब हममें से हर कोई अपनी सीमाओं से ऊपर उठकर इंसानियत का हाथ थामेगा, तब समाज का चेहरा सच में बदलेगा। तब कोई हादसा अनदेखा नहीं रहेगा, कोई बेबसी अनसुनी नहीं रहेगी। तब हमें यह कहने में संकोच नहीं होगा — नायक अब पर्दे पर नहीं, सड़कों पर हैं। और वही दिन होगा जब इंसानियत अपनी सबसे बड़ी भूमिका निभाएगी — बिना स्क्रिप्ट, बिना स्पॉटलाइट, पर सच्चाई और साहस के साथ।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

सफदरजंग अस्पताल के पीएमआर विभाग में इस बाल दिवस पर क्षमता, समावेश और आनंद का उत्सव

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्लीः सफदरजंग अस्पताल के भौतिक चिकित्सा एवं पुनर्वास विभाग (पीएमआर) ने बाल दिवस उत्साह खुशी के साथ मनाया दिव्यांग बच्चों के चेहरों पर मुस्कान ला दी। व्यावसायिक चिकित्सा इकाई ने चिकित्सा और समाज कल्याण इकाई के साथ मिलकर कई आकर्षक सामूहिक गतिविधियों का आयोजन किया, जिनमें रंग भरने के सत्र, मनोरंजक खेल और रचनात्मकता, सामाजिक संपर्क और मोटर कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किए गए और चिकित्सीय अभ्यास शामिल थे।

इस कार्यक्रम में लगभग 35 विशेष आवश्यकता वाले बच्चों ने भाग लिया, और प्रत्येक ने उत्साह और ऊर्जा के साथ भाग लिया। इस समारोह का उद्देश्य न केवल बच्चों का मनोरंजन करना था, बल्कि समावेशिता को प्रोत्साहित करना और उनके समग्र विकास और स्वतंत्रता में चिकित्सा की भूमिका को उजागर करना भी था।

इस अवसर पर, सफदरजंग अस्पताल के निदेशक डॉ. संदीप बंसल ने कहा,

"हर बच्चा बचपन के आनंद का अनुभव करने का हकदार है, चाहे उसकी शारीरिक या विकासात्मक चुनौतियाँ कुछ भी हों। आज का यह उत्सव हमें याद दिलाता है कि देखभाल, करुणा और चिकित्सीय सहायता से, विकलांग बच्चे उल्लेखनीय प्रगति कर सकते हैं और एक संपूर्ण जीवन जी सकते हैं।"

चिकित्सा अधीक्षक डॉ. चारु बाम्बा ने पीएमआर टीम के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा,

"इस तरह की पहल समावेशी देखभाल के प्रति अस्पताल की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस तरह के समारोह बच्चों और उनके परिवारों का उत्साह बढ़ाते हैं, साथ ही आत्मविश्वास से भरे और सक्षम युवा जीवन को आकार देने में पुनर्वास सेवाओं के महत्व को भी पुष्ट करते हैं।"

पीएमआर के विभागाध्यक्ष (एचओडी) डॉ. अजय गुप्ता ने भी अपने विचार साझा करते हुए कहा, "पीएमआर विभाग हमेशा से समग्र पुनर्वास के लिए प्रतिबद्ध रहा है। व्यावसायिक चिकित्सा बच्चों को उनकी क्षमताओं को निखारने और रोजमर्रा की जिंदगी में सक्रिय रूप से भाग लेने में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमें अपनी टीम के समर्पण और सभी बच्चों द्वारा दिखाई गई सकारात्मक भावना पर गर्व है।"

कार्यक्रम का समापन उपहारों और जलपान वितरण के साथ हुआ, जिसने बच्चों और कर्मचारियों, दोनों के लिए इस दिन को यादगार बना दिया। सुश्री नीलम वर्मा, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, और उनकी टीम ने समारोह के आयोजन में सहयोग के लिए अस्पताल प्रशासन का आभार व्यक्त किया और विकलांग बच्चों के सशक्तिकरण और समावेशन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

दिल्ली विस्फोट का कानपुर कनेक्शन : कार्डियोलॉजी के डॉक्टर के बाद कानपुर में और भी कइयों की तलाश में जुटी खुफिया

सुनील बाजपेई

कानपुर। दिल्ली के लाल किला के पास हुए विस्फोट मामले में कानपुर कनेक्शन को लेकर खुफिया एजेंसियों की यहां गहन छानबीन लगातार जारी है। इस बीच डॉ. शाहीन के साथ संपर्क में रहे कार्डियोलॉजी के डॉ.आरिफ को दिल्ली ले जाने के बाद सुरक्षा एजेंसियां और भी संदिग्धों की तलाश में लगातार जुटी हुई हैं। यहां कार्डियोलॉजी से गिरफ्तार किए गए डॉक्टर आरिफ मूलरूप से कश्मीर के निवासी हैं। टीम डॉ. आरिफ का लैपटॉप, मोबाइल और अन्य दस्तावेज भी साथ ले गई है। एटीएस और अन्य खुफिया एजेंसी ने बीते गुरुवार की सुबह एक बार फिर से दबिश दी थी। उन्होंने मेडिकल कॉलेज से जुड़े एक वरिष्ठ डॉक्टर, एक जूनियर रेजिडेंट और निजी प्राइवेट प्रैक्टिस कर

रहे डॉक्टर को उठा लिया था। इस बारे में सुरक्षा एजेंसियां डॉ. शाहीन के संपर्क में रहे तीन डॉक्टरों को हिरासत में लेकर पांच घंटे पूछताछ कर चुकी हैं।

मिली जानकारी एक मुताबिक तीनों डॉक्टरों के डॉ. शाहीन के साथ बातचीत करने और उसके टेलीग्राम पोस्ट में प्रतिक्रियाएं देने की जानकारी हुई है।

इस बीच सुरक्षा एजेंसियों को जो जानकारी मिली है उसके मुताबिक टेलीग्राम के पोस्ट पर शहर के टेनरी संचालक का बेटा भी लगातार जवाब देता रहा है। इसीलिए उसकी भी तलाश जारी है।

याद रहे कि फरीदाबाद में 2,900 किलो विस्फोटक मिलने और दिल्ली में हुए धमाके में डॉ. शाहीन, डॉ. मुजम्मिल शकील और डॉ. आदिल का नाम आने से एटीएस, एलआईयू और आईबी देश में छिपे स्लीपिंग मॉड्यूल खंगालने में जुटी हैं। उनसे जुड़े शहरों में छापेमारी की जा रही है।

जांच एजेंसियों के कानपुर के साथ कन्नौज, फतेहपुर, लखनऊ में डॉ. शाहीन, डॉ. मुजम्मिल शकील और डॉ. आदिल से कई लोगों के संपर्क में आने की आशंका है। लखनऊ एटीएस की एक टीम कन्नौज का कनेक्शन खंगालने में जुट गई है। फोटो के मुताबिक जिसके फल स्वरूप कुछ और आतंकी चेहरों के बेनकाब होने की उम्मीद है।

सराहनीय पहल : अपनी नेक कमाई से 80+45 विद्यार्थियों को बांटे स्वेटर और 45 विद्यार्थियों को वितरित किए जूते

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर : जिला मुख्यालय के अंतिम छोर पर बसे वीरों की देवभूमि कहे जाने वाले गांव धारौली की सामाजिक संस्था मां-मातृभूमि सेवा समिति द्वारा वस्त्र समर्पण सेवा कार्यक्रम में जिला झज्जर के लड़ायन गांव के पीएम श्री गवर्नमेंट मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल के 80+45 विद्यार्थियों को निःशुल्क बांटे स्वेटर और 45 विद्यार्थियों को जूते वितरित किए गए जिसे पाकर विद्यार्थियों के चेहरे खुशी से खिल उठे ।

उपरोक्त वस्त्र समर्पण सेवा कार्यक्रम में लड़ायन के पीएम श्री गवर्नमेंट मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल के स्टाफ ने अपनी नेक कमाई से 45 जोड़ी जूते और 45 स्वेटर उपहार स्वरूप भेंट की गई जो एक प्रेरणादायक पहल थी I

वस्त्र समर्पण सेवा कार्यक्रम में डॉ. जगविंद्र जाखड़ (सेवानिवृत) वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, हरियाणा सरकार ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। मुख्य अतिथि ने बच्चों को अच्छे संस्कार, अनुशासन और मेहनत व लगन से पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया।

समाजसेवी एवं शिक्षाविद् सुखबीर जाखड़, चेयरमैन, रिलायंस ग्रुप ऑफ स्कूल्स ने विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुए ।

माननीय अरविंद कुमार दहिया, प्रिंसिपल, पीएम श्री गवर्नमेंट मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की ।

वस्त्र समर्पण सेवा कार्यक्रम के आयोजन के मुख्य सूत्रधार मास्टर सतीश यादव भाकली व श्री दिलवाग जाखड ने अहम भूमिका निभाई ।

22वी बार रक्तदान कर चुके युद्धवीर सिंह लांबा, अध्यक्ष, मां-मातृभूमि सेवा समिति, वीरों की देवभूमि धारौली ने बताया कि 1.समाजसेवी व शिक्षाविद् सुखबीर जाखड़, चेयरमैन, रिलायंस ग्रुप ऑफ स्कूल्स 2.शिक्षा के साथ साथ सामाजिक सरोकार का दायित्व भी बखुबी से निभा रहे मास्टर हरबीर मल्हान गिरिधरपुर, जिला झज्जर 3.भाकली गांव के समाजसेवी सुधीर कुमार, प्रो. कोमल इलेक्ट्रिक स्टोर, भाकली 4.शिक्षा व समाजसेवा के लिए सदैव अग्रिम पंक्ति में खड़े रहने वाले सकारात्मक सोच के मास्टर सतीश यादव भाकली 5.समाजसेवी रणसिंह, यदुवंशी तेल टैंकर, भाकली गाँव 6.मास्टर इंद्रजीत सिंह, भूरावास गांव, जिला झज्जर 7.समाजसेवा और शिक्षा को समर्पित मास्टर पवन कुमार, गांव धनीरवास जिला झज्जर 8.कोसली रेलवे स्टेशन से नाहड रोड पर 'सोनू मोटर वाइंडिंग सेंटर' प्रो. सोनू कुमार धारौली निवासी 9.पर्यावरण को समर्पित समाजसेवी मंजीत सिंह, प्रो.श्रीहंस बैग व स्टेशनरी हाउस, कोसली 10.रक्तदानी मास्टर रोहित यादव, प्रो.लेवी डिस्पोसल हाउस, कोसली 11. मास्टर कुलवेन्द्र सिंह यादव, गांव मुमताजपुर, जिला रेवाड़ी 12.समाजसेवी व रक्तदानी नितेश भौरिया प्रो. अर्बन युवा रेडीमेड स्टोर, कोसली 13.मास्टर प्रमिंदर सिंह, तुम्बाहेड़ी गांव, जिला झज्जर के साथ साथ दो गुप्त दानियों ने अपनी ईमानदारी व मेहनत से कमाया नेक धन से वस्त्र समर्पण सेवा कार्यक्रम के आयोजन मे सहयोग देकर पुण्य कमाया ।

अंत में स्कूल प्रिंसिपल ने कार्यक्रम में आए अतिथियों का आभार व्यक्त किया और बच्चों के लिए इस प्रकार के सहयोगात्मक कार्य के मां-मातृभूमि सेवा समिति, वीरों की देवभूमि धारौली की सराहना की। झज्जर हसला प्रधान श्री कुलदीप नेहरा जी ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

कर्मचारियों की समस्याओं और लम्बित मॉंगो की अनदेखी के कारण कर्मचारी संगठनों द्वारा नगर निगम में आन्दोलन की तैयारी : हरी बाबू वाल्मीकि

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा। उत्तर प्रदेश सफाई कर्मचारी यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष हरीबाबू वाल्मीकि ने बताया कि काफी समय से नगर निगम के स्थायी, संविदा, ठेका व एम एण्ड टी वर्कशॉप के कर्मचारियों की समस्याओं की लम्बित मॉंगो की अनदेखी कर रहे नगर निगम के अधिकारियों के खिलाफ नगर निगम के कर्मचारी संगठनों के नेताओं ने मोर्चा खोलने की तैयारी कर ली है।

आन्दोलन शुरू किये जाने से पहले उत्तर प्रदेश स्थानीय निकाय कर्मचारी महासंघ उत्तर प्रदेश सफाई कामगार संघ, उत्तर प्रदेश सफाई कर्मचारी यूनियन, उत्तर प्रदेशीय सफाई कर्मचारी संघ व उत्तर प्रदेश राज्य स्थानीय सफाई मजदूर संघ के नेताओं ने संयुक्त रुप से नगर निगम कर्मचारी समन्वय समिति का गठन किया है। जिसमें विनोद इलाहाबादी, श्याम कुमार करुणेश, सुन्दर

बाबू चंचल, हरीबाबू वाल्मीकि, सन्तोष डागौर, भुल्ले नरवार, मोहन गुलज़ार, दिलीप खरे, राजकुमार विधार्थी, सम्राट चौधरी, दीपक झंगारे, आदि प्रतिनिधि शामिल हैं। इस सम्बन्ध में नगर निगम कर्मचारी समन्वय समिति ने नगर आयुक्त अंकित खण्डेलवाल को एक ज्ञापन देकर सभी श्रेणी के नगर निगम कर्मचारियों की समस्याएं हल किये जाने की मांग की है। ज्ञापन में मृतक कर्मचारी के परिवार के किसी एक सदस्य को अधिकतम तीन माह में मृतक आश्रित नियुक्ति दिलवाये जाने, 19 वर्षों से अनवरत सेवा कर रहे संविदा सफाई कर्मचारियों को स्थायी किये जाने, ठेका सफाई कर्मचारियों को रविवार का सवेतन अवकाश दिये जाने, एम एण्ड टी वर्कशॉप के ठेका चालकों को कुशल श्रेणी के कर्मचारियों का वेतन दिये जाने आदि मांगों का उल्लेख करते हुए 15 दिन में माँगों का समाधान न होने पर आन्दोलन किये जाने की चेतावनी दी गयी है।

बिहार का निर्णायक जनादेश- नीतीश कुमार की वापसी, एनडीए की प्रचंड जीत और भारतीय राजनीति के बदलते संकेत

बिहार में अभूतपूर्व विजय-15 वर्षों में बना कोई भी रिकॉर्ड इस चुनाव की भव्यता और जनसमर्थन की ऊंचाई से मेल नहीं खाता

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत के सबसे राजनीतिक रूप से सक्रिय और संवेदनशील राज्यों में से एक बिहार ने एक बार फिर ऐसा जनादेश दिया है, जिसने न केवल राज्य की राजनीति में भारी हलचल पैदा की है, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर सत्ता-संतुलन और राजनीतिक संकेतों को भी गहराई से प्रभावित किया है। 2025 के इस चुनावी परिणाम ने साफ़ कर दिया है कि पटना का राजनीतिक किला एक बार फिर बिहार के अनुभवी और लंबे समय तक शासन करने वाले नेता नीतीश कुमार के हाथों में जाता दिख रहा है। एनडीए गठबंधन ने न केवल यह चुनाव जीतने की दिशा में ऐतिहासिक बढ़त हासिल की है, बल्कि पिछले 15 वर्षों में बना कोई भी रिकॉर्ड इस चुनाव की भव्यता और जनसमर्थन की ऊंचाई से मेल नहीं खाता। मैं एडवोकेट किशन सनमुदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि बिहार में एनडीए की प्रचंड वापसी राजनीतिक इतिहास में नया अध्याय जुड़ रहा है, चुनावी आंकड़ों और राजनीतिक विश्लेषण के आधार पर यह लगभग तय माना जा रहा है कि सत्तारूढ़ एनडीए एक बार फिर सरकार बनाने की स्थिति में है। नीतीश कुमार, जो बिहार की राजनीति में एक स्थिरता का प्रतीक माने जाते हैं, राज्य के राजनीतिक किले पर दोबारा कब्जे की ओर तेजी से बढ़ते दिखाई दे रहे हैं। इस चुनाव में न केवल जदयू-बीजेपी गठबंधन ने अपने पारंपरिक मतदाताओं को मजबूत तरीके से साधा, बल्कि एनडीए ने उन इलाकों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, जहां पिछले वर्षों में विपक्ष को बढ़त मिली थी ।चुनाव परिणामों की गहराई से समीक्षा करने पर यह स्पष्ट होता है कि एनडीए की इस बार की बढ़त किसी सामान्य चुनावी लहर का परिणाम नहीं है, बल्कि यह कई बहुआयामी सामाजिक- राजनीतिक रणनीतियों, योजनाओं और शासन के मॉडल का संयुक्त प्रभाव है। बिहार के मतदाता इस वक्त केवल राजनीतिक दलों के आधार पर वोट नहीं कर रहे, बल्कि वे उन सरकारों को चुन रहे हैं जिनके पास व्यवस्थापकीय क्षमता, विकास का ट्रैक रिकॉर्ड और भविष्य का स्पष्ट रूप से सटीक दृष्टिकोण भी दिखाई देता है।

साथियों बात अगर हम प्रदर्शन जिसने रिकॉर्ड तोड़ दिए है एनडीए की 200 सीटों से अधिक की ओर बढ़त है, इस चुनाव का सबसे उल्लेखनीय पहलू यह रहा कि जेडीयू- बीजेपी गठबंधन लगभग 200 सीटों के आंकड़े से अधिक की ओर पहुंच रहा है, जो पिछले 15 वर्षों के किसी भी चुनावी प्रदर्शन से अधिक है। यह केवल एक चुनावी जीत नहीं है, यह एक सामाजिक संदेश है कि बिहार के लोगों ने स्थिरता, अनुभव और नीति-प्रधान शासन के मॉडल को प्राथमिकता दी है ।एनडीए की इस जीत के पीछे दो कारक सबसे प्रमुख रहे, पहला, जमीनी स्तर पर योजनाओं की प्रभावी पहुंच, और दूसरा, विपक्ष का कमजोर संगठन और बिखराव। भारत के अन्य राज्यों की तरह, बिहार में भी अब चुनाव केवल जातीय समीकरणों पर नहीं, बल्कि योजनाओं की डिलीवरी, महिलाओं की सुरक्षा, युवाओं के रोजगार और सामाजिक कल्याण जैसे कारकों पर लड़ने लगे हैं। यह बदलाव भारतीय लोकतंत्र के परिपक्व होने का संकेत है।

साथियों बात कर हम बिहार से बंगाल तक बीजेपी की राष्ट्रीय विस्तार रणनीति को समझने की करें तो, एनडीए की इस अभूतपूर्व सफलता के बाद भाजपा की राष्ट्रीय राजनीति में एक नई ऊर्जा दिखाई दे रही है। पार्टी की ओर से स्पष्ट रूप से कहा गया है कि ₹बिहार तो एक झांकी है, बंगाल बाकी है₹ यह बयान केवल एक राजनीतिक नारा नहीं, बल्कि भारतीय राजनीति की एक गहरी रणनीतिक दिशा को दर्शाता है। इस समय भारतीय जनता पार्टी लगातार उन राज्यों की ओर बढ़ रही है, जहां अभी तक क्षेत्रीय दलों या वाम-समाजवादी गठबंधनों का प्रभुत्व रहा है ।पश्चिम बंगाल में बीजेपी लंबे समय से संघर्ष कर रही है और अब बिहार की जीत ने भाजपा को यह विश्वास दिलाया है कि उनकी नीतियों और राजनीतिक रणनीतियों को पूर्वी भारत में भी नई ताकत मिल रही है। बंगाल का राजनीतिक और भू- रणनीतिक महत्व अत्यंत बड़ा है, वहां सत्ता परिवर्तन भारतीय राजनीति के संतुलन को और भी बदल सकता है ।इसलिए, बिहार की सफलता भाजपा के लिए बंगाल अभियान की नींव साबित होती दिख रही है।

साथियों बात अगर हम ऐतिहासिक मतदान, बिहार के लोकतंत्र की परिपक्वता का उत्सव को समझने की करें तो, इस चुनाव की सबसे प्रभावशाली विशेषता रही राज्य में हुआ ऐतिहासिक मतदान, जिसने बिहार को देश के उन सबसे राजनीतिक रूप से सक्रिय राज्यों की श्रेणी में ला खड़ा किया, जहां लोकतांत्रिक भागीदारी लगातार बढ़ रही है। दूसरे चरण में 68.79 प्रतिशत और पहले चरण में 65.08 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। दो चरणों को मिलाकर 66.90 प्रतिशत का कुल मतदान, जो पिछले चुनाव की तुलना में 9.6 प्रतिशत अधिक है। यह केवल प्रतिशत नहीं, एक परिवर्तनशील लोकतांत्रिकमानसिकता का संकेत है। भारत में आमतौर पर यह माना जाता है कि अधिक मतदान अक्सर सत्ता-विरोधी लहर को दर्शाता है, लेकिन बिहार ने इस धारणा को उलट दिया। यहां अधिक मतदान ने सत्तारूढ़ गठबंधन के पक्ष में परिणाम दिए, यह इस बात का प्रमाण है कि मतदाता सरकार के काम से संतुष्ट थे और उसे दोबारा मौका देना चाहते थे।

साथियों बात अगर हममहिलाओं का निर्णायक योगदान नीतीश मॉडल पर भरोसे की मुहर लगनें को समझने की करें तो, एनडीए की इस जीत के केंद्र में यदि कोई शक्ति है, तो वह है बिहार की महिलाएं। महिलाओं ने रिकॉर्ड 71.78 प्रतिशत मतदान करके न केवल चुनाव के गणित को प्रभावित किया, बल्कि यह स्पष्ट संदेश भी दिया कि वे उस सरकार के साथ हैं जिसने उनके जीवन को सीधा प्रभावित किया है ।नीतीश कुमार की सरकार महिलाओं की सुरक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक भागीदारी को केंद्र में रखकर लगातार योजनाएँ लागू करती रही है। इनमें विशेष रूप से तीन योजनाओं ने महिला वोट बैंक को एनडीए के पीछे खड़ा कर दिया:(1)10,000 रुपये की सीधी वित्तीय सहायता योजना- वित्तीय स्वतंत्रता महिलाओं के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन है। राज्य की इस योजना ने लाखों महिलाओं को सीधा आर्थिक समर्थन दिया, जिसका प्रभाव परिवारों के स्तर से लेकर सामाजिक स्तर तक देखा गया।(2) लखपति दीदी योजना -यह मॉडल महिलाओं को स्वरोजगार, आत्मनिर्भरता और उद्यमशीलता से जोड़ता है। जो महिलाएं पारंपरिक रूप से घर तक सीमित थीं, वे अब कमाई के केंद्र में आ चुकी हैं। (3) जीविका मॉडल-बिहार का जीविका कार्यक्रम देशभर में महिला सशक्तिकरण का एक सफल प्रयोग माना जा रहा है। यह महिलाओं को सेल्फ-हेल्प ग्रुप के माध्यम से सटीक आर्थिक और सामाजिक शक्ति प्रदान करता है।

इस बार के चुनाव में महिलाओं ने निर्णायक भूमिका निभाते हुए एनडीए को वह समर्थन दिया, जिसने चुनाव के समीकरण पूरी तरह बदल दिए। भारत के राजनीतिक इतिहास में यह पहली बार है कि महिलाएं किसी चुनावी गठबंधन की सबसे मजबूत राजनीतिक रीढ़ साबित हुई हैं।

साथियों बात अगर हम क्या विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया ने चुनाव परिणामों को प्रभावित किया? इसको समझने की करें तो, बिहार में चलाए गए विशेष गहन पुनरीक्षण (स्पेशल इंटेंसिव रिवीज़न) कार्यक्रम ने मतदाता सूची को अद्यतन और सटीक बनाने में बड़ी भूमिका निभाई। इस प्रक्रिया के तहत लाखों नए मतदाता सूची में जुड़े, और मृतक या स्थानांतरित मतदाताओं को हटाया गया। एसआईआर का सबसे बड़ा प्रभाव यह रहा कि पहली बार वोट करने वाले युवा और स्थानांतरित ग्रामीण महिलाएं भारी संख्या में सूची में शामिल हुईं, जिनमें से बड़ा हिस्सा एनडीए के समर्थन में रहा। हालांकि कुछ विश्लेषकों का दावा है कि एसआईआर प्रक्रिया का व्यापक लाभ विपक्षी इंडिया गठबंधन को मिल सकता था, लेकिन जमीनी हकीकत यह साबित करती है कि जिन वर्गों को सूची में नए रूप से जोड़ा गया, उन पर एनडीए के कल्याणकारी कार्यक्रमों का प्रभाव अधिक था। इसलिए एसआईआर ने मतदाता सूची को सुव्यवस्थित करने के साथ-साथ मतदान के पैटर्न को भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया।

साथियों बात अगर हम बिहार का जनादेश, भारत केराजनीतिक भविष्य का संकेत को समझने की करें तो, इस चुनाव का परिणाम सिर्फ एक राज्य की राजनीति का निर्णय नहीं, बल्कि भारतीय राजनीति के भविष्य की दिशा भी तय करता है। बिहार का यह जनादेश चार मुख्य संकेत देता है-(1)कल्याणकारी राजनीति अभी भी प्रभावी है, जनता उस सरकार को चुनती है जो जमीनी स्तर पर योजनाएं पहुंचाती है।(2)महिलाएं भारतीय राजनीति की नई निर्णायक शक्ति बन चुकी हैं, आगे के सभी चुनावों में महिला मतदाता सबसे प्रभावी कारक होंगे।(3)पूर्वी भारत में बीजेपी का विस्तार जारी है, बिहार के बाद बंगाल अगले राजनीतिक संघर्ष का आधार बनेगा।(4) लोकतंत्र की परिपक्वता बढ़ रही है, इतिहास का सर्वोच्च मतदान यह दर्शाता है कि लोग लोकतंत्र में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे कि बिहार, भारत के बदलते लोकतांत्रिक परिदृश्य का आईना बना, बिहार ने एक बार फिर सिद्ध किया कि वह भारतीय राजनीति का ध्रुवतारा है। यहाँ का राजनीतिक वातावरण न केवल राज्यों की बल्कि राष्ट्रीय राजनीति की दिशा तय करता है। नीतीश कुमार की संभावित वापसी, एनडीए की प्रचंड सफलता, महिलाओं का ऐतिहासिक मतदान, बढ़ता लोकतांत्रिक उत्साह और एसआईआर प्रक्रिया का प्रभाव, ये सभी मिलकर इस चुनाव को भारत के राजनीतिक इतिहास में एक विशेष स्थान देते हैं ।इस चुनाव ने सिर्फ सरकार नहीं चुनी, इसने भारत के लोकतांत्रिक और राजनीतिक भविष्य की रूपरेखा भी तैयार कर दी है। बिहार का यह जनादेश भारत की राजनीति के लिए एक निर्णायक संदेश है, विकास, स्थिरता, महिला सशक्तिकरण और सुशासन ही आने वाले दशक की वास्तविक राजनीति होगी।

बीज मसौदा विधेयक,2025 -11 दिसंबर,2025 तक सुझाव आमंत्रित- भारतीय कृषि के भविष्य को पुनर्परिभाषित करने वाला ऐतिहासिक कदम

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारत एक कृषि प्रधान देश है,जहाँ कृषि न केवल आजीविका का साधन है, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन की आधारशिला भी है। इस विशाल कृषि व्यवस्था की आत्मा "बीज" है, क्योंकि बीज ही वह पहला तत्व है जिससे उत्पादन, नवाचार और खाद्य सुरक्षा की पूरी श्रृंखला आरंभ होती है। इसी बीज क्षेत्र में सुधार और पारदर्शिता लाने की दिशा में सरकार ने वर्ष 2025 में बीज मसौदा विधेयक, 2025 का प्रस्ताव तैयार किया है और इस पर 11 दिसंबर, 2025 तक नागरिकों, किसानों, वैज्ञानिकों, बीज उत्पादकों और अन्य हितधारकों से सुझाव आमंत्रित किए हैं। यह मसौदा विधेयक न केवल कृषि सुधारों के अगले चरण का संकेत है, बल्कि यह देश में क्वालिटी सीड गवर्नेंस का एक नया ढांचा भी प्रस्तुत करता है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क्ंभारत ने वर्ष 2025 में बीज मसौदा विधेयक, 2025 का प्रारूप जारी कर एक ऐसा विधायी प्रयास शुरू किया है, जो न केवल देश के कृषि तंत्र को आधुनिकता, पारदर्शिता और गुणवत्ता के उच्चतम मानकों से जोड़ता है, बल्कि बीजों की सुरक्षा, किसानों के अधिकारों और कृषि-व्यवसाय के नैतिक ढाँचे को भी नई दिशा प्रदान करता है। यह विधेयक 1966 के बीज अधिनियम और 1983 के बीज नियंत्रण आदेश का स्थान लेने जा रहा है, जो कि आज की तकनीक- संचालित कृषि आवश्यकताओं के सामने अपर्याप्त हो चुके हैं। बदलते जलवायु-परिस्थितियों, बीजों में जैव- प्रौद्योगिकी के बढ़ते हस्तक्षेप और वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धा के दबाव ने इस नए विधेयक की आवश्यकता को और अधिक सशक्त बनाया है। यह प्रस्ताव इस बात का प्रमाण है कि भारत कृषि क्षेत्र को विश्वस्तरीय बनाने और किसान-हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

साथियों बात अगर हम आज भारत वैश्विक बीज बाजार में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बन चुका है,व अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य इसको समझने की करें तो, देश के बीज निर्यात का मूल्य अरबों डॉलर तक पहुँच चुका है, और निजी क्षेत्र,विशेष रूप से बहुराष्ट्रीय बीज कंपनियाँ, इस उद्योग में बड़ी भूमिका निभा रही हैं। बीज मसौदा विधेयक, 2025 व्यापार सुगमता (ईज़ ऑफ़ डूइंग बिज़नेस) के सिद्धांत पर आधारित है।यह बीज पंजीकरण लाइसेंसिंग,परीक्षण और वितरण की प्रक्रियाओं को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाने की बात करता है। इससे छोटे उद्यमियों, स्टार्टअप्स और स्थानीय बीज उत्पादकों को भी समान अवसर मिलेगा।इसके साथ ही, यह विधेयक अवैध बीज बिक्री, फर्जी ब्रांडिंग और अनधिकृत जेनेटिक वैरायटी जैसे अपराधों के लिए कठोर दंड का प्रावधान भी करता है,जिससे बीज उद्योग में पारदर्शिता और उपभोक्ता विश्वास दोनों को बल मिलेगा।अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य-वैश्विक मानकों के अनुरूप भारतीय ढांचा,विश्व स्तर पर बीज व्यापार और नियमन यूपीओवी (इंटरनेशनल यूनियन फॉर द प्रोटेक्शन ऑफ़ न्यू वैरायटीज ऑफ़ प्लांट्स) आईएसटीए (इंटरनेशनल सीड टेस्टिंग एसोसिएशन) और ओईसीडी (ओईसीडी सीड स्कीमस) जैसे अंतरराष्ट्रीय मानकों के तहत चलता है। भारत का नया बीज मसौदा विधेयक इन अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप नीति ढांचा तैयार करने का प्रयास करता है ताकि भारतीय बीज उद्योग को ग्लोबल ट्रेड नेटवर्क में और गहराई से एकीकृत किया जा सके। इससे भारत न केवल घरेलू आवश्यकताओं को पूरा कर सकेगा, बल्कि अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के उभरते कृषि बाजारों में बीज आपूर्ति का एक स्थिर और विश्वसनीय स्रोत भी बन सकता है।

साथियों बात अगर हम,किसानों के अधिकारों की रक्षा को समझने की करें तो,केंद्र में किसान, केवल उपभोक्ता नहीं-भारत की कृषि नीति में लंबे समय तक किसान को केवल "उपभोक्ता" के रूप में देखा गया,जिसे बीज खरीदना होता है। लेकिन बीज मसौदा विधेयक, 2025 इस धारणा को बदलता है। यह किसान को हितधारक के रूप में मान्यता देता है, जिसके अधिकार, ज्ञान और सहभागिता को कानूनी ढांचे में स्थान दिया गया है।विधेयक में यह सुनिश्चित करने की दिशा में प्रावधान हैं कि यदि किसान को किसी बीज से अपेक्षित परिणाम नहीं मिलता है, तो वह बीज आपूर्तिकर्ता या निर्माता के खिलाफ कंपनसेशन क्लेम कर सकता है। यह प्रावधान कंज्यूमर प्रोटेक्शन के सिद्धांत को कृषि क्षेत्र में लागू करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है।साथ ही, मसौदा किसानों को पारंपरिक बीज बचाने, पुनः प्रयोग करने और आदान-प्रदान करने के अधिकार से वंचित नहीं करता, यह भारत के विविध कृषि पारिस्थितिकी और स्वदेशी बीज संरक्षण परंपरा की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।बीज गुणवत्ता नियंत्रण,विज्ञान और जवाबदेही का संगम-बीज मसौदा विधेयक 2025 में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सभी बीज उत्पादक, वितरक और विक्रेता को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त प्रमाणन एजेंसी से अनुमोदन प्राप्त करना आवश्यक होगा। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बाजार में बिकने वाले बीज स्टैंडर्डाइज्ड हों और उनमें फसल की न्यूनतम अंकुरण दर तथा शुद्धता का स्तर निर्धारित सीमा से कम न हो।इस विधेयक के अंतर्गत नेशनल सीड अथॉरिटी तथा स्टेट सीड सर्टिफिकेशन बोर्ड्स की भूमिका को और मजबूत बनाया गया है। वे न केवल बीज परीक्षण, पंजीकरण और प्रमाणन की जिम्मेदारी निभाएंगे, बल्कि बीज उत्पादकों की जवाबदेही तय करने के लिए एक शिकायत निवारण तंत्र भी तैयार करेंगे।

साथियों बात अगर हम बीज नियमन को आधुनिक बनाने की आवश्यकता को समझने की करें तो, 1966 का बीज अधिनियम उस समय बनाया गया था जब भारत खाद्यान्न संकट से जूझ रहा था और हरित क्रांति की शुरुआत ही हुई थी। उस दौर की कृषि तकनीक न तो आज की तरह उन्नत थी, न ही निजी बीज कंपनियों की व्यापकता इतनी बड़ी थी। लेकिन 2025 में पहुंचते- पहुंचते परिस्थितियाँ बिल्कुल बदल चुकी हैं, देश में 300 से अधिक पंजीकृत बीज कंपनियाँ हैं, जैव-संशोधित किस्मों, हाईब्रिड वैरायटी, ड्रोन-आधारित बीज परीक्षण, और स्मार्ट फसल निगरानी जैसी तकनीकें मुख्यधारा में शामिल हो चुकी हैं। पुराना कानून गुणवत्ता परीक्षण, मानकीकरण, पारदर्शिता किसानों के अधिकारों और विपणन नियंत्रण के आधुनिक मानदंडों को पूरा नहीं कर पा रहा था।इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सरकार ने बीज मसौदा विधेयक, 2025 को तैयार किया है, जो बीज नियमन को समय-सापेक्ष, वैज्ञानिक और अंतरराष्ट्रीय दिशानिर्देशों के अनुरूप बनाता है। यह विधेयक अंतरराष्ट्रीय बीज परीक्षण संघ, ओईसीडी सीड्स स्टैंडर्ड्स और एफएओ के वैश्विक कृषि सुरक्षा मानकों से भी सामंजस्य स्थापित करता है।

साथियों बात अगर हम बीज मसौदा विधेयक, 2025 के मुख्य उद्देश्यों व किसानों के लिए विशेष प्रावधानों को समझने की करें तो, इस विधेयक के उद्देश्य बहुआयामी हैं, जिनमें उपभोक्ता सुरक्षा, किसान संरक्षण, वैज्ञानिक गुणवत्ता नियंत्रण, कृषि अनुसंधान को बढ़ावा और कृषि बाज़ार में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा शामिल है। प्रमुख उद्देश्यों में, (1) किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध कराना (2) बीज बाजार में नकली, मिलावटी और निम्न-स्तरीय बीजों पर नियंत्रण (3) किसानों के अधिकारों और उनके मुआवज़े की गारंटी (4) बीज उत्पादकों, वितरकों और कंपनियों का अनिवार्य पंजीकरण (5) अनुसंधान व नवाचार को प्रोत्साहन (6) बीजों में जैव- सुरक्षा और जैव-विविधता की रक्षा, इन सभी उद्देश्यों का मूल यह है कि भारत की कृषि प्रणाली को भविष्य-उन्मुख और जोखिम-रहित बनाया जा सके, जिससे किसानों की आय और उत्पादन दोनों में स्थिरता आए।किसानों के लिए विशेष प्रावधान -संरक्षण, अधिकार और मुआवज़ा इस विधेयक का सबसे महत्वपूर्ण और प्रगतिशील पहलू किसानों के अधिकारों को मजबूत बनाना है। कृषि क्षेत्र में वर्षों से यह शिकायत थी कि बीज कंपनियों के दावे के मुताबिक उत्पादन नहीं मिलने पर किसानों को कोई मुआवज़ा नहीं मिलता।बीज मसौदा विधेयक 2025 में- (1) यदि बीज की गुणवत्ता में कमी पाई जाती है, (2) यदि बीज परीक्षण के मानक पूरे नहीं होते, (3) या यदि कंपनी द्वारा विज्ञापित उत्पादन प्राप्त नहीं होता, तो किसान मुआवज़ा पाने का पात्र होगा। इसके लिए जिला स्तर पर बीज मुआवज़ा समिति स्थापित करने का प्रावधान किया गया है।साथ ही किसानों को अपना बीज बचाने, उपयोग करने, अदल-बदल करने और बेचने का पूरा अधिकार होगा, बशर्ते वे ब्रांडिंग या पैकेजिंग के साथ कारोबार न करें। यह प्रावधान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किसानों के अधिकारों की रक्षा करने वाले एफएओ के किसान अधिकार चार्टर और भारत के अपने पीपीवीएफआर एक्ट के अनुरूप है।बीज मसौदा विधेयक 2025 की चुनौतियाँ- हालाँकि विधेयक प्रगतिशील है, लेकिन इसके कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियाँ होंगी, छोटे किसानों में जागरूकता की कमी, ग्रामीण क्षेत्रों में परीक्षण लैब की कमी, पंजीकरण प्रक्रिया का भार छोटे बीज उत्पादकों पर पड़ना, व्यावहारिक रूप से मुआवज़े की प्रक्रिया को सरल बनाना, फिर भी सरकार डिजिटल प्लेटफॉर्म, कृषि विस्तार सेवाओं और राज्य सरकारों के तालमेल से इन चुनौतियों को हल करने का प्रयास कर रही है।

आया चुनाव का मौसम !

कस्तूरी दिनेश

मौसम बदलने के पहले पूर्वाभास होने लगता है ! बारिश का मौसम आने वाला हो तो आकाश में काले-काले बादल उमड़ने-घुमड़ने लगते हैं ।ठंडी बयार बहने लगती है । बिजली रानी भी बादलों के मंच पर यत्र-तत्र भांगड़ा करने लग जाती है ! मोर पंख फैलाए नाच-नाचकर मोरनी को रिझाने लगते हैं ! बसंत का मौसम हो तो कामदेव फूलों की सेना और कोयल की कूक लेकर धमक जाते हैं ! शीत तरह-तरह के खट्टे-मीठे फलों के साथ रंगीन स्वेटर, कार्डिगन और शाल लेकर लुभाने आता है तो ग्रीष्म हवा के गर्म-गर्म झकोरे के साथ मीठे-मीठे आमों का टोकरा लेकर दरवाजे की घंटी बजाता है ! सभी मौसम अपने-अपने ढंग से लुभाने-ललचाने में भिड़े रहते हैं !

आजकल प्रकृति में एक नये निराले मौसम की इंट्री हो गई है चुनाव का मौसम ! इस मौसम के आते ही साल भर दिखाई न देने वाले नेतानामी बड़े-छोटे, आड़े-तिरछे, जहरीले जीव, मोहल्लों और घरों के आसपास बरसाती मेंढक की तरह फुदकते दिखाई पड़ते हैं !कोई आपको बेबात देखकर दांत निपोरे, दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करे, चरणों पर दण्डवत लोट जाए, बिना मतलब आपका हालचाल पूछे तो समझ लीजिये चुनाव का मौसम आ गया है !

कल भैया जी मिल गये । हमारे क्षेत्र के पूर्व विधायक रह चुके हैं ! पिछली बार जब वे चुनाव

में खड़े हुए थे तो आश्वासनों और वादों की किस्म-किस्म की मिठाइयों के ढेर सारे डब्बों से उन्होंने मेरी झोली लबालब भर दी थी ! मेरे प्रति उनके-श्रद्धा भाव से मैं गदगद था ! उनके चुनाव जीतने के बाद मैं याचक सुदामा, अपने मंझले लड़के की नौकरी के लिए जब अपने कृष्ण -कन्हैया विधायक के बंगले पहुंचा तो उनके ए.के.४७ से सुसज्जित गोप बॉडी-गार्ड ने मुझे मेनगेट के बाहर से ही कटखने श्वान की तरह दुत्कारकर भगा दिया ! आज वही भैया जी फिर मेरे चरणों में दंडवत पड़े हैं ! मैं मास्टर आदमी, तत्काल समझ गया कि चुनाव का मौसम आ गया !

इस मौसम में चारो तरफ से वादों और आश्वासनों की गरज-बरस के साथ अनचाहे बरसात होती है । घर में हो, घर के बाहर हों आपका आकंठ भीगना तय है, भले ही आप अनिच्छा के कितने ही छाते-बरसाती क्यों न ओढ़े हुए हों ! शास्त्र-पुरानों में आकाशीय वर्षा के देवता इंद्र को माना जाता है परन्तु धरती पर अपने महान जिह्वा से वादों की बारिश करवाने का सामर्थ्य हमारे महान वादे-विहारी चुनाव-लड़ाकों के आलावा और किसके पास हो सकता है ? यह ढपोरशंखी महाशक्ति सिर्फ और सिर्फ उन्हीं के पास है !

प्रकृतिजन्य मौसम तो वर्ष में एक ही बार आता है परन्तु चुनाव का मौसम देश में खंड-वृष्टि की तरह कहीं भी और कभी भी आपको आपाद-मस्तक भीगा सकता है ! मध्यावधि चुनाव, किसी प्रदेश विशेष का चुनाव, किसी सांसद या विधायक के गोलोकवास होने पर उस क्षेत्र के संसद या विधान परिषद चुनाव ऐसे ही खंड-वृष्टि वाले चुनाव हैं !

तो बन्धु, यदि आपके मोहल्ले में बानरों के झुण्ड की तरह लोग नाचते-उछलते, "हमारा नेता कैसा हो, भैया जी जैसा हो !" "झाड़ू छाप में बटन दबाएँ और भैया जी को विजयी बनाये" का तुमुल स्वर में नारा लगाते, डीजे के कान-फोड़ू आवाज के साथ गुजरे तो समझ लीजिएगा कि चुनाव का मौसम आ गया !

ठहरता नहीं वक्त ।

वक़्त चल रहा अपनी चाल,
हर समय हर प्रहर हर घड़ी
उसने चलना ही सिखाया हमें,
क्योंकि वक़्त ठहरता नहीं किसी के लिए।

संसार की इस जीवित सोच को,
इंसान कभी नहीं देखता है
अगर वह नहीं चलेगा वक़्त के साथ,
तो खत्म हो जाएगा सब कुछ
क्योंकि वक्त ठहरता नहीं किसी के लिए।

ज़िन्दगी के इन चार दिनों में,
बरसों की सोचने वालों
यह महल चौबारे बंगले सब यहीं रह जाएंगे।
यह शरीर का चक्र भी वक़्त के साथ आगे बढ़ता है
और ढल जाता है,
क्योंकि वक़्त नहीं ठहरता किसी के लिए॥

रचनाकार हरिहर सिंह चौहान
जबरी बाग नसिया इन्दौर मध्यप्रदेश

बगावत की चिंगारी को बुझा कर बहुमत की ज्वाला पैदा करना कोई अमित शाह से सीखे

नीरज कुमार दुबे

देखा जाये तो केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की चुनावी शैली की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह रणनीति को तीन आयामों में रचते हैं— संगठन, समाज, और संदेश। यही भाजपा का वह मॉडल है जिसने उसे बार-बार कठिन इलाकों में जीत दिलाई है।

बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा की स्ट्राइक रेट का 90% से ऊपर रहना संगठनात्मक पराक्रम का भी परिणाम है। चुनाव से पहले के हालात पर गौर करें तो नीतीश कुमार के खिलाफ एंटी-इनकम्बेंसी को खत्म करना सबसे बड़ी चुनौती थी। साथ ही गठबंधन के घटक दलों के बीच सीट बँटवारे और सबको साथ लेकर चलने की चुनौती भी थी। ऐसे में अमित शाह ने यह जिम्मेदारी अपने हाथ में ली। बिहार में अमित शाह ने 4–5 महीने पहले ही मोर्चा संभाल लिया था। अमित शाह के कमान संभालने के बाद भाजपा और सहयोगियों के बीच कई दौर की वार्ता हुई। अमित शाह JD(U), LJP (RV), RLSP और HAM को एक मंच पर लेकर आये। सीट-दर-सीट जातीय समीकरण का सटीक विश्लेषण किया गया और संभावित विवादों को समय रहते शांत किया गया। यह वह काम है जो सामान्यतः चुनाव घोषित होने के बाद शुरू होता है लेकिन अमित शाह ने महीनों पहले इसकी नींव तैयार कर दी थी।

देखा जाये तो अमित शाह का चुनावी अभियान केवल मंच के भाषणों तक सीमित नहीं होता। उनकी शैली हमेशा जमीनी संरचना को मजबूत करने पर आधारित होती है। 5 जिला स्तरीय संगठन बैठकें, 5 क्लस्टर स्तर की बैठकें, 35 विशाल रैलियाँ, 1 महत्त्वपूर्ण रोड शो और और हर दौरे पर कोर ग्रुप के साथ बैठकें की गयीं। इस दौरान अमित शाह लगातार एक ही बात दोहराते रहे कि "बूथ जीते बिना चुनाव नहीं जीता जाता।" उनका यह फोकस बालू की दीवार को भी कंक्रीट का किला बना देता है। अमित शाह की निगरानी में बिहार में भाजपा का बूथ नेटवर्क तगड़ा हुआ और परिणाम सामने आया— प्रचंड जनादेश।

इसके अलावा, बिहार के दरभंगा जिले की अलिनगर विधानसभा सीट अचानक राष्ट्रीय सुर्खियों का केंद्र बन गई थी जब भाजपा ने यहाँ से लोकप्रिय मैथिली लोकगायिका मैथिली ठाकुर को उम्मीदवार बनाकर एक साहसी राजनीतिक दांव खेला था। हालांकि यह दांव जितना आकर्षक था, उतना ही जोखिमभरा भी क्योंकि ज़मीनी स्तर पर तुरंत असंतोष की लहर उठी। वर्षों से पार्टी के प्रति निष्ठावान कार्यकर्ता खुद को उपेक्षित महसूस करने लगे और कई ने बगावत की चेतावनी दे दी। स्थिति ऐसी थी कि यह प्रयोग भाजपा के लिए आत्मघाती भी साबित हो सकता था। लेकिन राजनीति में संकट वहीं खत्म होता है जहाँ अमित शाह का प्रवेश होता है। चुनावी अभियानों के महारथी, संघटनात्मक इंजीनियरिंग के सिद्धहस्त और आधुनिक भारतीय राजनीति के अजेय रणनीतिकार, अमित शाह ने एक बार फिर दिखा दिया कि उन्हें यूँ ही भाजपा का 'चाणक्य' नहीं कहा जाता।

हम आपको बता दें कि अलिनगर उन सीटों में से थी जिन्हें भाजपा पारंपरिक रूप से "अनुकूल" नहीं मानती। मैथिली ठाकुर जैसे युवा चेहरे को उतारना प्रधानमंत्री मोदी के उस बड़े प्रयोग का हिस्सा था जिसमें वह पार्टी में युवाओं, कलाकारों और नई पीढ़ी को निर्णायक भूमिका में लाना चाहते हैं। लेकिन पुराने कार्यकर्ताओं की नाराज़गी ने स्थिति को नाजुक बना दिया। यहीं अमित शाह ने अपनी विशिष्ट शैली में कमान संभाली। उन्होंने थकान को दरकिनार करते हुए एक के बाद एक फोन कॉल किए, हर 'आक्रोशित' नेता को शांत किया, हर असंतुष्ट कार्यकर्ता को सुना और धीरे-धीरे बगावत की आग को पूरी तरह शांत कर दिया। यह वही हस्तक्षेप था जिसने मैथिली ठाकुर के लिए रास्ता साफ किया।

पार्टी के दिल्ली और पटना दोनों ही धड़ों में यह स्वीकार किया गया कि अलिनगर की ऐतिहासिक जीत अमित शाह की अथक मेहनत और उनके अद्वितीय संकट प्रबंधन क्षमता का परिणाम थी। बात सिर्फ अलिनगर की भी नहीं है क्योंकि रूठों को मनाने और असंतुष्टों को समझाने का काम अमित शाह ने पूरे बिहार में किया। उन्होंने बगावत की चिंगारी को बुझा दिया और बहुमत की ज्वाला पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चुनाव प्रचार के पूरे अभियान के दौरान अमित शाह ने अलग-अलग महत्वपूर्ण बैठकों, संवादों और रणनीतिक हस्तक्षेपों के माध्यम से न सिर्फ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता का प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया, बल्कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के प्रति राजनीतिक सद्भावना को भी सार्थक दिशा दी।

देखा जाये तो अमित शाह की चुनावी शैली की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह रणनीति को तीन आयामों में रचते हैं— संगठन, समाज, और संदेश। यही भाजपा का वह मॉडल है जिसने उसे बार-बार कठिन इलाकों में जीत दिलाई है। देखा जाये तो चुनाव सिर्फ प्रचार से नहीं जीते जाते। चुनाव जीते जाते हैं संयम, संवाद, रणनीति और समय पर लिए गए सटीक निर्णयों से। यह जीत बताती है कि असंतोष चाहे कितना भी गहरा हो, संगठनात्मक नियंत्रक की भूमिका में अमित शाह अतुलनीय हैं। युवा चेहरों को आगे लाने का मोदी–शाह मॉडल सिर्फ प्रयोग नहीं, यह भविष्य की राजनीति का रोडमैप है। भाजपा अब सिर्फ परंपरागत समीकरणों पर नहीं, बल्कि नए सामाजिक-राजनीतिक प्रयोगों पर खड़ी एक गतिशील पार्टी बन चुकी है।

अमित शाह भले भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नहीं हैं, लेकिन पार्टी आज भी हर बड़ी चुनावी लड़ाई में उनके नेतृत्व-क्षमता पर ही निर्भर रहती है। वह महाराष्ट्र, हरियाणा और दिल्ली में भी कठिन परिस्थितियों को अवसरों में बदल चुके हैं। उनकी सबसे बड़ी ताकत है— राजनीति को भावना नहीं, प्रणाली के तौर पर देखना। अगला चुनावी युद्धक्षेत्र पश्चिम बंगाल, केरल और तमिलनाडु हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा कर दी है कि "बंगाल के जंगलराज को समाप्त करना है।" माना जा रहा है कि अमित शाह अब बंगाल पर ध्यान केंद्रित करेंगे। क्योंकि जहाँ मोदी जन-भावना जगाते हैं, वहाँ शाह जन-भावना को संरचना में बदलते हैं।

बहरहाल, यदि राजनीति एक विद्या है, तो अमित शाह उस विद्या के अधिष्ठाता हैं— रणकौशल, बुद्धि और संगठनात्मक कठोरता के अद्वितीय संयोजन के साथ। अमित शाह की राजनीति आधुनिक चाणक्य की तरह निर्णायक और परिणाम-केंद्रित है।

मोदी का कोई तोड़ नहीं: बिहार जीत मायने अनेक

कृष्णमुरारी त्रिपाठी अटल

विपक्षी दलों को क्या लगता कि केवल आचार संहिता लगते ही चुनावी जंग जीती जाती है ? अगर ये सोचते हैं तो इससे बड़ी भूल भला क्या हो सकती है ? जनता हर समय राजनीतिक दलों, उनके नेताओं के आचरणों को देखती है। परखती है। उसके बाद धैर्यपूर्वक ढंग से आंकलन करती है। तत्पश्चात अपना निर्णय सुनाती है।

प्रतीकों, मूल्यों, संस्कृति और परंपराओं की पिच पर आप प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को नहीं हरा पाएंगे। ये मोदी और बीजेपी की पसंदीदा पिच है। अगर इस पर विपक्ष फंसा तो उसकी करारी हार सुनिश्चित है विपक्ष हर बार यही ग़लती करता है। वो भारतीय मानस को समझे बिना मोदी को ललकारता है। हिंदू संस्कृति के मानबिंदुओं, परंपराओं और आस्था पर कटाक्ष करता है। अपमानित करता है। विपक्ष को लगता है कि वो हिंदुत्व को गाली देकर जीत सकता है।

विपक्ष को लगता है कि वो भारतीय सेना के शौर्य को चुनौती देकर चुनाव जीत सकता है। विपक्ष को ये लगता है कि जाति के नाम पर विभाजन उत्पन्न कर जीत सकता है। अगर इस मुगालते में विपक्ष है तो वो मोदी से कभी नहीं जीत सकता है। क्योंकि कौन से प्रतीकों को कहां और किस अंदाज़ में आज़माना है। ये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बख़ूबी जानते हैं। यूं कहूं तो वो इसमें सिद्धहस्त हैं। इसके जादूगर हैं।

हरियाणा, महाराष्ट्र के बाद बिहार विधानसभा के ये परिणाम बता रहे हैं कि — आप हिंदू संस्कृति का अपमान कर कोई भी चुनावी किला फतह नहीं कर सकते। आप सांविधानिक संस्थाओं का अपमान कर चुनाव नहीं जीत सकते। विपक्ष को ये समझना होगा कि जिस Gen-Z के नाम पर देश में नेपाल जैसी अराजकता का बिगुल फूंका जा रहा था। भारत के Gen-Z ने उसकी हवा निकाल दी है। उसने भर-भर के एकमुश्त वोट NDA की झोली में डालकर राजतिलक कर दिया है। महिलाओं ने बड़ी ख़ामोशी से प्रधानमंत्री मंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी पर अपना विश्वास जताया है।

देश की जनता ये जान चुकी है कि वर्षों तक सत्ता में रहने वाली कांग्रेस और आरजेडी समेत तमाम विपक्षी दल अब मुद्दाविहीन हो चुके हैं। क्या देश की जनता को ये नहीं दिखता रहा है कि - कैसे समूचा विपक्ष संसद की कार्यवाही नहीं चलने दे रहा था। क्या देश की जनता ये नहीं देख रही थी कि- कैसे राहुल गांधी के नेतृत्व वाला इंडी गठबंधन अराजकता का वातावरण बना रहा था। राष्ट्रीय हित के मुद्दों में इंडी गठबंधन के दलों का गतिरोध, तुष्टिकरण क्या देश की जनता नहीं देख रही थी ?

विपक्षी दलों को क्या लगता कि केवल आचार संहिता लगते ही चुनावी जंग जीती जाती है ? अगर ये सोचते हैं तो इससे बड़ी भूल भला क्या हो सकती है ? जनता हर समय राजनीतिक दलों, उनके नेताओं के आचरणों को देखती है। परखती है। उसके बाद धैर्यपूर्वक ढंग से आंकलन करती है। तत्पश्चात अपना निर्णय सुनाती है।

जीत के ये आंकड़े बता रहे हैं कि —देश की जनता जान चुकी है कि विपक्ष ऐनकेन प्रकारेण केवल सत्ता हासिल करना चाहते हैं। उनकी नीयत में खोट है। क्योंकि क्षेत्रीय दलों को निगल जाने के बाद केवल 99 सीटें लोकसभा चुनाव में जीतने के बाद कांग्रेस जिस ढंग से ग़ैर ज़िम्मेदाराना व्यवहार कर रही है। कांग्रेस के नेता और विशेष तौर पर राहुल गांधी जिस तरह से मोदी विरोध में—देश विरोधी मानसिकता से ग्रस्त दिख रहे हैं। सामाजिक समरसता को तोड़ने वाले बयान दे रहे हैं। देशद्रोही कम्युनिस्टों की लाइन पर चल रहे हैं। भारतीय समाज में अराजकता, हिंसा फैलाने जैसी बातें कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि जैसे कम्युनिस्टों ने राहुल गांधी को हाईजैक कर लिया हो। क्या जनता ये सब नहीं देखती है ?

अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि मंदिर से लेकर, हिंदुत्व, छठी मैया आदि के विरुद्ध राहुल गांधी के अनर्गल बयान। मिथ्याप्रचार। भारतीय सेना को अपमानित करते हुए विभाजनकारी बयान देना। बात-बात में हिंदुओं को जातियों में बांटने की वकालत करना। भाषा के आधार पर विभाजन के बीज बोना।तुष्टिकरण के लिए नए वक़्फ़ क़ानून के विरोध में उतरना। घुसपैठ जैसी घातक समस्या को ख़ारिज़ करना।लव जिहाद और कन्वर्जन के आतंक के विरुद्ध चुप्पी साधे रहना। मौन समर्थन देना। नेता प्रतिपक्ष की भूमिका को मज़ाक बना देना। विदेशों में जाकर भारत की सांविधानिक संस्थाओं को कटघरे में खड़ा करना। हमारी लोकतांत्रिक परंपराओं पर आघात करना। कम्युनिस्टों की तर्ज़ पर माओ की तरह रेड बुक रखना। बार-बार संविधान का माखौल उड़ाना। RSS जैसे राष्ट्रनिष्ठ संगठनों पर झूठे आक्षेप लगाना। कांग्रेस शासित राज्यों में संविधान की हत्या करते हुए प्रतिबंध लगाने का कुकृत्य करना। प्रधानमंत्री जैसे गरिमामय पद पर बैठे ओबीसी वर्ग से आने वाले — नरेंद्र मोदी जी को — तू-तड़ाक जैसी भाषा से संबोधित करना। जनता ये सब देख रही थी और ये भी गांठ बांध रही थी कि — जो व्यक्ति प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे ओबीसी वर्ग के व्यक्ति के प्रति ऐसी घृणा रखता है। वो आम आदमी का क्या सम्मान करेगा ? क्या कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी दल ये भूल गए कि - जनजातीय समाज की बेटी द्रौपदी मुर्मू जी के विरुद्ध उन्होंने राष्ट्रपति का कैंडिडेट उतारा था। वो क्यों ? इसीलिए न ताकि कोई जनजातीय समाज का व्यक्ति सर्वोच्च आसंदी पर न बैठ सके। विपक्ष को क्या लगता है कि देश और बिहार की जनता ये सब नहीं देख रही थी ? भला, हार मिलने पर — अपने कृत्य क्यों भूल जाते हैं ?

वहीं परिवारवाद के शीर्ष उदाहरण राहुल गांधी, प्रियंका वाड्रा और तेजस्वी यादव, अखिलेश यादव— ये सब क्या ये नहीं जानते हैं कि जनता अब 'परिवारवाद' को उखाड़ फेंक चुकी है। तिस पर भ्रष्टाचारी लालू परिवार। जंगलराज के आतंक का ख़ौफ, लालू यादव की विवशता। धर्मनिष्ठ आचरण वाले तेजप्रताप यादव जैसे भाई का निष्कासन, आरजेडी पर कब्ज़ा और लालू की विवशता भरी ईसाइयत से रंगी 'हैलोवीन' पार्टी। बिहार की जनता ये सब बारीकी के साथ देख रही थी। बिहार की जनता ये जान रही थी कि कैसे तेजस्वी यादव के यहां अब ईसाईयत और मिशनरीज़ का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। हिंदू परंपराओं को किनारे कर चोट पहुंचाई जा रही है।अन्यथा राजनीतिक फायदे के लिए 'छठी मैया' का राहुल गांधी ने जिस प्रकार से अपमान किया था। बिहार की जनता ये जान रही थी कि किसकी शह पर खेसारी जैसे दोयम दर्जे के लोग — श्रीराममंदिर पर अपमानजनक टिप्पणी कर रहे थे। क्या तेजस्वी यादव इन सबका विरोध नहीं करते ?

वस्तुत: ये परिणाम चीख-चीख कर यही कह रहे हैं कि -जनता विपक्ष की नीयत के खोट को अच्छी तरह से जान-पहचान चुकी है। इसीलिए जनता अपने मतदान के ज़रिए इन दलों की नियति में हर बार खोट का सर्टिफिकेट लगा देती है। S-I-R, EVM हैक और वोट चोरी के मिथ्या आरोपों को जनता अच्छी तरह जान चुकी है।

जनता ने केन्द्र की मोदी सरकार आने के बाद विकास की जनकल्याणकारी योजनाओं का सीधा लाभ पाया है। विभिन्न योजनाओं की DBT के ज़रिए यानी सीधे खाते में राशि पहुंचने से लाभ पाया। शासन-प्रशासन में हर वर्ग और समाज का समुचित प्रतिनिधित्व देखा है। देश की जनता ने ये पुख़्ता कर लिया है कि उसका वास्तविक हितैषी कौन है। उसने ये जाना है हिन्दू और हिंदुत्व का वास्तविक पक्षधर कौन है। क्योंकि जो भारतीय संस्कृति और परंपराओं को त्याज्य मानता है। वोटबैंक के लिए अपमानित करता है। वो तो उसका हितैषी कभी नहीं हो सकता है। जनता अब तत्कालिक लाभ की दृष्टि से ही नहीं बल्कि दूरदर्शिता के साथ अपने निर्णय लेती है। वो ये जान चुकी है कि वास्तव में देश की बागडोर किसके हाथों में सुरक्षित है। २०२४ के लोकसभा चुनाव से लेकर तमाम विधानसभा चुनावों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति स्वीकार्यता के ये आंकड़े उपरोक्त बातों को बारंबार सिद्ध कर रहे हैं।

अगर कुछ नेताओं और राजनीतिक दलों को लगता है कि वो हवा-हवाई वादों के ज़रिए उसे बेवकूफ बना सकते हैं। भारत की अस्मिता पर प्रहार कर सत्ता पर आ सकते हैं। ऐसे में उन राजनीतिक दलों, नेताओं से बड़ा बेवकूफ कोई नहीं होगा। अगर राजनीतिक दलों को लगता है कि निष्पक्षता का चोला ओढ़कर — पेड वर्कर की तरह काम करने वाले, यूट्यूबर्स— उनका माहौल बना सकते हैं। जनता के दिलों में जगह बना सकते हैं तो ये भ्रम भी तोड़ लें। क्योंकि देश की जागरुक जनता अपना हानि-लाभ अच्छी तरह से जानती है। राजनीतिक दलों, विश्लेषकों, पत्रकारों और मीडिया कर्मियों से बेहतर अपने भविष्य का आंकलन करती है। उसके बाद ही मतदान करती है। अतएव अब अपने आपको कोई ग़लत-फ़हमी में न रखें। क्योंकि ये पब्लिक है सब जानती है। साथ ही जनादेश को अपमानित करने का भी कुकृत्य न करें। क्योंकि ऐसा तो होगा नहीं कि मीठा-मीठा, गप-गप, कड़वा-कड़वा- थू..थू। ये जनता अगर विपक्ष के तमाम हथकंडों के बावजूद भी अगर उस पर विश्वास नहीं जता रही है तो ये आत्मचिंतन का वक्त है। न कि जनादेश पर लांछन लगाने का समय है। अगर विपक्षी दल अब भी नहीं समझे तो उन्हें रसातल में हमेशा के लिए दफ्न होने से कोई शक्ति नहीं रोक सकती है।

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में NDA गठबंधन का विजयरथ एक बड़ी आश्वस्ति लिए हुए है। ये विजय रथ विपक्षी दलों ही नहीं अपितु भारत विरोधी वैश्विक शक्तियों को भी हर बार चित करता है। जब दुनिया भारत को कमजोर करने की साजिश रचती है। जार्ज सोरोस जैसे तमाम भारत विरोधी लोग और शक्तियां— मोदी को उखाड़ फेंकना चाहती हैं। उस समय देश के अंदर एक अदृश्य शक्ति का संचार होता है। जो संजीवनी की भांति मोदी की राजनीतिक शक्ति को और मजबूत करती है। २०२४ के लोकसभा चुनाव के बाद हरियाणा, महाराष्ट्र और बिहार की ये प्रचंड जीत केवल चुनावी जीत नहीं है। ये जीत केवल किसी राज्य की राजनीतिक सत्ता की जीत की तरह नहीं देखी जानी चाहिए। बल्कि इन जीतों में जो संदेश छुपा है। देश की जनता का मन और उसका भाव छिपा है। उसके निहितार्थ को भी समझने की ज़रुरत है। क्योंकि नियति ने २१ वीं सदी को भारत की सदी लिखा है। इसीलिए ये तमाम संकेत बहुत कुछ कह रहे हैं।

हमारे भविष्य के लिए हमें विज्ञान की आवश्यकता है

● विजय गर्ग

विज्ञान हमेशा से ही वह शक्ति रही है जो मानवता के भाग्य को आकार देती है।

पहिये से कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक, इसने सभ्यता की कहानी को पुनः लिखा है। फिर भी, जब हम भविष्य की ओर देखते हैं तो सवाल यह नहीं है कि हमारे पास कितना विज्ञान है - बल्कि हमें किस प्रकार का विज्ञान चाहिए।

जिस विज्ञान की हमें आवश्यकता है, उसे केवल जिज्ञासा ही नहीं बल्कि विवेक द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए। आज की दुनिया उन चुनौतियों का सामना कर रही है जिन्हें अकेले प्रौद्योगिकी हल नहीं कर सकती - जलवायु परिवर्तन, असमानता, जैव विविधता में कमी और मानसिक स्वास्थ्य संकट। हमें एक ऐसे विज्ञान की आवश्यकता है जो नवाचार को करुणा, प्रगति को उद्देश्य से जोड़ता हो।

आने वाले दशकों में नवीकरणीय ऊर्जा, स्वच्छ जल, सतत कृषि और सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनुसंधान किसी भी तकनीकी दौड़ से अधिक मूल्यवान होगा। लाभ के लिए आविष्कार से अस्तित्व के लिए नवाचार पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। भविष्य का विज्ञान - ग्रह, शरीर और मन को ठीक करना चाहिए।

विज्ञान का लोकतांत्रिककरण भी उतना ही महत्वपूर्ण है। ज्ञान अभिजात वर्ग प्रयोगशालाओं या कॉर्पोरेट बोर्डरूम तक सीमित नहीं रहना चाहिए। यह कक्षाओं, गांवों और समुदायों तक पहुंचना चाहिए जहां वास्तविक परिवर्तन शुरू होता है। किसी भी लोकतंत्र के लिए वैज्ञानिक रूप से जागरूक समाज सबसे मजबूत आधार है।

हमें युवा दिमागों को यह भी सिखाना होगा कि विज्ञान केवल सूत्रों और प्रयोगों के बारे में नहीं है - यह महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने के बारे में है। वैज्ञानिकों की अगली पीढ़ी को अपने काम के सामाजिक और पर्यावरणीय परिणामों पर विचार करना सीखना होगा।

वैश्विक चुनौतियों से निपटना 21वीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों को परिष्कृत, विज्ञान-आधारित समाधान की आवश्यकता होती है। जिन प्रमुख क्षेत्रों में वैज्ञानिक सफलताएं महत्वपूर्ण हैं, उनमें शामिल हैं

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय स्थिरताः यह शायद सबसे अधिक अस्तित्वपूर्ण चुनौती है। हमें विज्ञान की आवश्यकता है

उन्नत सौर, पवन और भूतापीय ऊर्जा जैसे सतत ऊर्जा स्रोत विकसित करें तथा ऊर्जा भंडारण में सुधार करें (जैसे कि अगली पीढ़ी की बैटरी)।

वायुमंडलीय \text{CO}_2 को खींचने के लिए कार्बन कैप्चर और हटाने की प्रौद्योगिकियों का उन्नयन।

संरक्षण और नीतिगत प्रयासों का मार्गदर्शन करने के लिए महासागरों और जंगलों जैसी जटिल प्राकृतिक प्रणालियों की हमारी समझ में सुधार।

वैश्विक स्वास्थ्य और चिकित्साः कोविड-19 महामारी ने प्रतिरोधी स्वास्थ्य प्रणालियों की आवश्यकता पर जोर दिया। भविष्य के विज्ञान को इस पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए

आनुवंशिकी के आधार पर व्यक्तिगत चिकित्सा और उन्नत निदान।

एंटीबायोटिक प्रतिरोध और नई जीवाणुरोधी दवाओं का विकास करना।

कैंसर और न्यूरोडेजेनेरेटिव विकारों जैसी उम्र बढ़ने और पुरानी बीमारियों पर शोध

खाद्य एवं संसाधन सुरक्षाः यह सुनिश्चित करना कि बढ़ती वैश्विक जनसंख्या को पर्याप्त, पोषक संसाधन उपलब्ध हों

कम पर्यावरणीय प्रभाव के साथ फसल उपज, रोग प्रतिरोध और पोषण मूल्य में सुधार करने के लिए सतत कृषि तथा जैव प्रौद्योगिकी।

जल शुद्धीकरण और संसाधन प्रबंधन के लिए नई विधियां विकसित करना। कल के लिए सीमा प्रौद्योगिकी तत्काल संकटों के अलावा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के कई अत्याधुनिक क्षेत्र भविष्य को पुनः परिभाषित करने के लिए तैयार हैं, जिन समस्याओं का हम अभी तक कल्पना नहीं कर सकते।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और डेटा विज्ञानः एआई चिकित्सा से लेकर वित्त तक लगभग हर क्षेत्र में क्रांति ला रहा है। इस पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए

निष्पक्षता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए नैतिक और व्याख्यात्मक एआई विकसित करना।

जलवायु मॉडलिंग, शहरी नियोजन और सार्वजनिक स्वास्थ्य के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए बिग डेटा विश्लेषण का उपयोग करना।

क्वांटम टेक्नोलॉजीजः इसमें क्वांटम कंप्यूटिंग शामिल है, जो क्लासिक कंप्यूटरों के लिए वर्तमान में कठिन समस्याओं को हल करने का वादा करती है, तथा अद्वितीय सुरक्षा और माप सटीकता के लिए क्वांटम सेंसरिंग और क्वांटम क्रिप्टोग्राफी।

जैव प्रौद्योगिकी और आनुवंशिक इंजीनियरिंगः CRISPR जैसे उपकरण जीनोम को सटीक रूप से संपादित करने के लिए दरवाजे खोल रहे हैं, जिसका आनुवांशिक रोगों का इलाज करने और नए जैविक कार्यों की इंजीनियरिंग पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

उन्नत सामग्री विज्ञान और नैनो प्रौद्योगिकीः ऊर्जा भंडारण से लेकर बुनियादी ढांचे और चिकित्सा प्रत्यारोपण तक हर चीज के लिए प्रकाश, मजबूत, अधिक संचालक या स्व-चिकित्सा वाली क्रांतिकारी गुणों वाली सामग्रियां बनाना। सहयोग और शिक्षा की आवश्यकता हमें जिस ₹विज्ञान की आवश्यकता है₹ को प्राप्त करने के लिए केवल प्रयोगशाला सफलताओं से अधिक आवश्यक है। इसमें विज्ञान के संचालन, वित्तपोषण और संचार में मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता होती है

अंतर-अनुशासनात्मक सहयोगः जलवायु परिवर्तन या महामारी की तैयारी जैसी सबसे चुनौतीपूर्ण समस्याओं का समाधान एक ही क्षेत्र में नहीं किया जा सकता। समाधानों में जीवविज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, इंजीनियरिंग और नीति के विशेषज्ञों को एक साथ लाने के लिए अलग-अलग दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

विज्ञान और समाज को जोड़नाः विज्ञान में जनता का विश्वास बनाना तथा वैज्ञानिक निष्कर्षों की जानकारी नीति सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। इसमें गलत सूचना से निपटना और युवा आयु से ही मजबूत विज्ञान शिक्षा के माध्यम से सामान्य वैज्ञानिक साक्षरता को बढ़ावा देना शामिल है।

शिक्षा में निवेशः हमें विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) में करियर बनाने के लिए सर्वोत्तम और सबसे उज्ज्वल दिमागों को आकर्षित करना होगा तथा उन्हें प्रशिक्षित करना होगा। अंत में, विज्ञान केवल एक शैक्षणिक कार्य नहीं है; यह लचीला, समृद्ध और टिकाऊ भविष्य बनाने के लिए आवश्यक उपकरण हैं। अपने प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करके, वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देकर और शोधकर्ताओं की नई पीढ़ी में निवेश करके हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आज का विज्ञान कल के लिए समाधान प्रदान करता है।

मूलतः, हमारे भविष्य के लिए हमें जिस विज्ञान की आवश्यकता है वह केवल नई दुनियाओं की खोज करने के बारे में नहीं है, बल्कि उस विश्व को बनाए रखने के बारे में भी है जो हम रखते हैं। यह समावेशी, नैतिक और टिकाऊ होना चाहिए - एक विज्ञान जो मानवता की सेवा करता है, इसके विपरीत नहीं।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रतिष्ठित शिक्षाविद् एमएचआर मालोट पंजाब

बिरसा मुंडा जन्मस्थली गांव उलीहातु में उनका 150वीं जयंती सह राज्य स्थापना दिवस पर पहुंचे राज्यपाल व मुख्यमंत्री

केंद्रीय जनजातीय मंत्री जुएल उरांव भी हुए शामिल

रांची, बिरसा मुंडा कॉम्प्लेक्स उलिहातु, खूंटी में आज धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती एवं राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार, माननीय मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं जनजातीय कार्य मंत्रालय भारत सरकार मंत्री जुएल ओराम सम्मिलित हुए। यह समारोह धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा के जन्म-जयंती पर पुष्पांजलि कार्यक्रम के उपरांत आयोजित की गई।

इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि झारखंड वीरों की धरती है। हमारे कई वीरों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर झारखंड राज्य को जन्म दिया है। हमारे वीर शहीदों ने ही हम राज्यवासियों को राह दिखाया एवं मजबूत बनाया है। उन्होंने कहा कि जिनके संघर्ष, अथक प्रयास और बलिदान से इस राज्य का निर्माण हुआ है उनके सपनों का झारखंड बनाना हम सभी कर्तव्य है। वर्तमान समय में हम सभी के कंधों में इस राज्य को सजाने और संवारने की एक बड़ी जिम्मेवारी है। उन्होंने कहा कि धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा जी के आदर्शों पर चलने वाले व्यक्ति आदरणीय दिशोम गुरु बाबा शिबू सोरेन आज हम सभी के बीच नही हैं। आज के इस घड़ी में उनकी कमी हम सभी को खल रही है। जब घर से कोई बुजुर्ग सदस्य विदा लेता है तब उस घर पर पूरा सन्नाटा पसर जाता है, आज कहीं न कहीं इस पीड़ा के दौर से मैं गुजर रहा हूं।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि हमारी सरकार राज्य के गांव-गांव पहुंचकर सभी वर्ग-समुदाय के लोगों के दुःख, तकलीफ को समझने का काम कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार आदिवासी एवं जनजातीय समुदायों के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए कई महत्वाकांक्षी योजनाओं का संचालन कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार की विकास योजनाओं में आदिवासी तथा जनजातीय समुदायों को सबसे ऊपर रखा जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार अपने कार्यों का 50% खर्च माताओं, बहनों, बेटियों तथा गांव, गरीब, किसान के कल्याणार्थ कर रही है। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि हमारी सरकार रांची के राज्य मुख्यालय से नहीं बल्कि गांव से चलने वाली सरकार है। प्रत्येक परिवार के घर आंगन तक विकास योजनाओं का पहुंचाने का कार्य निरंतर चलता रहा है, आगे भी चलता रहेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज इस सभा में उपस्थित हमारे कई ऐसे युवा हैं जिनका उम्र राज्य गठन के बाद हुआ है। आज हमारा राज्य 25 वर्ष का युवा राज्य है। हम युवा वर्ग के साथ मिलकर इस राज्य को अपने बल पर आगे बढ़ाते हुए देश के अग्रणी राज्यों के श्रेणी में लाकर खड़ा करेंगे, इसी लक्ष्य के साथ हमारी सरकार कार्य योजनाओं को मूर्त रूप दे रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज से कुछ वर्ष पहले तक यहां के लोगों को इलाज और पढ़ाई के लिए महाजनों या पैसे वाले लोगों से उधार लेना पड़ता था, लेकिन अब हमारी सरकार इन परिस्थितियों को बदलने में लगी हुई है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार धीरे-धीरे महिलाओं को मजबूत बनाने को लेकर विशेष कार्य कर रही है। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में बेहतर काम हो रहा है। आने वाले दिनों में खेल, पर्यटन, रोजगार तथा आधारभूत संरचनाओं के विकास पर कई महत्वपूर्ण काम किए जाएंगे, जिसकी रूपरेखा तैयार की जा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार की सोच है कि एक-एक झारखंड वासियों के घर-परिवार में खुशहाली आए, लोगों के चेहरों पर मुस्कान हो तथा समस्त राज्यवासी झारखंड के समग्र विकास का सहभागी बने।

इस अवसर पर माननीय विधायक विकास सिंह मुंडा, माननीय विधायक रामसूर्या मुंडा, माननीय विधायक सुदीप गुड़िया, राज्य के मुख्य सचिव अविनाश कुमार, धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा के वंशज सुखराम मुंडा सहित जिला प्रशासन के वरीय अधिकारीगण तथा बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

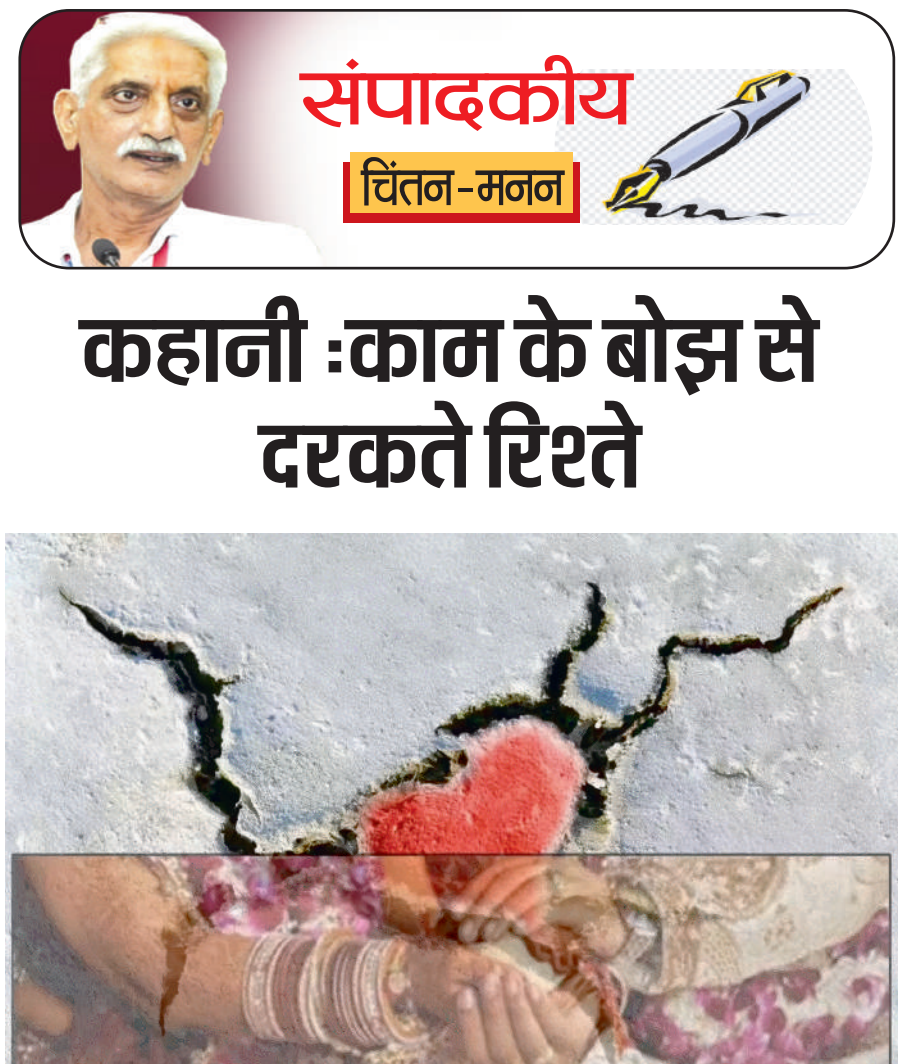

संपादकीय

चिंतन-मनन

कहानी :काम के बोझ से दरकते रिश्ते

डॉ विजय गर्ग

क्या भीमेश बाबू को जानते हैं आप? इस महीने की शुरुआत में अपनी त्रासद मौत की वजह से वह समूचे देश में चर्चा का विषय बन गए थे। कैसे हुआ उनका देहांत ? उनकी मृत्यु से पेशेवरों के बीच प्रचलित एक पुरानी बहस क्यों पुरगर्म हो उठी है?

पहले इस झकझोर देने वाले घटनाक्रम पर गौर करते हैं। रात एक बजे जब अंग्रेजी कैलेंडर 2 नवंबर की आमद की मुनादी कर चुके थे, तब भीमेश बेंगलुरु के एक डाटा डिजिटल बैंक में रोजमर्रा के काम निपटाकर घर जाने की तैयारी में थे। किसी वजह से तेज रोशनी उनकी आंखों में चुभती थी और वह अक्सर साथियों 'अनावश्यक लाइट बुझाने को कहा करते थे। भी उन्होंने एक कनिष्ठ सहयोगी से बत्तियां बुझाने को कहा, लेकिन वह भड़क उठा। उसने भीमेश पर हमला बोल दिया, जो इतना घातक था कि द में उनकी मृत्यु हो गई।

इस शर्मनाक घटना एक बार फिर 'वर्कलाइफ बैलेंस' की पुरानी बहस को जिंदा कर दिया है।

भारत में कार्यस्थल पर बढ़ते काम के बोझ और दरकते रिश्तों ने लोगों को मनोविकारों की ओर धकेलना शुरू कर दिया है। तमाम सर्वेक्षणों के अनुसार आर्थिक महाशक्ति बनने तेज कदम बढ़ा रहा भारत 'बर्नआउट एपिडेमिक' के जबड़े में भी समाता जा रहा है। इस नए कारोबारी मुहावरे का अर्थ है काम के अत्यधिक बोझ से टूटन

कई भरोसेमंद सर्वेक्षण बताते हैं कि हमारा देश लगातार उन देशों के हुआ है, जहां काम का समय स्थापित

मानक से कहीं ज्यादा है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार, पूरी दु

री दुनिया में छह कार्यदिवसों के सप्ताह में अधिकतम 48 घंटे काम करने का रिवाज है। इसके उलट भारत कार्य की समय- सीमा के मामले में संसार के उन 13 देशों में शामिल है, जहां काम के घंटे सर्वाधिक हैं। इसका दुष्परिणाम सामने है। एक शोध के दौरान देश में 60 फीसदी से अधिक पेशेवरों में

'बर्नआउट' के लक्षण पाए गए हैं। हमारे यहां हालात पहले भी अच्छे नहीं थे, कोरोना के दौरान गजब की गिरावट देखी गई। उन दिनों लोग घरों से काम करते थे और उन्हें लगातार खुद को 'लॉगइन' रखना होता था।

दका

क्यों होता है 'बर्न आउट सिंड्रोम ?

यह एक ऐसी परिस्थिति है, जो अक्सर अत्यधिक काम के दबाव से उपजती है। वे लोग, जिनके निजी जीवन में पेशेगत अनिवार्यताएं दखल देने लगती हैं, वे अवसाद अथवा हिंसक मनोवृत्ति की चपेट में हैं। भीमेश बाबू इसी का शिकार बने। उम्मीद थी कि कोविड के बाद यह सिलसिला खत्म हो जाएगा, पर इसमें बढ़ोतरी होती गई। अब नए डिजिटल उपकरणों के जरिये घर या दफ्तर से काम करने वाले लोगों की सतत निगरानी की जाती है। यही नहीं, 'फील्ड' में काम करने वाले पेशेवरों को भी अपनी 'जीपीएस

'लोकेशन' शेयर करनी पड़ती है।

रुआत में तो इस तरह की निगरानी उत्पादकता बढ़ाने वाली साबित साबित हुई, लेकिन

अब यह प्रक्रिया तमाम विरोधाभास जन रही है।

कई शोध बताते हैं कि काम की लंबी पारियां अच्छे नतीजे कामका कादातर देने के बजाय कंपनियों का दोतरफा नुकसान कर रही हैं। आमतौर पर ऐसा पाया गया है कि 20 प्रतिशत से अधिक पेशेवर आठ से नौ घंटे की पारी में सिर्फ ढाई से तीन घंटे सर्वोत्तम परिणाम दे पाते हैं। धीमे-धीमे उनमें सुस्ती और ऊब के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। यहां भी लैंगिक असमानता भारतीयों का पीछा नहीं छोड़ती। मानव संसाधन की विशेषज्ञ एक संस्था ने पाया कि कार्यस्थल पर अत्यधिक दबाव और उससे उपजे पारिवारिक तनाव की वजह से नौकरी छोड़ने वालों में महिलाओं की तादाद काफी अधिक है।

आईटी और तकनीकी सेक्टर इस मामले में ज्यादा निर्मम साबित हो रहे हैं। उनके ज्यादातर ग्राहक धरती के दूसरे हिस्सों में रहते हैं। उनकी जरूरतें पूरी करने के लिए इन क्षेत्रों में काम करने वालों को उनके समय के हिसाब से खुद को ढालना होता

है। इसके अलावा भाषा, व्यवहार और तकनीकी दिक्कतें भी उन पर बुरा प्रभाव डालती हैं। यही नहीं, उन्हें कभी-कभी 12 घंटे तक काम करना पड़ता है। सप्ताह में पचास से अधिक घंटों की ड्यूटी इन क्षेत्रों में आम है।

कई क्षेत्र ऐसे भी हैं, जहां कर्मचारियों से हरदम उपलब्धता की उम्मीद की जाती है। उन्हें ई-मेल, वाट्सएप अथवा कंपनी

के निजी संदेश सिस्टम पर उपलब्ध रहना होता है। जो दिन- रात की परवाह किए बिना तत्काल जवाब दे देते हैं, उन्हें समर्पित और सक्षम के जुबानी तमगों से नवाजा जाता है। जिनसे थोड़ी-बहुत देर हो जाती है, वे 'कामचोर' करार दे दिए जाते हैं। इससे काम लेने वालों और काम करने वालों के बीच की खाई चौड़ी होती जा रही है। कभी-कभी यह जानलेवा भी साबित होती।

भीमेश बाबू से पहले अन्ना सेबेस्टियन पेरिल का मामला खबरों में सुख हुआ था। एक प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कंपनी में नौकरी शुरू करते वक्त 25 वर्षीय अन्ना का दिल बल्लियों उछल रहा था, लेकिन 14 महीने के भीतर वह हृदयाघात से चल बसीं। अन्ना की असामयिक मौत के बाद उनकी मां ने उस कंपनी के आला अधिकारियों पर मानसिक उत्पीड़न और निरंतर 14 घंटे तक काम लेने के आरोप लगाए थे। ऐसे दर्जनों मामले लोगों का ध्यान खींचते रहे हैं। दुर्भाग्य से यह सिलसिला कामगारों का ही नहीं, बल्कि बड़े-बड़े कॉरपोरेट घरानों को वासला बढ़ता जा रहा है। इससे सिर्फ हानि उठानी 'है। इसका दोषी कौन है? व्यावसायिक संस्थान या उनके मानव संसाधन विभाग ? कतई नहीं। अगर यह राष्ट्रीय आपदा बन रही है, तो इसके लिए राष्ट्रीय नीति की भी दरकार है। कुछ देशों ने इस मुद्दे पर बेहतरीन काम किया है। मसलन, फ्रांस में शाम सात बजे से सुबह आठ बजे के बीच आधिकारिक ई-मेल या वाट्स एप संदेश भेजने पर पाबंदी है। कई पश्चिमी देशों में पेशेवरों को सलाह दी जाती है कि वे सुबह उठते ही अपने मोबाइल फोन चेक न करें और कुछ समय खुद को भी दें। इसके अलावा कुछ देशों में 'लॉग इन' अथवा 'डेस्क टाइम' की जगह उत्पादकता मापने के मानक गढ़े जा रहे हैं। वहां 'डिजिटल बाउंड्रीज' तय करने के साथ सवैतनिक छुट्टियों पर जाने की अनिवार्यता भी गढ़ी जा रही है।

तमाम भारतीय कॉरपोरेट इस दिशा में बेहतरीन काम कर रहे हैं, लेकिन अब एक ऐसी राष्ट्रीय नीति की जरूरत है, जो कॉरपोरेट और कामगारों का साझा विकास तय कर सके, क्योंकि इंसान और उत्पादकता का आदिम रिश्ता है। आज जब मानवीय बल और बुद्धि पर तकनीक हावी हो चली है, तब नए मानकों का निर्धारण जरूरी हो गया है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

मौन खतरा: कितनी गंदे हवा आपकी रक्त शर्करा को बढ़ा रही है

डॉ. विजय गर्ग

वायु प्रदूषण को श्वसन और हृदय संबंधी स्वास्थ्य के लिए एक प्रमुख जोखिम माना जाता है। लेकिन शोध की एक बढ़ती संख्या से पता चलता है कि यह एक छिपा हुआ चयापचय खतरा भी पैदा करता हैः गंदा हवा रक्त में चीनी के स्तर को बढ़ा सकती है और मधुमेह होने का जोखिम बढ़ सकता है। यह लेख इस लिंक के पीछे सबूतों की जांच करता है कि ऐसा कैसे और क्यों होता है, तथा विशेष रूप से भारत जैसे उच्च प्रदूषण बोझ वाले क्षेत्रों में व्यक्ति अपनी सुरक्षा के लिए क्या कर सकते हैं।

हम किस प्रकार के वायु प्रदूषण की बात कर रहे हैं?

जब हम ₹गंदी हवा₹ कहते हैं, तो हम उन प्रमुख वायु प्रदूषकों का उल्लेख कर रहे हैं जिन्हें आप सांस लेते हैं (या जो घर के अंदर प्रवेश करते हैं)

बारीक कण (विशेषकर PM2.5ः कणों का व्यास ≤2.5 μm)।

कॉर्सर कण (PM10)

सल्फर डाइऑक्साइड (एसओ2), नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (एनओ2) और ओजोन (O) जैसे गैस प्रदूषक। ये प्रदूषकों का उद्गम वाहनों के निकास, औद्योगिक उत्सर्जन, बायोमास जलाने, फसलों के अवशेष जलने (कई भारतीय राज्यों में), निर्माण धूल और घरेलू ठोस ईंधन उपयोग से होता है। वायु प्रदूषण का रक्त शर्करा पर क्या प्रभाव पड़ता है?

यहां शोध निष्कर्षों का सारांश दिया गया है और वे क्या बताते हैं

एक बड़े मेटा-विश्लेषण में पाया गया कि अध्ययन की गई आबादी में PM2.5 के दीर्घकालिक संपर्क में हर 10 μg/m3 वृद्धि के लिए उपवास रक्त शर्करा लगभग 1.72 प्रतिशत (95% CI 0.93 - 2.25%) बढ़ गया।

अन्य कणों (PM1, PM10, SO2) के संपर्क में उपवास ग्लूकोज की मापनीय वृद्धि भी हुई।

एक वैश्विक अध्ययन में, दीर्घकालिक परिवेश वायु प्रदूषण का संपर्क उच्च ग्लूकोज और इंसुलिन एकाग्रता के साथ-साथ मधुमेह की अधिक प्रवृत्ति से सकारात्मक रूप से जुड़ा हुआ था।

₹मधुमेह स्पेक्ट्रम₹ में वायु प्रदूषण और हृदय-रोग संबंधी जोखिम की समीक्षा में कहा गया है कि रक्त ग्लूकोज और एचबीए1सी स्तरों के बढ़ते लोगों, पूर्व मधुमेह और स्थापित मधुमेह से जुड़े हुए हैं।

भारतीय मोर्चे पर, विशेष रूप से भारत में तेजी से शहरीकरण, उच्च प्रदूषण स्तर और टाइप 2 मधुमेह के बढ़ते बोझ की ओर इशारा करते हुए समीक्षाएं हुई हैं - जिससे पता चलता है कि वायु प्रदूषण संभवतः इसमें योगदान देने वाला पर्यावरणीय कारक है।

संक्षेप में: साक्ष्य बताते हैं कि गंदा हवा केवल श्वसन जोखिम से अधिक है - यह चयापचय भी खतरा है।

यह कैसे हो सकता है? (लिंक के पीछे जीवविज्ञान

वायु प्रदूषण से रक्त ग्लूकोज नियंत्रण में वृद्धि हो सकती है या मधुमेह की शुरुआत को बढ़ावा दिया जा सकता है

1। प्रणालीगत सूजन और ऑक्सीडेटिव तनाव श्वास लेने वाले बारीक कण फेफड़ों में सूजन पैदा कर सकते हैं, जो फिर रक्तप्रवाह में बह जाते हैं और ऑक्सीडेटिव तनाव बढ़ जाता है। यह पुरानी सूजन इंसुलिन सिग्नलिंग को कम कर सकती है और इससे इंसुलिन प्रतिरोध हो सकता है (जहां कोशिकाएं इंसुलिन का अच्छा जवाब नहीं देती हैं)।

एंडोथेलियल डिसफंक्शन और नसों की क्षति प्रदूषकों से एंडोथेलियम (रक्त वाहिकाओं की झिल्ली) में गिरावट आ सकती है, नाइट्रिक

ऑक्साइड उपलब्धता कम हो सकती है और धमनी कठोरता बढ़ जाती है। चूंकि सूक्ष्म और मैक्रोवेस्कुलर स्वास्थ्य इंसुलिन और ग्लूकोज विनियमन से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है, इसलिए यह क्षति चयापचय नियंत्रण को खराब कर सकती है।

बीटा-सेल विकलांगता इस बात का कुछ प्रमाण (विशेषकर पशु या इन-विट्रो मॉडल से) है कि प्रदूषकों से पैंकेरेटिक बीटा कोशिकाओं (इंसुलिन उत्पादक कोशिकाएं) को नुकसान हो सकता है, जिससे इंसुलिन उत्सर्जन कम हो जाता है।

एडिपोस (मसाले) ऊतक प्रभाव प्रदूषकों से वसा ऊतक में माइटोकॉन्ड्रियल कार्य अव्यवस्थित हो सकता है, वसा में कम स्तर की सूजन को बढ़ावा मिल सकता है और इस प्रकार इंसुलिन प्रतिरोध भी खराब हो जाता है।

चयापचय तनाव और तनाव मार्गों की सक्रियता वायु प्रदूषण सहानुभूतिपूर्ण तंत्रिका प्रणाली प्रतिक्रियाओं या तनाव हार्मोन रिलीज को सक्रिय कर सकता है, जो ग्लूकोज चयापचय और इंसुलिन संवेदनशीलता में हस्तक्षेप कर सकता है।

इन तंत्रों के साथ मिलकर, यह जैविक रूप से व्यवहार्य है कि प्रदूषित वायु का दीर्घकालिक संपर्क रक्त ग्लूकोज में वृद्धि और मधुमेह के जोखिम में योगदान दे सकता है।

कौन सबसे अधिक जोखिम में है?

प्रदूषित वायु के चयापचय प्रभावों से कुछ आबादी अधिक कमजोर हो सकती है

शहरी क्षेत्रों या उन क्षेत्रों में रहने वाले लोग जहां पर्यावरण प्रदूषण बहुत अधिक है (उदाहरण के लिए, भारत और चीन के कुछ भाग) - जहां संपर्क स्तर स्वच्छ क्षेत्र की तुलना में काफी अधिक होता है।

इंसुलिन प्रतिरोध, प्रीडायबिटीज या चयापचय सिंड्रोम वाले व्यक्ति - प्रदूषण उन्हें पूर्ण मधुमेह की ओर धकेलने के लिए एक अतिरिक्त ₹हिट₹ का कार्य कर सकता है।

वृद्ध वयस्कों, अधिक वजन/ओबेसिटी वाले लोगों या बैठे रहने वाली जीवनशैली - समीक्षा में अधिक वजन/मोटापे वाले व्यक्तियों पर मजबूत प्रभाव देखा गया।

थिमक्का: मानव काया में छिपी एक प्राचीन वटवृक्ष-देवी

कभी-कभी इतिहास किसी साधारण व्यक्ति को चुनकर उसे असाधारण बना देता है। वह न अपने लिए पहचान माँगता है, न सम्मान की भूख रखता है—वह केवल कर्म करता है, और उसका कर्म ही उसकी अनश्वर पहचान बन जाता है। सालुमरदा थिमक्का, भारत की महान पर्यावरणसेवी, ऐसी ही एक स्त्री थीं। 14 नवंबर को, जब सावलुमारदा थिमक्का की सांसें थम गईं, तो केवल एक पर्यावरणविद की मृत्यु नहीं, बल्कि प्रकृति-पूजा की एक परंपरा का विराम है। दुनिया ने खोया नहीं—उन्होंने पाया। पाया एक ऐसी विरासत, जो पत्तों की सरसराहट में चेतना का पुनर्जागरण गाती है। 114 वर्ष की यह वृद्धा, जिसे 'वृक्षमाता' कहा जाता है, न मरी—बल्कि पेड़ों की शाखाओं में विलीन हो गईं। उनका जाना एक अंत नहीं, बल्कि हर हरी डाल पर उभरता एक नया संकल्प है: प्रकृति की ममता कभी मिटती नहीं, वह बस रूप बदल लेती है।

थिमक्का.का जीवन किसी पुस्तकालय की किताबों से नहीं, बल्कि धरती की धूल, धूप और हवा से लिखा गया था। वे गरीब थीं, पर मन से अमीर। एक साधारण स्त्री, हाथों में मिट्टी का कण, आंखों में अनंत हरियाली का सपना, और सीने में संतानहीनता का दर्द। लेकिन वह दर्द न मिटाया, बल्कि पेड़ों की जड़ों में उतार दिया। उन्होंने कभी स्कूल की चौखट नहीं देखी, पर प्रकृति की किताब उनसे ज्यादा किसी ने नहीं पढ़ी। जब समाज उन्हें "निसंतान" कहकर कटाक्ष करता था, तभी उन्होंने वह फैसला किया जिसने उन्हें अमर कर दिया—उन्होंने पेड़ों को अपने बच्चे मान लिया। वे अकसर कहा करती थीं, "मेरे बच्चे छाया देंगे, इसलिए वे मुझसे अधिक जीएँगे।"

थिमक्का का जन्म 30 जून 1911 को हुआ था—तुमकुर जिले के गुम्मी गांव में, एक गरीब परिवार की कोख से। कोई स्कूल की घंटी न सुनी, कोई किताब का स्पर्श न किया। बचपन से ही खदानों में मजदूरी, भेड़-बकरियों को चराना—जीवन की धूल और धूप ही उनकी पहली गुरु बनीं। शादी चिक्का मुद्दप्पा से हुई, एक रेलवे मजदूर से। लेकिन संतान का सुख न मिला। समाज के कटाक्ष चुभते, ताने काटते। "निसंतान," वे चिल्लाते। लेकिन थिमक्का ने आंसू नहीं बहाए—उन्होंने बीज बोए। 1940 के दशक में शुरू हुई यह यात्रा, एक मां की पुकार थी। पति के साथ मिलकर, हुलिकल से कुडुर तक फैली 4.5 किलोमीटर लंबी सड़क पर बरगद के 385 पेड़ लगाए। हर पौधा एक शिशु, हर पानी की बूंद एक दूध की धारा। वे रविवारों को, जब दुनिया सोती, पैदल 4-5 किलोमीटर चलकर पानी ढोतीं। तपती कर्नाटक की धूप में खड़ी होकर मिट्टी सींचतीं, जैसे कोई देवी अपनी संतानों को जीवन का आशीर्वाद दे रही हो।

और संख्या? वह तो सिर्फ आंकड़े हैं। वास्तव में, थिमक्का ने 8,000 से अधिक पेड़ लगाए—नीम, नीलगिरी, शीशम, आकेशिया। हर एक ने मिट्टी को बांधा, हवा को शुद्ध किया, पक्षियों को आश्रय दिया। उनके 'सावलुमाराडा'—कन्नड़ में 'पेड़ों की पंक्ति'—आज भी रामनगर जिले की उस सड़क पर खड़े हैं, यात्रियों को ठंडी छांव देते, माइक्रोक्लाइमेट को संतुलित रखते। शोध बताते हैं कि इन पेड़ों ने मिट्टी कटाव रोका, वर्षा पैटर्न सुधारा, जैव-विविधता बढ़ाई। कीटों का घर, छोटे जीवों का आश्रम—यह सब थिमक्का की ममता का फल है। 1991 में पति के निधन के बाद भी वे न रुकीं। 2020 में हिप सर्जरी, अक्टूबर 2023 से गंभीर अस्थमा—फिर भी, 111वीं जयंती पर, 30 जून 2022 को, डॉ. बी.आर. अंबेडकर भवन में मुस्कुराईं। उनका जीवन कोई साधारण कथा नहीं—एक यज्ञ था, जहां आहुति थी मेहनत, और प्रसाद था हरियाली।

यह मेहनत व्यर्थ न गई। पुरस्कार बरसे जैसे वर्षा। 2019 में पद्मश्री—भारत का चौथा सर्वोच्च नागरिक सम्मान। नेशनल

ग्रीन आर्मी अवॉर्ड, वनमित्र अवॉर्ड, बार्ट ब्रूंस अवॉर्ड, ग्रीनिस्ट आइकन अवॉर्ड। 2016 में बीबीसी ने दुनिया की सबसे प्रभावशाली महिलाओं में गिना। 1999 में डॉक्यूमेंटरी 'तिम्मक्का मतु 284 मक्कालु' बनी, जो अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में चमकी। जब उनसे सम्मान और पुरस्कारों के बारे में पूछा जाता था, तो वे सरलता से कहती थीं—"पेड़ सबसे बड़ा पुरस्कार हैं।" ऐसी विनम्रता आज के दौर में दुर्लभ है, जहाँ लोग छोटे कामों का भी ढोल पीटते हैं।

जब सड़क चौड़ीकरण की योजना बनी, 100 वर्ष की उम्र में वे लड़ीं। तत्कालीन मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री से मिलीं, गुहार लगाई। योजना रद्द। यह जीत सिर्फ पेड़ों की नहीं—पर्यावरण के अधिकार की थी। कर्नाटक सरकार ने उनके नाम पर थिमक्का फाउंडेशन बनाया, जो ग्रामीण महिलाओं को जागरूक करता है। एक बच्ची, जो कूड़े में खेलती थी, आज वन रक्षक बनी। एक किसान, रसायनों का गुलाम, जैविक खेती का स्वामी। ये बदलाव थिमक्का की देन हैं—छोटी कोशिशों से उपजी क्रांति।

थिमक्का.का जाना उस समय हुआ है, जब भारत जलवायु संकट की चपेट में है—समुद्र पीछे हट रहे, तापमान चढ़ रहा, जंगल सिकुड़ रहे, प्रदूषण सांसें लूट रहा— ऐसे समय में थिमक्का.का जीवन हमें याद दिलाता है कि प्रकृति की रक्षा केवल नीतियों का विषय नहीं, बल्कि व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। वनों की कमी से शहर बेजान सांस ले रहे, ग्लोबल वार्मिंग ग्लेशियर निगल रही। ऐसे में, उनकी सोच चमकती है: पर्यावरण कोई 'उत्तरदायित्व' नहीं, 'ममता' है। "पेड़ को बच्चा समझो," वे कहतीं, "वह खुद-ब-खुद बड़ा हो जाएगा।" यह सरल वाक्य क्लाइमेट एक्शन के जटिल सिद्धांतों से कहीं ज्यादा शक्तिशाली। उनके पेड़ों ने साबित किया—एक व्यक्ति शहरी नियोजन बदल सकता है, नीतियां प्रभावित कर सकता है। लेकिन अब सवाल यह: हम क्या करेंगे? थिमक्का का निधन श्रद्धांजलि के शब्दों तक सीमित न रहे। हमें तीन महान सीखें ग्रहण करनी होंगी— पहली, पर्यावरण संरक्षण जीवनशैली है—विशेष दिनों का उत्सव नहीं। प्लास्टिक छोड़ो, पानी बचाओ, हर सांस में प्रकृति को याद करो। दूसरी, बड़े प्रोजेक्ट्स नहीं, छोटी-छोटी लगातार कोशिशें चमत्कार रचती हैं। एक पौधा रोज, एक आदत बदली हर हफ्ते। तीसरी, संकल्प हो तो गरीबी बाधा नहीं बनती।

उनके अंतिम दिनों में, जब बीमारी ने जकड़ लिया, वे बुदबुदाईं: "मुझे दफनाओ मत, पेड़ों के बीच रख दो।" ऐसा ही हुआ। हुलिकल के उन विशाल बरगदों तले, उनकी विदाई एक उत्सव बनी। कर्नाटक के मुख्यमंत्री ने कहा, "वृक्षमाता के जाने से राज्य गरीब हो गया, लेकिन उनका प्रेम अमर रहेगा।" तथ्य यही कहते हैं—उनके पेड़ आज भी हवा को ठंडा करते, धरती को संवारते, जीवन को सहलाते। थिमक्का साधारण थीं, लेकिन उन्होंने धरती को मां की तरह अपनाया—और स्वयं 'धरती की हरित मां' बन गईं।

थिमक्का अशिक्षित थीं, संसाधन-रहित, फिर भी उन्होंने धरती को मां की तरह सींचा। हर व्यक्ति अपने क्षेत्र में 'थिमक्का पथ' बनाए—एक मार्ग जहां पेड़ खड़े हों, जीवन फले-फूले, आशा सांस ले। स्कूलों में उनकी कथा अध्याय बने, ताकि बच्चे जानें: प्रेरणा कर्म से जन्म लेती है, किताबों से नहीं। सरकारें हर शहर में 'थिमक्का ग्रीन जोन' गढ़ें—हरियाली के किले, जहां उनका नाम मिट्टी में घुलकर भी अमर रहे। थिमक्का फाउंडेशन को मजबूत करें, ग्रामीण महिलाओं को योद्धा बनाएं। क्योंकि जलवायु संकट व्यक्तिगत जिम्मेदारी मांगता है—हमारे बहाने अब न चले। उनकी स्मृति में सबसे सार्थक दान? एक पेड़ लगाओ—ऐसा, जिसकी छांव किसी अनजान राहगीर को मिले। क्योंकि उनकी असली विरासत पुरस्कारों में नहीं, न बातों और लेखों में—वह हरित सांस है, जो उनके लगाए पेड़ों की पत्तियों से बहती है। थिमक्का चली गईं, लेकिन उनकी चेतना जाग रही है—हर बीज में, हर कलि में। आओ, इस पुनर्जागरण का हिस्सा बनें। प्रकृति पुकार रही है: मां बनो, योद्धा बनो, अमर बनो।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में महागठबंधन में शामिल दलों की ओछी हरकतें अंततोगत्वा उन्हीं पर पड़ी भरी, जानिए कैसे?

कमलेश पांडेय

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में राजद, कांग्रेस, वीआईपी और उनके सहयोगी वामपंथी दलों की हार के कई प्रमुख कारण हैं। चूंकि इनके नेताओं व उनके खासमखास लोगों ने जानबूझकर एक गुप्त रणनीति के तहत एक दूसरे की बढ़त को रोकने के लिए कुछ ओछी चालें चलीं जो अब खुद उनपर ही भारी पड़ चुकी हैं जिनका विस्तृत विश्लेषण अग्रांकित है:-

पहला, यादवों को अत्यधिक टिकट देने की रणनीति:

राजद ने यादव बहुल सीटों पर अधिकतर यादव उम्मीदवार उतारे, जिससे एनडीए ने बड़ी संख्या में यादव बहुल सीटें जीत लीं; जबकि राजद का प्रदर्शन बेहद कमजोर रहा। यह यादव वोट के बंटाव का नतीजा और एनडीए के मजबूत अभियान का फलक रहा। राजनीतिक विश्लेषक बताते हैं कि खेतिहर और दुधारू जाति यादवों में बड़े पैमाने पर राम-कृष्ण भक्त पाए जाते हैं जो अब हिंदुत्व के प्रबल पक्षधर के रूप में गोलबंद हुए हैं। इससे यूपी-बिहार में राष्ट्रवादी समाजवाद को मजबूती मिली है, जबकि सेक्युलर समाजवाद धराशायी हो चुका है।

दूसरा, ईबीसी और सहयोगी पार्टियों की नाकामी:

महागठबंधन की सहयोगी पार्टियां खासकर कांग्रेस का संगठन कमजोर और टिकट वितरण गलत था। यही वजह है कि कांग्रेस को महज छह सीट मिली, क्योंकि पार्टी के अंदर विद्रोह और असंतोष दिखा और बूथ स्तर पर उनकी उपस्थिति भी न्यूनतम रही। वहीं, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी का चुनाव प्रचार भी डिप्लोमैटिक नहीं समझा गया। वहीं, वामपंथियों की समाप्त हो रही विश्वसनीयता और सियासी प्रासंगिकता से भी महागठबंधन का मजबूत सहयोगी राजद-कांग्रेस गच्चा खा गई।

तीसरा, मुस्लिम तुष्टिकरण का नकारात्मक असर:

महागठबंधन की मुस्लिम समर्थक छवि ने भी असर डाला, जिससे सीमांचल तक में हार मिली। राजद और कांग्रेस आजतक यह नहीं समझ पाए कि वो जितनी मुस्लिम सरपरस्ती दिखाएंगे, उतना ज्यादा हिन्दू समाज गोलबंद होगा। ऐसा इसलिए कि जहां पर मुस्लिम बहुतायत में हैं, वहां पर सभी हिंदुओं की नाक में दम किये रहते हैं। इसलिए पीएम नरेंद्र मोदी ने नारा दिया था कि एक हैं तो सेफ हैं। जबकि इससे पहले यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने साफ कहा था कि बंटोगे तो कटोगे। इससे हिन्दू जनमानस गोलबंद होता जा रहा है। कश्मीर हिंसा, पाकिस्तान का षड्यंत्र और बंगलादेश का नया पैंतरा ग्रेटर बंगलादेश से भी हिंदुओं की एकजुटता बढ़ रही है।

चतुर्थ, राजद के 'जंगलराज' की छवि से बिहार के मतदाता भयभीत:

बिहार में 2015 में नीतीश कुमार की मदद से और 2020 में पढ़ाई, कमाई और दवाई का वायदा करके राजद ने अपनी स्थिति काफी मजबूत कर ली थी। वह बिहार की सबसे बड़ी पार्टी बन चुकी थी। इसलिए उसने कांग्रेस को भी झुका दिया और तेजस्वी को मुख्यमंत्री का उम्मीदवार मनवा लिया। इससे परेशान बीजेपी ने राजद की जंगलराज की छवि पुनः गढ़कर राजद समेत विपक्ष को कमजोर किया। क्योंकि बीजेपी को इस बात का डर था कि मजबूत राजद या विपक्ष से जदयू के छिटकने का भय पूरे पांच साल बना रहेगा। इस बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने भाषणों में जो 'राजद द्वारा कांग्रेस की कनपट्टी पर कट्टा सटाकर तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार मनवाने की बात' कही, उसपर लोगों को सहसा विश्वास हो गया। क्योंकि 1990-2005 की घटनाएं 40 प्लस के लोगों के दिलोदिमाग में तरोताजा हो गईं और उन्होंने अपने युवाओं-महिलाओं के मूड को बदल दिया।

पंचम, महिलाओं और युवाओं का समर्थन एनडीए की ओर:

इस चुनाव में महिलाओं ने ज्यादा मतदान किया, क्योंकि उनके लिए नीतीश कुमार द्वारा विगत 20 वर्षों में कई महिला कल्याण की योजनाएं ब्रेक के बाद चलाई गई थीं जो बेहद प्रभावी रहीं। इससे नीतीश कुमार और बीजेपी दोनों को फायदा हुआ, क्योंकि सभी योजनाएं एनडीए सरकार के कार्यकाल में चलाई गई थीं।

पं०गोपबंधु टाउन हॉल सरायकेला में मना बिरसा जयंती सह स्थापना दिवस

सांसद जोवा की उपस्थिति में छऊ, सांथाली , ओड़िशी नृत्य का रंगारंग आयोजन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती और झारखंड राज्य स्थापना के 25वें वर्ष के अवसर पर जिला स्तरीय समारोह का आयोजन ऊत्कलमणी गोपबंधू टाउन हॉल मे किया गया। इस कार्यक्रम में सांसद, सिंहभूम श्रीमती जोबा मांझी उपस्थिति रहीं। वही उपायुक्त नितिश कुमार सिंह, पुलिस अधीक्षक मुकेश लुणायत, उप विकास आयुक्त रीना हांसदा, विभिन्न विभागों के पदाधिकारी, कर्मचारी और आम नागरिक उपस्थित थे।

समारोह में झारखंड की लोक संस्कृति और परंपराओं पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं। प्रमुख आकर्षण सरायकेला छऊ नृत्य, शास्त्रीय ओडिशी नृत्य और संथाली बैंड रही। इस दौरान राज्य स्तर पर आयोजित कार्यक्रम का सीधा प्रसारण भी दिखाया गया।

सांसद जोबा मांझी ने अपने संबोधन में जिलेवासियों को भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती और झारखंड राज्य स्थापना दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि झारखंड आज 25वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। उन्होंने सभी से राज्य के सर्वांगीण विकास और सामाजिक-आर्थिक प्रगति में सक्रिय सहभागिता की अपील की और योजनाओं के समन्वय, पारदर्शिता और प्रभावी क्रियान्वयन पर बल दिया।

उपायुक्त नितिश कुमार सिंह ने अपने संबोधन में समस्त जिलेवासियों को भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती एवं झारखंड राज्य के 25वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दी। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा और सड़क निर्माण जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है और जिला प्रशासन समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण तरीके से सभी विकास योजनाओं और जनकल्याणकारी कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में प्रतिबद्ध है।

पुलिस अधीक्षक मुकेश लुणायत ने जिलेवासियों को भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती और झारखंड राज्य स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि यह दिवस झारखंड के क्रांतिकारी आंदोलनकारियों और राज्य निर्माण के लिए योगदान देने वाले महापुरुषों को स्मरण और सम्मान करने का अवसर है। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि किसी भी प्रकार की समस्या या शांति-व्यवस्था से संबंधित स्थिति होने पर तुरंत पुलिस या जिला प्रशासन से संपर्क करें।

कार्यक्रम के दौरान माननीया सांसद जोबा मांझी द्वारा दो चौकीदारों के आश्रितों को अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति पत्र प्रदान किया गया। साथ ही, जिले के पांच चिन्हित झारखंड आंदोलनकारियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। समारोह के अंत में जेएसेलपीएस की उन संकुल संगठनों को भी सम्मानित किया गया, जिन्होंने वित्तीय अनुशासन, सामुदायिक सहभागिता और जनजागरूकता में उत्कृष्ट कार्य किया है।

मनोरंजन ऐप्स की अंधी दौड़ और बढ़ती अश्लीलता

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स तेज़ मुनाफ़े की दौड़ में कला, संवेदनशीलता और सामाजिक मूल्यों को पीछे छोड़ते हुए अश्लीलता को नया 'मनोरंजन' बना रहे हैं — इसका दुष्प्रभाव विशेषकर युवाओं की मानसिकता पर गहरा और खतरनाक है।

- डॉ सत्यवान सौरभ

डिजिटल क्रांति ने जिस तेज़ी से दुनिया को बदला है, उतनी ही तीव्रता से उसने हमारे मनोरंजन के साधनों को भी प्रभावित किया है। मोबाइल फोन, इंटरनेट और सस्ते डेटा ने मनोरंजन को घरों से निकलकर सीधा हर व्यक्ति की जेब और हाथों तक पहुँचा दिया है। आज सैकड़ों एंटरटेनमेंट ऐप्स—वेब सीरीज़, शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया स्ट्रीमिंग और लाइव शो—हर सेकंड दर्शकों का ध्यान खींचने की होड़ में हैं। यह सुविधा जितनी शानदार लगती है, उतनी ही गहरी चिंताओं को भी जन्म देती है। क्योंकि इसी आसानी ने मनोरंजन की परिभाषा को खतरनाक रूप से बदल दिया है। अब मनोरंजन का अर्थ कला, संस्कृति, कहानी या संवेदनशीलता नहीं रह गया है—बल्कि तेज़ व्यूज़, वायरल कंटेंट और उत्तेजक दृश्यों की अंधी प्रतिस्पर्धा बन गया है।

आज स्थिति यह है कि अनेक ऐप्स जान-बूझकर अश्लीलता, फूहड़ हरकतों, भद्दे संवादों और उत्तेजक दृश्यों को परोस रहे हैं। यह सामग्री न तो किसी रचनात्मकता की मिसाल है और न ही इससे समाजिक चेतना का विस्तार होता है। इसके पीछे केवल एक लक्ष्य है—तेज़ी से अधिक दर्शक, और इन दर्शकों के माध्यम से विज्ञापन व सब्सक्रिप्शन से होने वाला मुनाफ़ा। मनोरंजन उद्योग ऐसे मोड़ पर आ खड़ा हुआ है जहाँ कला और संस्कृति की प्रतिष्ठा आर्थिक लालच के सामने निरर्थक होती जा रही है।

कभी भारतीय सिनेमा, थियेटर और साहित्य समाज के जीवन-मूल्यों को सहेजने का माध्यम माने जाते थे। कहानी, संवाद, अभिनय और कल्पना की शक्ति दर्शकों को सोचने पर मजबूर करती थी। आज डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स ने इसका बिल्कुल उल्टा माहौल तैयार कर दिया है। वेब सीरीज़ और शॉर्ट वीडियो में आपत्तिजनक भाषा, निर्बाध अश्लीलता और अनावश्यक अंतरंग दृश्यों को ऐसे दिखाया जा रहा है जैसे यही "आधुनिकता" या "यथार्थवाद" हो। जबकि सच्चाई यह है कि यह यथार्थ नहीं, बल्कि एक जानबूझकर पैदा किया गया भ्रम है—जिसमें दर्शक को उत्तेजना व सनसनी के माध्यम से बांधकर रखा जाए।

इस दौड़ की सबसे बड़ी कीमत युवा पीढ़ी चुका रही है। किशोरों के हाथ में मोबाइल है और मोबाइल के अंदर ऐसी दुनिया है जो बिना किसी रोक-टोक के उन्हें प्रभावित कर रही है। किशोरावस्था वह समय होता है जब व्यक्तित्व, सोच, नैतिकता और सामाजिक मूल्य बनते हैं। लेकिन इन ऐप्स पर उपलब्ध सामग्री उन्हें तेज़-तर्रार, उथला और अक्सर भ्रमित कर देने वाला दृष्टिकोण देती है। संबंधों के प्रति गलत धारणाएँ बनती हैं, महिलाओं के प्रति सम्मान घटता है, और जीवन को केवल शारीरिक आकर्षण, भौतिकता और दिखावे के रूप में समझने की प्रवृत्ति बढ़ती है।

आज का युवा जिस प्रकार की सामग्री रोज़ देख रहा है, वह उसके व्यवहार, शब्दों, संवेदनाओं और जीवन के आकलन को धीरे-धीरे बदल रही है। जिस चीज़ को वह "मनोरंजन" या "ट्रेंड" समझ रहा है, वह वास्तव में उनके भीतर मूल्यहीनता और अवसाद पैदा कर रही है। कई मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि इस प्रकार का कंटेंट आँखों को आकर्षित भले करे, लेकिन दिमाग पर भारी बोझ डालता है। तेज़–तेज़ दृश्यों, अश्लील संवादों, अनियंत्रित भावनाओं और आक्रामक प्रस्तुतियों से किसी भी किशोर का मानसिक संतुलन प्रभावित होना स्वाभाविक है।

लेकिन समस्या का एक और पहलू भी है—कंटेंट निर्माता और ऐप कंपनियाँ ज़िम्मेदारी से बचने के लिए 'यूज़र चॉइस', 'एडल्ट टैग' या 'व्यूअर डिस्क्रेशन' जैसे शब्दों का सहारा लेती हैं। वे यह कहती हैं कि दर्शक स्वयं चयन करें कि वे क्या देखना चाहते हैं। यह तर्क पूरी तरह गलत नहीं, लेकिन अधूरा अवश्य है। क्योंकि जब कोई ऐप अपनी पूरी मार्केटिंग रणनीति ही उत्तेजक और भड़काऊ सामग्री पर आधारित रखता है, तब दर्शक का चुनाव स्वतंत्र कम और प्रभावित अधिक होता है। जिस सामग्री को लगातार प्रमोट किया जाएगा, वही अधिक देखी जाएगी।

नियामक तंत्र की स्थिति भी उतनी ही कमज़ोर है। भारत में फिल्मों के लिए सेंसर बोर्ड है, टीवी के लिए प्रसारण नियंत्रण है, लेकिन डिजिटल ऐप्स लगभग बिना किसी प्रभावी नियंत्रण के चल रहे हैं। दिशा-निर्देश तो बनाए गए हैं, पर उनका पालन न तो कठोर है और न ही नियमित। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स को लगता है कि वे आम मीडिया कानूनों से ऊपर हैं। उनका तर्क है कि इंटरनेट एक "स्वतंत्र माध्यम" है। लेकिन क्या स्वतंत्रता का अर्थ यह है कि समाजिक संतुलन को बिगाड़ने वाली सामग्री को खुली छूट दे दी जाए? क्या संस्कृति, नैतिकता और संवेदनाओं को नज़रअंदाज़ कर देना ही स्वतंत्रता है?

> आज का युवा जिस प्रकार की सामग्री रोज़ देख रहा है, वह उसके व्यवहार, शब्दों, संवेदनाओं और जीवन के आकलन को धीरे-धीरे बदल रही है। जिस चीज़ को वह "मनोरंजन" या "ट्रेंड" समझ रहा है, वह वास्तव में उनके भीतर मूल्यहीनता और अवसाद पैदा कर रही है। कई मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि इस प्रकार का कंटेंट आँखों को आकर्षित भले करे, लेकिन दिमाग पर भारी बोझ डालता है। तेज़–तेज़ दृश्यों, अश्लील संवादों, अनियंत्रित भावनाओं और आक्रामक प्रस्तुतियों से किसी भी किशोर का मानसिक संतुलन प्रभावित होना स्वाभाविक है।

समस्या का एक सामाजिक आयाम भी है। परिवार अपने स्तर पर बच्चों को रोकने की कोशिश करते हैं, लेकिन डिजिटल दुनिया की जटिलता इतनी है कि पूरी तरह नियंत्रण लगभग असंभव है। विशेषकर मध्यम वर्गीय और ग्रामीण परिवारों में डिजिटल साक्षरता अभी विकसित नहीं हुई है। माता-पिता यह नहीं जानते कि कौन-सा कंटेंट बच्चों के लिए अच्छा है और कौन-सा हानिकारक। ऐप कंपनियाँ भी माता-पिता को मार्गदर्शन देने के बजाय उनका उपयोगकर्ता विस्तार करने में अधिक रुचि रखती हैं।

ऐसे समय में हमें यह समझना होगा कि समाधान केवल प्रतिबंधों में नहीं है। समाधान एक व्यापक सामाजिक जागरूकता, नैतिक उत्पादन नीति और कड़े नियमन के संतुलन में है। मनोरंजन कंपनियाँ स्वयं यह तय करें कि क्या दिखाना उचित है। वे कला और व्यावसायिकता के बीच संतुलन बनाएं। अश्लीलता के सहारे व्यूज़ पाने की आदत छोड़ें और रचनात्मक, भावनात्मक तथा सामाजिक रूप से उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करें।

साथ ही, सरकार को डिजिटल प्लेटफार्मों पर वैसा ही नैतिक नियंत्रण लागू करना होगा जैसा टीवी या फिल्मों पर होता है। पारदर्शी नियम, कठोर दंड और स्पष्ट श्रेणीकरण इस दिशा में आवश्यक कदम हो सकते हैं।

समाज का कर्तव्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है। अभिभावकों को डिजिटल साक्षरता दी जानी चाहिए। युवाओं को यह समझाया जाना चाहिए कि मनोरंजन और उत्तेजना में बहुत अंतर होता है। फूहड़ता से मिली त्वरित प्रसन्नता जीवन के गहरे अनुभवों और रचनात्मक आनंद का विकल्प नहीं हो सकती।

मनोरंजन का उद्देश्य केवल चौंकाना या उत्तेजित करना नहीं है; उसका उद्देश्य मन को संवेदनशील बनाना, सोच को गहराई देना और समाज को बेहतर दिशा देना है। लेकिन जब ऐप्स की दुनिया कला को छोड़कर अश्लीलता की ओर भागने लगे, तब संस्कृति और सभ्यता दोनों संकट में पड़ती हैं।

हमारे सामने आज यही प्रश्न है—क्या हम ऐसी डिजिटल दुनिया चाहते हैं जहाँ मनोरंजन का आधार रचनात्मकता, सांस्कृतिक मूल्य और सामाजिक ज़िम्मेदारी हो? या हम ऐसे युग में प्रवेश करने जा रहे हैं जहाँ उत्तेजना ही कला बन जाएगी और सनसनी ही मनोरंजन?

समय की मांग है कि हम स्पष्ट रूप से कहें: हमें मनोरंजन चाहिए—लेकिन ऐसा नहीं जो समाज को खोखला कर दे।

अगर डिजिटल दुनिया इस दिशा में नहीं बदली, तो आने वाली पीढ़ियाँ एक ऐसे सांस्कृतिक अंधकार में प्रवेश करेंगी, जहाँ मनोरंजन तो बहुत होगा, पर उसका कोई अर्थ नहीं बचेगा।

मुख्यमंत्री से मिले जय ढोलकिया

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: नुआपाड़ा से नवनिर्वाचित भाजपा विधायक जय ढोलकिया ने मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी से मुलाकात की। भुवनेश्वर स्थित प्रदेश कार्यालय में जय का भव्य स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री ने जय का स्वागत किया और उन्हें जीत की बधाई दी। जय अपनी माँ के साथ प्रदेश कार्यालय पहुँचे।वहाँ अध्यक्ष मनमोहन सामल और अन्य विधायकों व वरिष्ठ नेताओं ने उनका स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि नुआपाड़ा की जनता ने मात्र 16 महीने की सरकार में विश्वास और भरोसा रखकर भाजपा उम्मीदवारों को चुना है। यह हमारे लिए बहुत बड़ी बात है। जय ढोलकिया 83 हज़ार से ज़्यादा वोटों से जीते हैं।

बीजद और कांग्रेस के लिए खतरे की घंटी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: 'बीजद में उम्मीदवारों का कोई महत्व नहीं है। कोई कहीं से चुनाव लड़ रहा है, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। आख़िरकार, वोट तो नवीन पटनायक और शंख चिह्न के नाम पर ही है।' बीजद इस ग़लतफ़हमी से उबर नहीं पाई है। २०२४ में इसी सोच के इर्द-गिर्द रणनीति बनाकर पार्टी कई सीटों पर नाकाम रही।दोहराया गया। बीजद पहली बार चुनाव में तीसरे स्थान पर खिसक गई। नवीन का जादू नहीं चला। यह साबित हो गया कि अब नवीन के नाम पर वोट नहीं है। कांग्रेस राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा की मुख्य प्रतिद्वंद्वी बन गई। ऐसी धारणा है कि ओडिशा में भी कांग्रेस मुख्य विपक्षी दल की भूमिका से पीछे हट गई है। यह सच है कि पीसीसी अध्यक्ष भक्तचरण दास के नेतृत्व में कांग्रेस सक्रिय हुई है, लेकिन वोट की राजनीति में कांग्रेस का प्रदर्शन बिल्कुल भी नहीं सुधरा है। नुआपाड़ा से यह स्पष्ट हो गया कि चुनावी रणनीति में कांग्रेस की विफलता जारी है।

नुआपाड़ा उपचुनाव के नतीजों को लेकर राजनीतिक हलकों में ऐसे ही कयास लगाए जा रहे हैं। इस उपचुनाव में भाजपा उम्मीदवार जय ढोलकिया ने एकतरफा जीत हासिल की। आमतौर पर उपचुनाव के नतीजे सत्ताधारी दल के पक्ष में जाते हैं। हाल के दिनों में हुए सभी उपचुनावों में, एक को छोड़कर, सत्ताधारी दल को ही जीत मिली है। शुरू से ही लग रहा था कि नुआपाड़ा में भी यही दोहराया जाएगा। बीजद के इकलौते विधायक राजेंद्र ढोलकिया के बेटे जय ढोलकिया को मैदान में उतारकर भाजपा एक आनोरथी रणनीति बनाती दिख रही थी। इतना ही नहीं, मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी समेत राज्य के सभी मंत्री और 50 से ज़्यादा विधायक नुआपाड़ा में मौजूद रहे और प्रचार में शामिल हुए। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री ने भी प्रचार किया। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल ख़ुद मौजूद रहे और प्रचार को गति दी। सत्ता में आने के बाद भाजपा ने अपनी पहली परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन किया है। हालाँकि, भाजपा की बड़ी जीत की ज़्यादा चर्चा नहीं हो रही है, लेकिन बीजद और कांग्रेस की कमज़ोर रणनीति और निराशाजनक प्रदर्शन की आलोचना ज़्यादा हो रही है।

२०२४ में सत्ता गंवाने के बाद, बीजद ने पहला चुनाव लड़ा। लेकिन जय ढोलकिया के भाजपा में शामिल होने के बाद, पार्टी को उम्मीदवार के संकट का सामना करना पड़ रहा था। हालाँकि नुआपाड़ा में कई उम्मीदवार थे, फिर भी पार्टी ने अताविरा से स्नेहांगिनी छुरिया को मैदान में उतारा। हालाँकि, स्नेहांगिनी का नुआपाड़ा में कोई प्रभाव नहीं है और न ही कोई ऐसा व्यक्तित्व है जो मतदाताओं को आकर्षित कर सके। जब उन्हें उम्मीदवार घोषित किया गया था, तब अनुमान लगाया जा रहा था कि बीजद निश्चित रूप से तीसरे स्थान पर आएगी। हालाँकि, बीजद के अग्रणी नेताओं ने नुआपाड़ा जाकर स्नेहांगिनी के प्रचार को प्रत्यक्ष रूप दिया। प्रचार में बीजद भाजपा के करीब थी। लेकिन वह वोटों में तब्दील नहीं हो सका। नवीन ख़ुद पिछले 10 सालों में मुख्यमंत्री रहते हुए किसी भी उपचुनाव में प्रचार करने नहीं गए हैं। लेकिन यहाँ नवीन की छवि दांव पर थी। नवीन दो बार नुआपाड़ा प्रचार करने गए। बढ़ती उम्र के कारण उनकी शारीरिक बीमारियाँ बढ़ती जा रही थीं। इसके बावजूद, नवीन नुआपाड़ा गए। बीजद को लगा था कि लोग नवीन के प्रति संवेदनशील होंगे। अगर नवीन हाथ हिलाएँगे, तो वोटों की बारिश होगी। लेकिन यह धारणा गलत साबित हुई। लोग नवीन को देखने के लिए उत्सुक थे, लेकिन नवीन के नाम पर अब वोट न होना नुआपाड़ा की जनता के वोट का संकेत है।

जय ढोलकिया के भाजपा में शामिल होने के बाद, बीजद ने अचानक उन पर निजी हमला बोल दिया। पार्टी के वरिष्ठ नेता लगातार यह कहते हुए बयानबाजी करते रहे कि वह राजू ढोलकिया के दत्तक पुत्र हैं। लेकिन यह स्वीकार्य नहीं था। कुछ नेताओं ने दावा किया कि भाजपा ने उम्मीदवारों की चोरी की है। नवीन ने ख़ुद चुनावी मंच पर यही बात दोहराई। उन्होंने जय की बेईमानी का मुद्दा उठाया। लेकिन उम्मीदवार चोरी और बेईमानी के मुद्दे पर बीजद बैकफुट पर आ गया। भाजपा ने बीजेपुर उपचुनाव में एक असंतुष्ट कांग्रेस विधायक की पत्नी को मैदान में उतारने और २०१९ में काकटपुर में भाजपा उम्मीदवार को बीजद का टिकट देने जैसे मुद्दे उठाए, जिससे बीजद को नुकसान हुआ।

राउरकेला को पूर्ण जिला घोषित किया जाए - डॉ राजकुमार यादव

ओडिशा की प्रगति का नया अध्याय

भुवनेश्वर: राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) ओडिशा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने राउरकेला को पूर्ण जिला का दर्जा प्रदान करने को केंद्र एवं राज्य सरकार से तत्काल मांग की है। उन्होंने कहा कि राउरकेला, जो ओडिशा का तीसरा सबसे बड़ा शहरी समूह है, लंबे समय से प्रशासनिक उपेक्षा का शिकार रहा है। यदि इसे अलग जिला बनाया जाता है, तो न केवल स्थानीय विकास को गति मिलेगी, बल्कि पूरे पश्चिमी ओडिशा क्षेत्र की आर्थिक व सामाजिक प्रगति पूर्णरूप से सुनिश्चित होगी। यह मांग केवल एक राजनीतिक प्रस्ताव नहीं, बल्कि लाखों नागरिकों की आकांक्षा का प्रतिबिंब है, जो राउरकेला की अपार क्षमताओं को पहचानने का आह्वान करती है।

राउरकेला, सुंदरगढ़ जिले का एक प्रमुख हिस्सा, वास्तव में एक स्वतंत्र इकाई के रूप में विकसित हो चुका है। 2025 में इसकी जनसंख्या अनुमानित 6.77 लाख से अधिक है, जो 1950 के मात्र 45,526 से 14 गुना से ज्यादा की वृद्धि दर्शाती है। 2011 की जनगणना के अनुसार, शहर की जनसंख्या 5.53 लाख थी, जिसमें 54% पुरुष और 46% महिलाएं शामिल हैं, जो एक संतुलित एवं गतिशील समाज की तस्वीर पेश करती है। घनत्व 6,696 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है, जो इसकी शहरीकरण की गति को रेखांकित करता है। आर्थिक मोर्चे पर, राउरकेला ओडिशा का 'स्टीलसिटी' के रूप में जाना जाता है, जहां भारत का सबसे बड़ा एकीकृत स्टील प्लांट (आरएसपी) स्थित है। यह प्लांट न केवल लाखों लोगों को परोक्ष व अपरोक्ष रूप से रोजगार प्रदान करता है, बल्कि राज्य की जीडीपी में महत्वपूर्ण योगदान देता है। राउरकेला की प्रति व्यक्ति आय ओडिशा के अन्य क्षेत्रों से सबसे अधिक है, जो इस शहर को औद्योगिक केंद्र के रूप में स्थापित करती है। इसके अलावा, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) राउरकेला जैसे शैक्षणिक संस्थान इसे शिक्षा का हब बनाते हैं, जहां 2025 तक 600 से अधिक व्यक्तियों वाली सौर ऊर्जा आधारित कोल्ड-स्टोरेज परियोजनाएं जैसी नवीन पहलें कृषि एवं बाजार को मजबूत कर रही हैं।

डॉ. यादव ने जोर देकर कहा कि सुंदरगढ़ जिले के विशाल क्षेत्र (9,682 वर्ग किलोमीटर) में राउरकेला की सीमित भूमिका (लगभग 200 वर्ग किलोमीटर) प्रशासनिक जटिलताओं को जन्म दे रही है। वर्तमान व्यवस्था में विकास योजनाओं का क्रियान्वयन धीमा पड़ जाता है, जिससे स्वास्थ्य, शिक्षा एवं बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्र प्रभावित होते हैं। उदाहरणस्वरूप, राउरकेला सरकारी अस्पताल (आरजीएच) की विस्तार योजनाएं भूमि की कमी से बाधित हैं।

हाल के वर्षों में, अलग जिले की मांग तेज हो गई है—अक्टूबर 2025 में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए, जहां अनारक्षित लोकसभा सीट सहित पूर्ण जिला दर्जे की अपील की गई। ओडिशा सरकार को 2024 तक 28 नए जिलों की मांगें प्राप्त हो चुकी हैं, जिसमें राउरकेला प्रमुख है, हालांकि कुछ विरोध भी दर्ज हुए हैं। राजस्व मंत्री सुरेश पुजारी ने मार्च 2025 में स्वयं स्वीकार किया कि राउरकेला के मुद्दों को विभिन्न विभागों से संबोधित करने की आवश्यकता है।

₹राउरकेला को अलग जिला बनाना केवल प्रशासनिक सुधार नहीं, बल्कि पश्चिमी ओडिशा के कोसल क्षेत्र की सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान को मजबूत करने का कदम होगा,₹ डॉ. यादव ने कहा। उन्होंने 2022 में मुख्यमंत्री नवीन पटनायक द्वारा पद्मपुर के लिए जिला घोषणा का हवाला देते हुए कहा कि इसी प्रकार राउरकेला, राजगंगपुर एवं रायरंगपुर जैसे स्थानों के लिए भी तत्काल कार्रवाई होनी चाहिए। एनसीपी प्रदेश कार्यकारिणी की ओर से डॉ. यादव ने राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंपने की घोषणा की है, साथ ही जन जागरण अभियान शुरू करने का ऐलान किया।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ओडिशा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने अंत में अपील की: "राउरकेला की क्षमता को बंधन में न रखें। इसे पूर्ण जिला बनाकर ओडिशा की विकास यात्रा को नई ऊंचाइयों पर ले जाएं। लाखों नागरिकों का भविष्य इंतजार कर रहा है—समय आ गया है कि सरकार समय रहते जायज मांग को सुन ले!"

बिहार में नीतीश का जादू बरकरार

बरुण कुमार सिंह

बिहार में मुकाबला मुख्य रूप से जदयू के नेता और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व वाले सत्तारूढ़ एनडीए और राजद के तेजस्वी यादव के नेतृत्व वाले विपक्षी महागठबंधन के बीच था। इस बार प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी को भी बड़ा झटका लगा है। बिहार विधानसभा चुनाव-2025 के एक्जिट पोल नतीजे के बाद जो आश्चर्यकारी परिणाम आये हैं, उसकी गूंज आने वाले पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनाव में स्पष्ट रूप से दिखायी देगी। लोकतंत्र के इस मंदिर की चौखट पर विराजमान दृश्य कुछ ऐसा है जिसमें हालात किसी एक पार्टी तक ही सीमित नहीं बल्कि सभी प्रमुख दलों में टिकटों की दावेदारी में राजद व कांग्रेस और जदयु व भाजपा, लोजपा और इसके साथ ही कोई भी अन्य दल इनसे अछूता नहीं है। 10,000 रुपये महिलाओं के खाते में भेजने के कारण महिला मतदाताओं का प्रतिशत बढ़ा और उन्होंने नीतीश सरकार के लिए जमकर मतदान किया जो आज के चुनाव परिणाम में दिखाई दे रहे हैं, इस चुनाव परिणाम ने सारे एग्जिट पोल को झुठला दिया। इस चुनाव परिणाम ने जदयु, भाजपा एनडीए गठबंधन की सत्ता को बरकरार रखा बल्कि उनकी ताकत एवं सीटों में इजाफा पहले से बहुत ही बेहतर हुआ है। चुनाव परिणाम ने साबित कर दिया कि नीतीश का जादू अभी भी बिहार में बरक़रार है।

बिहार विधानसभा चुनावों के नतीजों ने जनता के बदलते मन-मिजाज की एक झलक पेश की है। ताजा चुनाव परिणाम शायद इसी ओर इशारा कर रही है कि कुल मिलाकर जदयु, बीजेपी एवं एनडीए के लिए एक बड़ी सफलता है। क्या पीएम मोदी बिहार की अर्थव्यवस्था को लेकर कोई बड़ा फैसला करेंगे और इसके साथ ही अब वह क्या रणनीति अपनाएंगे, यह आनेवाले दिनों में पता चलेगा। विधानसभा चुनाव में जनता स्थानीय मुद्दों को ज्यादा तवज्जो देती है। बीजेपी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के व्यक्तिगत करिश्मे के सहारे चुनाव दर चुनाव जीत रही है और मोदी का वह करिश्मा बिहार में भी आश्चर्यकारी परिणाम लाये हैं क्योंकि बिहार में सुशील मोदी के निधन के बाद उनके स्तर का नेता आज भी नहीं है। ताजा चुनाव नतीजों को नीतीश भाजपा की गठबंधन सरकार के कामकाज पर टिप्पणी की तरह ही देखा जाएगा।

प्रधानमंत्री मोदी और अमित शाह की दर्जनों रैलियां बताती हैं कि एनडीए इस चुनाव को लेकर कितना संवेदनशील है क्योंकि इसका असर पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में भी असर देखने को मिलेगा। नीतीश कुमार का प्रदर्शन पहले से बेहतर हुआ है, खास तौर पर महिलाओं की वजह से, लेकिन मुख्यमंत्री पद को लेकर उनका नाम औपचारिक रूप से घोषित नहीं किया गया। इससे उनका वोटर कुछ असहज रहा। राजद महागठबंधन का स्तर बहुत मुश्किल भरा रहा है, आरजेडी अपने पिछले प्रदर्शन को भी कायम

नहीं रख सकी 1 नंबर से वह 3 नंबर पर पहुँच गई, इस बार का उसका प्रदर्शन बेहद ही निराशाजनक रहा, उसके मुद्दे और वायदे जनता को पिछली बार की तरह नहीं आकर्षित कर पाई। सत्ता में उसकी आने की कोशिश और पीछे चली गई। पिछली बार आरजेडी ने 75 सीटें जीती थीं, जो आज 28 सीटों पर सिमट कर रह गई। सरकारी नौकरियां, माई बहन योजना, 30000 रुपये महिलाओं को सरकार बनते ही एकमुश्त देने की घोषणा एवं आजीविका दीदी को पक्की नौकरी और उनकी वेतन 30000 रुपये तक करने का वायदा भी कुछ खास असर नहीं कर पाया।

जनसुराज पार्टी की स्थिति मोटे तौर पर निराशाजनक ही कही जाएगी, क्योंकि वह पार्टी अपना खाता तक नहीं खोल पाई। प्रशांत किशोर खुद कहते रहे हैं कि या तो अर्श पर होंगे या फर्श पर। अगर नतीजे उनके पक्ष में नहीं आए वे इसे अपने बयान की पुष्टि ही मानेंगे। प्रशांत किशोर ने शुरुआत में कहा था कि वे राघोपुर से चुनाव लड़ेंगे, लेकिन बाद में पीछे हट गए, इससे उनके कार्यकर्ता निराश हुए, जब नेता ही मैदान छोड़ दे, तो कैडर का मनोबल गिरना स्वाभाविक है। महागठबंधन में भी तालमेल की कमी दिखी। चुनाव से दस दिन पहले तक पार्टियों में बातचीत नहीं हो रही थी।

पिछली बार के मुकाबले नीतीश कुमार की सीटें बढ़ी, एनडीए के भाजपा सहित सभी दलों ने अपना स्ट्राइक रेट बेहतर किया है। पहले के चुनाव में चिराग पासवान नीतीश के विरोध में लड़े थे लेकिन इस बार वह नीतीश के साथ थे, इससे दोनों दलों एवं एनडीए गठबंधन को इसका फायदा मिला। बिहार के लोगों में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के प्रति भरोसा अभी भी बना हुआ है। चुनाव परिणाम ने पूर्व के सारे अनुमान को गलत साबित कर दिया क्योंकि एंटी-इनकंबेंसी का असर घोषित चुनाव परिणाम में स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं पड़ रहा है। बिहार में कुल 67.13 फीसदी का रिकॉर्ड मतदान हुआ लेकिन महिलाओं ने इससे भी आगे बढ़कर 71.78 फीसदी मतदान किया जबकि पुरुषों का मतदान फीसदी 62.98 प्रतिशत रहा। कई जिलों में महिलाओं ने पुरुषों से 10 से 15 फीसदी ज्यादा वोटिंग की। महिलाएं पिछले 15 सालों से लगातार ज्यादा संख्या में वोट कर रही थीं, लेकिन 2025 में उनकी भारी भागीदारी ने सबको चौंका दिया।

अमनदीप मेडिसिटी और उजाला सिग्नस की आपसी सांझेदारी के चलते,सहानुभूति और नवीनतम तकनीक से एक क़ीमती जीवन का किया बचाव -

अमृतसर 15 नवंबर (साहिल बेरी)

एक 25 वर्षीय नौजवान को अमनदीप मेडिसिटी के इमरजेंसी वार्ड में लाया गया । यह नौजवान सड़क दुर्घटना में बहुत बुरी तरह घायल हो गया था उसके सिर छाती और टांगों पर बहुत गहरी चोटें आयी थी एमरजेंसी टीम ने बहुत जल्दी जल्दी सारे हालातों का जायज़ा लेकर उसको कार्डिओ वेस्कलर लैब में भेजा और हड्डियों के डिपार्टमेंट में तुरंत सूचना दी ।ऐसे समय में एक एक सैकेंड बहुत क़ीमती होता है डॉक्टरों की टीम की आपसी बातचीत के बाद यह विश्वास दिलाया गया के सब ठीक होगा ।बिना देरी किए एक्सरे और सिटी स्कैन के बाद ये पता चला के मरीज़ की जान को ख़तरा है ।पता चला कि मरीज़ की खून की नाड़ियों जो दिल की तरफ़ जाती है उसकी पाइप फट चुकी है एक छोटा सा खून का थक्का जिसने उसकी मौत को रोके हुए था ।उस मरीज़ को छाती में भी बहुत गहरी चोट आयी थी और उसकी सांस लेने वाले डायाफ्राम फट चुका थे ।उसकी हड्डी टूट चुकी थी और उसके पेट की खून की नाड़ियाँ फट रही थी ।उसी समय मरीज़ की हालत का जायज़ा लेने के लिए में एक टीम की बैठक बिठा दी गई जिसमें डॉक्टर पंकज गोयल, कार्डिओ वेस्कलर सर्जरन है डॉ नवदीप सिंह नंदा सीनियर कंसल्टेंट और डायरेक्टर डिपार्टमेंट ऑफ़ सर्जरी और डॉ अवतार सिंह डायरेक्टर आर्थोपेडिक्स अमनदीप उजाला ग्रुप ऑफ़ हॉस्पिटलस ने भाग लिया और सबसे पहला प्रयत्न मरीज़ की जान को बचाना था जिसके लिए उसके दिल की ओर जाने वाली नाड़ी को ठीक करना था डॉ पंकज़ गोयल ने बहुत ही आधुनिक तकनीक से उसको सही किया ।यह एक ऐसी तकनीक है जिसमें इस ऑपरेशन को करते वक्त शरीर को खोला नहीं जाता बहुत ही महारत के साथ उसने एक ख़ास तरह की उपकरण शरीर के अंदर रख दिया ।जिससे उसके अंदर की फटे हुए नाड़ी को सिलने में मदद मिली ।परिणामस्वरूप उसकी अंदरूनी खून का बहाव रुक गया ।जब उसके नाड़ियों में से खून बहना रुक गया तो डॉ नवदीप सिंह नंदा ने वाट्स तकनीक के अधीन मरीज़ के डायाफ्राम को पूरी तरह से ही मरम्मत कर दिया ।उसकी टूटी हुई हड्डी को जोड़ दिया और ये सारी की सारी कार्यवाही बहुत ही सफलतापूर्वक ढंग से बिना किसी रुकावट के पूरण कर दी गई

हम बहुत ही धन्यवाद देते हैं इन सब माहिर डॉक्टरों की टीम की ।जिन्होंने अपनी नवीनतम टैक्नोलॉजी से ही पूरे क्षेत्र में एक बहुत ही सराहनीय प्रशंसनीय कार्य किया ।इस नौजवान की जान बचाने में ये एक अद्भुत प्रयास सफल हुआ है।

अमनदीप मेडिसिटी टेक्नोलॉजी ने बहुत ही प्यार सहानुभूति से हर मरीज़ को येयकीन दिलाया के वह सिर्फ़ इलाज कराने नहीं आते हैं बल्कि खुशियाँ ले के जाते है ।यहाँ ये बात तो बहुत ही प्रशंसनीय हैं के अमनदीप ग्रुप ने अब 750 बिस्तरों वाले अस्पताल जहाँ पर 170 से अधिक बहुत ही गुणवान डॉ, छह क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं जिसमें से दो अमृतसार में एक पठानकोट में एक फ़िरोज़पुर में श्रीनगर में और तरण तरन में सफलतापूर्वक अपनी सेवाएँ दे रहे हैं हमें इस बात पर गर्व है कि पिछले कुछ सालों में हमारे इस ग्रुप ने 5, लाख से अधिक मरीज़ों का बख़ूबी इलाज करके नया जीवन देकर उनको ख़ुशहाली दी है।

विधायक डॉ अजय गुप्ता ने फकीर सिंह कॉलोनी में प्रीमिक्स की सड़को के निर्माण कार्य का किया उद्घाटन

अमृतसर, 15 नवंबर (साहिल बेरी)

केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र से विधायक डॉ अजय गुप्ता ने आज फकीर सिंह कॉलोनी के निवासियों से किए गए वादे को पूरा करते हुए इस क्षेत्र की सड़कों के निर्माण कार्य का उद्घाटन किया ।विधायक डॉ अजय गुप्ता ने कहा कि कुछ ही दिन पहले इस क्षेत्र के लोगों को आ रही समस्याएं सुनी गई थी। जिसमें क्षेत्र के लोगों ने टूटी हुई सड़कों के बारे में कहा गया था। उन्होंने कहा कि सड़कों का निर्माण करने से पहले इस क्षेत्र की सीवरेज व्यवस्था को ठीक करवाया गया और स्ट्रीट लाइटे भी लगवाई जा रही है। विधायक डॉ अजय गुप्ता ने कहा कि पहले इन क्षेत्रों के विकास करवाने के लिए किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा कि अब इन क्षेत्रों का तेजी से विकास करवाया जा रहा है।

विधायक डॉ अजय गुप्ता ने कहा कि केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र के लोगों से किए गए

सभी वादों को पूरा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र की सभी सड़कों को प्रिमिक्स से बनवाने के कार्य तेजी से करवाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि सड़कों को बनवाने के कार्य पूरी क्वालिटी के साथ करवाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि सड़कों को बनवाने के कार्य में अगर क्वालिटी में कोई कमी पाई गई तो इसकी जिम्मेदारी नगर निगम अधिकारियों की होगी। उन्होंने कहा कि प्रतिदिन लोगों के बीच जाकर उनकी समस्याओं को सुनकर हल करवाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जनता की हर मूलभूत सुविधा को प्राथमिकता दी जा रही है और किसी भी कार्य में कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने कहा कि जनता की सुविधा और कल्याण के लिए सभी विकास कार्यों को तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है।

विधायक डॉ अजय गुप्ता ने कहा कि आम आदमी पार्टी की जनहितेशी नीतियों के मध्य नजर केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र में रिवायती पार्टियों को छोड़कर लोग ₹आप₹ का दामन थाम रहे हैं। जिससे आम आदमी पार्टी का परिवार लगातार बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता सुरेंदर केबलानी अपने साथियों सहित आम आदमी पार्टी में शामिल हो गए हैं। जिसका वह स्वागत करते हैं।इस अवसर पर ब्लॉक इंचार्ज गुरदास सिंध, रितु महाजन, दिलबाग सिंह, साहिब सिंह, विक्की कुमार, मैडम रीना, तेजपाल सिंह,प्रदीप सिंह, मेला राम, अशोक लद्दर और क्षेत्र के लोग मौजूद थे।

श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहादत शताब्दी संबंधी कालेके में समारोह

बाबा बकाला साहिब, 15 नवंबर (साहिल बेरी)

श्री गुरु तेग बहादुर जी की 350वीं शहीदी शताब्दी तथा भाई मती दास, भाई सती दास, भाई दियाला जी और बाबा जैता जी की महान कुर्बानियों को समर्पित होकर, गुरु साहिब जी के चरण-छोह प्राप्त गांव कालेके में पंजाब सरकार की ओर से कीर्तन समारोह आयोजित किया गया। डिप्टी कमिश्नर श्री दलविंदरजीत सिंह की अगुवाई में करवाए गए इस कार्यक्रम में पाठ के भोग उपरांत भाई मनमीत सिंह के रागी जत्थे ने गुरबाणी कीर्तन किया।

इस अवसर पर संगत के दर्शन करने विशेष रूप से पहुंचे हल्का विधायक श्री दलबीर सिंह टोंग ने गुरु साहिब को श्रद्धा के फूल भेंट करते हुए कहा कि गुरु साहिब की कृपा के कारण ही इस धरती को 'बाबा बकाला साहिब' का नाम मिला है। उन्होंने कहा कि गुरु साहिब जी की कुर्बानी को सम्पूर्ण हिंद कभी भुला नहीं सकता।

श्री टोंग ने शहादत शताब्दी संबंधी मुख्य मंत्री श्री भगवंत सिंह मान द्वारा करवाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों का उल्लेख करते हुए संगत को अपील की कि वे आनंदपुर साहिब में आयोजित समारोहों में शामिल होकर गुरु साहिब के प्रति सच्ची श्रद्धा प्रकट करें।

इसके अलावा इस मौके पर एसडीएम श्री अमनप्रीत सिंह, डिप्टी डीएम मंडी बोर्ड श्री बिक्रमजीत सिंह, जगदीप सिंह, सरबजीत सिंह, बीडीपीओ मलकीत सिंह तरसिका, सरपंच हीरा सिंह, सरपंच करमजीत सिंह, सरपंच गुरचरण सिंह राणा, बलदेव सिंह बड्डोवाल, श्री संजीव भंडारी, फुलविंदर सिंह, राजा निज्जर, बलविंदर सिंह, जसवंत सिंह, बलजीत सिंह, काबिल सिंह, कुलदीप कौर तथा गांव के अन्य गणमान्य व्यक्ति और संगत उपस्थित रहे।

इटली-आधारित मलकीत सिंह की हत्या में शामिल दो केएलएफ गुर्गे अमृतसर से गिरफ्तार; पांच हथियार बरामद

चंडीगढ़/अमृतसर, 15 नवंबर (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के दिशा-निर्देशों के तहत पंजाब को सुरक्षित राज्य बनाने के लिए चल रही विशेष मुहिम के दौरान, विशेष खुफिया जानकारी के आधार पर कार्रवाई करते हुए काउंटर इंटेलिजेंस (सीआई) अमृतसर की टीम ने मध्य प्रदेश (एमपी) आधारित अवैध हथियार तस्करी मॉड्यूल का भंडाफोड़ करते हुए इसके एक संचालक को 9 पिस्तौलों सहित गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने समय रहते कार्रवाई करके एक मड्डर (सुगठित हत्या) की साजिश को भी नाकाम कर दिया। यह जानकारी आज डीजीपी पंजाब गौरव यादव ने दी।

गिरफ्तार आरोपी की पहचान अरुण सिंह, निवासी गाँव नौशहरा पन्नूआँ, जिला तरनतारन के रूप में हुई है। बरामद हथियारों में सात .32 बोर पिस्तौल, दो .30 बोर पिस्तौल, मैगजीन और पाँच जिंदा कारतूस शामिल हैं।

डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि प्रारंभिक जांच में खुलासा हुआ है कि यह हथियार क्षेत्र में अंतर-गिरोह दुश्मनी के चलते सुगठित हत्या की वारदात को अंजाम देने के लिए खरीदे गए थे। यह भी सामने आया है कि आरोपी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से मध्य प्रदेश के अवैध हथियार सप्लायरों के संपर्क में था और पंजाब में अपराधियों को हथियार उपलब्ध करवाने में मदद कर रहा था। उन्होंने बताया कि सीआई अमृतसर को मध्य प्रदेश से एक बड़े अवैध हथियारों की खेप पंजाब पहुँचने की विशेष जानकारी मिली थी। इसी आधार पर तुरंत कार्रवाई करते हुए, पुलिस टीम ने गाँव घनूपुर काले के पास बाइपास रोड स्थित एचपी पेट्रोल पंप के नजदीक आरोपी को दबोच लिया और उसके कब्जे से हथियारों का पूरा जखीरा बरामद किया।

डीजीपी ने कहा कि पूरी सप्लाई चेन का पर्दाफ़ाश करने और इस नेटवर्क में शामिल अन्य आरोपियों की पहचान के लिए जांच तेज़ कर दी गई है। आने वाले दिनों में और भी गिरफ्तारियाँ एवं बरामदगियाँ होने की संभावना है।

इस संबंध में एफआईआर नंबर 68, दिनांक 15-11-2025, थाना स्टेट स्पेशल ऑपरेशन सेल, अमृतसर में आर्म्स एक्ट की धारा 25 एवं 25(1)(A), तथा भारतीय न्याय संहिता (BNS) की धारा 61(2) के तहत दर्ज की गई है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023